अंक-57
दिसम्बर' 2009

कहानी पर
केन्द्रित

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

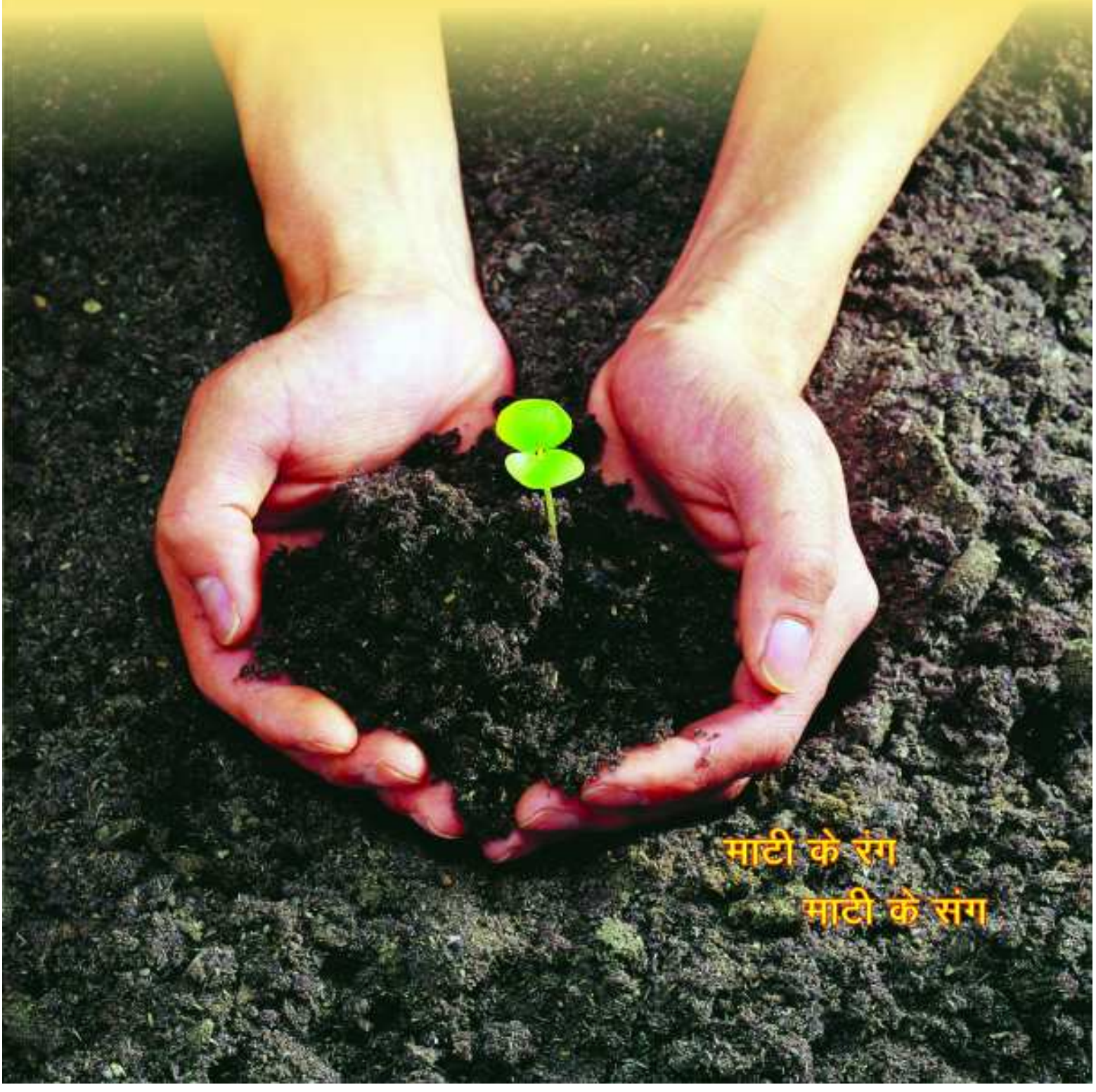

माटी के रंग
माटी के संग

आनन्द सन्धिदूत के
एगो गीत

बरिसेला सुधिया क मेघ छँछोपाती
(हम) भींजि भींजि लिखलीं पिरितिया क पाती !

केकरा के जोहे बारि-बारि नभ-दियरा
गरजि गरजि गोहराइ के पपिहरा
दुलहा कवन भूले बीच बरियाती ! .....

तड़कल बिवश तड़कि उठे जियरा
कवन सम्हारि धरें, केहुए न पँजरा
झन्न देनी कांच गिरे, पथरे क छाती ! .....

ओरी-ओरी मधु चुवे, माति उठे जिनगी
आँख क खुमारी बरे जोतिया के टुनगी
भर दिया दारू में, डुबल एगो बाती ! .....

मनवां क भाव जइसे, मेंगुची के बचना
कवन पड़ाव कुछ मुंह से न बोलना
फुदकत पाँवे जइसे ठकुर सोहाती ! .....

मन क कठिन-तीत ओठवा प मिठकी
माँगेले जबाब तोर चिठिया लिखलकी
आँख जइसे, फर झरे नीम क जजाती ! .....

तोर किरे सोना हम कुछ ना छिपवलीं
जेतना रहल दुख ओतने बतवलीं
शहरी-शरीर, मन निपट देहाती ! .....

●●●

प्रबन्ध संपादक
प्रगति द्विवेदी
संपादक
डा० अशोक द्विवेदी
संपादन सहयोगी
विष्णुदेव, सान्त्वना, हीरालाल 'हीरा',
डिजाइन आ ग्राफिक्स
वर्तिका
सज्जा
आस्था
कंपोजिंग
कम्प्यूटर्स प्वाइण्ट, भृगु आश्रम-बलिया

विषेश प्रतिनिधि
गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (गोरखपुर), सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, आरा), विनय बिहारी सिंह (कोलकाता), गंगा प्रसाद 'अरूण' (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० प्रकाश उदय, विनोद द्विवेदी (वाराणसी),विजय दूबे, आनन्द संधिदूत (मिर्जापुर, सोनभद्र) आकांक्षा (मुम्बई), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), कन्हैया पाण्डेय, अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' (बलिया)।

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा० ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
संपादन-कार्यालय :-
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-२७७००१
फोन- ०५४९८-२२१५१०, मो०- ०९४१५८१९४५३
e-mail :- ashok.dvivedi@rediffmail.com

एह अंक पर सहयोग- २५/-
सालाना सहयोग राशि १३०/-

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे)

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)
www.bhojpuripaati.com

अंक 57 दिसम्बर 2009

एह अंक में.....

हमार पन्ना
- माटी के बदलत अंदाज, मौसम के मिजाज /२-३

सरोकार
- 'लोक अवधारणा' आ लोकहित/सान्त्वना/४

मुद्दा/पर्यावरण
- धीरे-धीरे मरत बाड़ी पूर्वांचल के..../धनन्जयमणि त्रिपाठी/५-६

कहानी
- कतिकहा विद्वान/रामदेव शुक्ल/१४-१६
- नेकी कर../राजगुप्त/१६
- घाव / हीरा लाल 'हीरा'/१७-१९
- माथ मुड़ाते ओला..../चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह/२०-२६
- हमरो पता जान लऽ/आशा रानी लाल/२८-३०

कविता/गीत/गज़ल
- आनंद संधिदूत/कवर-२
- मोती बी०ए०/६
- अशोक द्विवेदी/११-१२
- अजय कुमार पाण्डेय/१२
- भगवती प्रसाद द्विवेदी/१३
- त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'/१३
- चन्द्रदेव सिंह/२६
- भगवत प्रसाद 'देहाती' /२७

उपन्यास
- 'दालभात तरकारी' गतांक से आगे..
  डा० रमाशंकर श्रीवास्तव/३१-३९

लघुकथा
- मजबूरी/अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'/१९

कसौटी
- 'कथा-वृक्ष': जिनिगी के बिन्दास.... /विष्णुदेव तिवारी/४१-४१
- 'रधिया' : एगो जरूरी नाटक /राकेश दिवाकर / ४२-४३
- 'रंग बदलत गिरगिट': अन्हार में अंजोर.../अशोक द्विवेदी/४३-४५

राउर पन्ना
- पाठक लोगन के पाती/४६

माटी के बदलत अंदाज, मौसम के मिजाज, आ भूख से लड़ाई

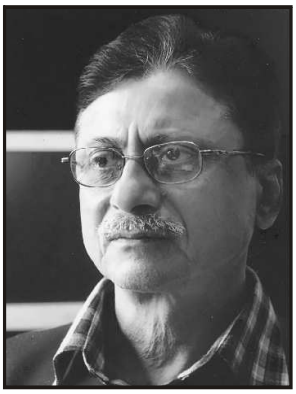

रासायनिक खाद के असरहत (आश्रित) खेती आ खेत से दोहरा तिहरा फसल उपराजल आखिरकार आपना रंग देखा दिहलस। माटी के वैज्ञानिक (मृदा-विशेषज्ञ) कहत बाड़न स कि खेत का ऊपरी सतह के उपराजे वाली क्षमता (उर्वरा-शक्ति) नष्ट हो रहल बा। समय का साथ-साथ माटी के पोषक तत्व या त बिला (खत्म)रहल बा या भूमिगत जल में मिलत जा रहल बा। उपजावें खातिर जरूरी नाइट्रोजन, फास्फोरस आ पोटास खेतन में बहुत कम बँचल बा। अतने ना; जिंक, आइरन, सल्फर, मैगनीज, कापर, वोरान आदि छोट-छोट पोषक तत्व माटी से रिस-रिस के भूमिगत जल में मिलत जा रहल बा। नतीजा में पानियो में प्रदूसन। भोजन त भोजन पानियो प' संकट। ऊपर से मौसम क बदलत मिजाज। प्रकृति आदमी का साथ अतना ढेर असहयोग पहिले ना करत रहे।

अब, ,जबकि समय से आ जरूरत भर बरखा नइखे होत, सिंचाई के पुरान-पारंपरिक सोत सुखाइल जात बाड़न स; तब सिंचाई क नया साधन बनवला बेगर, अनाज आ साग-सब्जी उपराजल कतना कठिन हो जाई? अनाज आ साग-सब्जी क मौजूदा महँगाई आ चढ़त भाव से, सहजे अंदाजा लगावल जा सकत बा कि आवे वाला समय में, आदमी क भूख से लड़ाई कतना कठिन होखे वाला बा।

संसार में ''ग्लोबल वार्मिंग'', ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन आ पर्यावरण-संतुलन बिगड़ला के एगो भयानक समस्या अलगे बा। दुनियां भर के वैज्ञानिक फिकिरमन्द बाड़न कि परमाणु परीक्षण प्रयोग, ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन आ लगातार कार्बन उत्सर्जन से धरती के तापमान तेजी से बढ़ रहल बा। कहल जाता कि आवे वाला समय में ई तापमान अतना बढ़ जाई कि गर्मी आ सूखा का चलते भुखमरी आ आपसी मारकाट, गृहयुद्ध आ विश्वयुद्ध तक के अंदेशा बा। कहल इहो जाता कि बर्फ तेजी से पघिले लागी, समुद्र क पानी में हलचल बढ़ी आ कई गो देशन क नाँवे निशान मिट जाई। आवे वाला समय में अनाज आ पानी के संकट, त्राहि-त्राहि मचाई।

पहाड़ हमहन के आश्रय दाता, पहरुआ आ रखवार रहे। हमहन ओके खोनि-कोड़ि, उड़ा के ढाहते बानी जा। जंगल उजड़ते बा। बाग-बगइचा कटाते जाता, नाला, पोखरा, इनार-कुइंयां भठाते जाता। हमनी कावार जवन थोर बहुत ताल-तलइया, नदी-पोखर बँचलो बा त ओमे जलकुम्भी, सेवार, गंदगी खर कतवार आ कचरा आपन पइसार बनवले जाता। लकदक शहरन में इजाफा हो रहल बा, कस्बा-शहर में मकान बनावे क फैशन आ जरूरत दूनों बढ़ल जाता। आ शहरन क ई हाल बा कि जन-दबाव आ भारी संख्या में मोटर गाड़ियन आ जनरेटर आदि के कारन धुआँ आ गैस बढ़ले जाता। सरकार उर्जा के नया सोता खोजत बिया नदी के बहाव रोकल जा रहल बा। बान्ह आ पुल का नाँव पर निर्माण आ विध्वंस क लीला देखत बनत बा। हमहन अपना लापरवाही आ बल का जोम में अलगे अइंठत बानी जा। प्लास्टिक-कचरा क ढूह ऊँच से ऊँच होखल जात बा। माहौल आ पर्यावरण संतुलन क ठीका खाली सरकारे के थोरे बा।प्रकृति काहे ना रूठी? हमहन क अनेत आ अधिकई के धरती आखिर कबले सही? प्रकृति आपना बिध्वंस के कबले बर्दास करी? ओके खीसि बरबे करी।

वैश्वीकरण, तरक्की आ औद्योगीकरण का अन्हरदउड़ मे जल्दी जल्दी आगा बढ़ला का चक्कर में, हमनी किहां खेती वाला जमीन के ढेर हिस्सा आधुनिकीरण का नया फइलाव में समा गइल। एही कारन, भा एही फेरा में, कृषि- काम के उत्साहित

संरक्षित आ नियंत्रित करे वाला जरूरी काम पछुवाइ गइल।अब भारत जइसन विसाल, कृषि - प्रधान देश के चाउर, दाल, आ खाए वाला तेल दोसरा देश से कीने आ मँगावे के परो, त सोचीं, ई कतना शरम आ दुख के बात बा। हमनी का खेती प्रधान देश मे, खेती जब घाटा के सउदा आ लाज के काम बन जाई त का कइल जा सकेला? प्राकृतिक आफत, बाढ़ आ सूखा क मार अलगा बा। हमनी के भोजपुरिया क्षेत्र त अबहीं पूरा लूर-सहूर से विकसिते नइखे भइल। तब्बो जवन कुछ एने बिगड़त -बनत बा, ओसे आवे वाला समय के साफ-संतोषजनक तसवीर नइखे बनत। बिगड़ल बनवला के, आपन गलती सुधारला के आ ईमानदारी से कोसिस कइला के समय आजे बा, काल्हु का जाने का होई ? हमनी का आपन संकट - अपनहीं दूर करे के पड़ी। फेरू हमनी के पूरा सरधा- विश्वास आ संकल्प के साथ प्रकृति के सजावे के जिम्मेदारी उठावे के पड़ी। खेती वाला खेत के, फेरू से खेती लायक बनावे खतिर, रसायनिक खाद पर आपन निर्भरता खतम करहीं के परी। पुरनका कंपोस्ट खाद, गोबर क खाद, घास पात वाला सड़ल जर्मी खाद, हरी खाद, का बूता पर खेती कइला के टाइम आ गइल बा, कीटनाशक जहरीला दवाइयन क जगह नीम आदि पुरनकी पारंपरिक उपायन क सहारा लेके, शुद्ध अन्न आ साग सब्जी उपराजि के, हमहन का अपना शरीर आ स्वास्थ्य के बचा सकेलीं जा आ आपन आस-पास के महौलो के ठीक ठाक रखि सकेनी जा। सिंचाई के पुरान, पारंपरिक सोत के खोज, सफाई आ संरक्षण का साथ -साथ, खेत में पानी रोकल, गहिर तालाब आ कुंड बनावल, जमीन का अन्दर संरक्षित टैंक के निर्माण कइल आदि तरीका से जल-संरक्षण कइ के सिंचाई के उपाय कइल जा सकेला। एही तरह से, अइसनका बीज के खोज आ परिसोधन कइल जाव, जवन रोग आ खर पात के मुकाबिला करके, कमो सिचाई भा कमो पानी में अधिका उपराजन दे सके।

माटी के बदलत अंदाज आ मौसम के रूठल मिजाज के अनुकूल बनावे आ भूख से लड़ाई क तैयारी खातिर, सरकारो के हमहन का संगे आ हमहन का पाछा खाड़ा होखहीं के पड़ी। बलुक पर्यावरण -संतुलन मजबूत आपदा - प्रबधन, जल -संरक्षण, अनाज आ फल संरक्षण का साथ साथ खेती का बुनियादी ढांचा के फेर से मजबूत करे क गंभीर उतजोग तबे हो सकेला, जब आज तक एह दिसाईं कइल आ करावल गइल काम के सही पड़ताल होई कि आज ले कतना का भइल बा, आ कतना बाकी बा? कतना सही भइल बा, कतना गलत, आ आगा से अब का, का आ कतना समय में करे के बा। का नइखे करे के, आ का नया करे के बा।

अशोक द्विवेदी

'लोक' अवधारणा आ लोकहित

सान्त्वना द्विवेदी

शुरू शुरू में 'लोक' के मतलब अक्सरहा ई लगावल गइल रहे कि देहाती, अशिक्षित, असंस्कृत आ आधुनिक सभ्यता का छाँहीं से दूर, क्षेत्र विशेष में रहे वाला बेपढ़ल लिखल लोगन के समूह 'लोक' कहाला। कुछ लोग 'लोक' के 'फोक' क अनुवाद आ 'पर्याय' बतावल, बाकि 'लोक' खाली गँवई, आदिवासी भा पहाड़ी लोगन क समूह ना हऽ। बलुक क्षेत्र-विशेष में एक संगे रहे आ जिए वाला मर्द मेहरारू का साथे, सृष्टि के चर-अचर सब ओमे शामिल बा। पशु-पक्षी, गाछ-बिरिछ, नदी-पहाड़, झरना, ताल-तलैया, बाग बगइचा, खेत-खरिहान सब मनुष्य का संगे मिलि के 'लोक' के परिवेश बनावेला। सबका आपुसी साझेदारी, लगाव आ आपुसी आत्मीयता से 'लोक-दृष्टि' आ 'लोक-संवेदना' बनेले।

लोक जीवन क मतलब, सबका साथे, सबके लेके चलल हऽ। ई बात दीगर बा कि 'लोक' क ज्ञान, व्यावहारिक अनुभवन का आधार प' बनल बा, ओकर आधार पोथी आ किताब नइखे। परंपरा से जानल, पुरनियन आ पुरखन से सीखल आ अपना निजी अनुभवन से बटोरल ज्ञान 'लोक' - ज्ञान हऽ। लोकरंग आ लोक व्यवहार के भाषा एही कारन से, जियतार, चटक आ असरदार होले।

हम पढ़ले-सुनले बानी कि 'लोक' लुच धातु से बनल, 'देखे', 'देखे वाला', 'देखावे वाला' भा 'रोशनी में ले आवे वाला' के लोक कहल जाला। वेद-उपनिषद्, महाभारत आ अउर कूल्हि पुरान पोथियन में 'लोक' के अरथ खोजल गइल बा। अंग्रेजी के 'फोक' से 'लोक' के संबंध जोरल गइल बा, जवना क मतलब, 'भूलल-बिसरल', बीतल, संरक्षित करे भा जोगावे जोग चीजन के 'लोक' क चीज बतावल गइल। अशिक्षित, गँवार, आधुनिकता से अपरिचित लोगन के क्रिया व्यवहार, बोलल-बतियावल, आचार-विचार, गीत गवनई, नाटक, कथा-कहानी जवन जुबानी आ वाचिक रहे ओके लोक-साहित्य का कटेगरी में राखल गइल।

साँच कहीं त 'लोक' के 'फोक' के पर्याय भा वाचक बनवला में बड़ा संकीर्णता रहे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आ डॉ० विद्यानिवास मिश्र जी जइसन लोक-परम्परा के ज्ञाता विद्वान लोग 'लोक' के संकुचित अरथ लगवला पर आपत्ति जतावत, 'लोक' के व्यापक अरथ देबे के सार्थक कोसिस कइल। लोक क मतलब भारतीय परंपरा में, जवन लउकत बा- प्रत्यक्ष बा- आदमी आ ओकर समूचा परिवेश, जवन लउकत बा- क्रियाशील आ प्रत्यक्ष अनुभव क चीज बा, ऊ कूल्हि मिल जुल के 'लोक' बनावेला। 'लोक' मनुष्य का कल्याण आ मंगल खातिर चिंतित आ क्रियाशील रहेला। अमंगलकारी आ विनाशकारी क्रिया व्यापार के विरोध कइल, लोक के स्वर प्रदान करेला।

'लोक' से लोकहित, लोक धरम, लोक मत, लोकसत्ता आ लोक सम्मत जइसन शब्दन के रचना एहीं से भइल बा। 'लोक' के सत्ता एही से सबसे ऊपर बा कि ऊ हमनी किहाँ वेद-शास्त्र नियर प्रमाण मानल जाला। कवनो बात भलहीं - शास्त्र के मुताबिक ठीक होखे बाकि लोक के विरूद्ध होखे, त ऊ ना मानल जाला।

'लोक' में रहि के, लोकहित खातिर कइल गइल काम नीक मनाला आ विशेष दर्जा में राखल जाला आ अइसन करेवाला लोग के 'लोक' में आदर आ सरधा से देखल जाला। 'लोक' के अनदेखा भा उपेक्षा कइल, हमेशा से अनुचित आ खराब मानल गइल बा। इतिहास गवाह बा कि आजतक जे भी अपना बल, पराक्रम के जोम में भा घमण्ड में लोक के रउंदे भा नीचा देखावे के कोसिस कइल उ मटियामेट हो गइल।

'लोक' मर्यादा के पालन करत, लोक मंगल के कामना में निरन्तर लगल रहे वाला निःस्वार्थी लोग शुरू से आदर आ श्रद्धा के पात्र रहल बा। जमाना बदलल। केतने सत्ता बदलली सऽ, बाकि ओके 'लोक' के ध्यान मे ंराख के चले के परल। आजु जबकि हमनी के देश में लोक के तंत्र कायम बा, लोक के उपेक्षा आ निरादर कइल असम्भव बा। अगर अइसन होत बा भा ओके प्रश्रय मिलत बा भा 'लोकहित आ लोक मंगल' के नजर अंदाज कइल जाता त ओह तंत्र के प्रजातंत्र कइसे मानल जा सकेला?

●●●

पर्यावरण / जरत मुद्दा

धीरे धीरे मरत बाड़ी पूर्वांचल के गंगा, 'आमी'

❑ धनन्जयमणि त्रिपाठी

आपन देश भारत ताल तलैया नदी पोखरन अउर बावड़ियन के देश हवे। इहवां गंगा, यमुना, घघरा, गंडक, कोसी, नर्मदा, ताप्ती अउर घाघरा जइसन कई अउर नदी बहेली। एहमें पूर्वांचल में 'आमी' एगो अइसन नदी बिया जवन अपने प्रदूषण के खातिर आजकल चर्चा के विषय बनल बा। आमी दूसरे सब नदियन के तरह से ए पवित्र नदी हवे। ए नदी के चर्चा बेदो-पुराण में मिलेला। आमी खाली एगो नदि भर ना हई, ई हमरे पूर्वांचल के लोगन खातिर आस्था भी हई। आमी नदी के पानी के पुण्य सलिला पतित पावनी पापनाशिनी जइसन बहुते नाम से इहवां के लोग जानेला। 'आमी' नदी के बहाव सोहगौरा से शुरू होके कई जिला से होत गुजरेला। पहिले कई जिलन के लोग 'आमी' से खेत सींचे आ अपना गोरू-बछरू के नहवावे धोवावे खातिर आ पानी पियावे में उपयोग करत रहलन। आमी नदी के पानी से सिंचाई कइके लाखो बीगहा जमीन पर लोग गन्ना गेहूं धान अउरी कई तरह के तेलहन, मसाला, फल फूल अउरी तरकारी पैदा करत रहलन हवे। आमी इहवां के लोगन खातिर खुसहाली के कारण रहली। इहे कारण हवे कि आमी के धनिकई के पंजाब अउर हरियाना के बरोबर मानल जात रहल ह। एकर असली कारन आमीए रहली ह। लेकिन अब दुःख एह बाति के बा कि लोग के नासमझी के कारण आमी नदी में प्रदूषण बढ़त जात बा; अउरी इनके जिनगिए ओराए लागल बा। जिनकर पानी अमरित मानल जात रहल ह, ऊ आमी सोहगौरा से निकलले के बाद मगहर ले आवत-आवत ए कदर से खराब हो जात बाड़ी आ इनके पानी में एतना गंदगी भरि जाला कि ए पानी के उपयोग अगले बगले के लोग खेती के कामों में नाहीं करेले, न अपने जानवरन अउर गोरु बछरू के नहाये धोवे के खातिर तइयार होले। पीयल आ पूजा कइल त दूर के बाति बा। गोरखपुर इनवरसिटी के पर्ल लैब में डा० अनिल कुमार द्विवेदी आमी नदी के प्रदूषण पर शोध निर्देशन करत बाने। इनके मुताबिक आमी नदी के गंदगी इनके जन्मे स्थान से शुरू हो जात बा। इनके किनारे गीडा में कई गो बड़हन-बड़हन कारखाना चालू बा। जवन आपन सज्जी कूड़ा-कबाड़ अउर गंदगी सीधे आमी में डारत बाड़न। एकरे अलावा शहर अउर कस्बा तथा गॉवों जवार के लोग गंदगी के, बिना कुछु सोचले समझले, सीधे आमी में डारत बाने। आमी नदी के अगल-बगल में जवन कस्बा अउर शहर बसल बा ओकर धर्मशाला, घर, होटल तथा बजार के कचरा भी लोग सीधे आमी नदी में फेंकता। लोग बाग जे आमी नदी के देखल चलल आवता ऊ त इहवां कहता कि अब आमी के पानी मरि गइल बा अऊरी बाड़ी के पानी मिल जाता, तब आमी नदी के पानी तनि एक साफ होत बा। ओह समय में आमी नदी के पानी में नहाइल धोवल जइसन काम नाहि करि सकेला केहूँ। कारन एकर ई बा कि जब कब्बों एह आमी नदी के पानी में जब केंहू नहाए के खातिर उतरेला त ओके आस-पास के गंदा नाला के सरल पानी से दू-चार होखे के परेला। गीड़ा में कई गो फैक्टरी दवाई के बाड़ी सन एकरे अलावा दवाई तेल, बिस्कुट, चप्पल से बहुते खतरनाक खतरनाक जहर निकलत बा। एह सबन के कचरा सीधे आमी में डारल जाता बा। पर्ल लैब के शोध में डॉ० अनिल कुमार द्विवेदी अपने खोज में ई पवले बाने कि आमी के पानी में एतना जहर बा कि ओहमें अगर केहूँ नहाइल शुरू क देव त ऐके दिन में ओके कई तरह के चर्म रोग, हैजा, आंत्रशोथ वाइरस हिपेटाइटिस अउर पेचिश जइसन ढेरो तरह के छुआछुत के बिमारी फइलले के खतरा बनल रही। एही से सलाह देत बाने कि आमी नदी के पानी में नहइले अउर पियले के जोखिम केहु न उठावे। इ त भइल आमी नदी के हाल चाल। थोर बहुत इहे हालि अपने देश में बहे वाली सब नदी-नालन के बा। ई सब नदी नाला ताल-तलैया पोखरा-पोखरी कुल मरल जात बाड़ी सन। सरकार सुतल बा। कुंभकरन के जइसे ओकर नींद जब कवों टूटेला साल भर आ छः महिना पर त ऊ एक्शन प्लान बनावेले। जइसे अपने देश में गंगा नदी के प्रदूषण खत्म करेके खातिर बनल रहे गंगा एक्शन प्लान। ओहि के तर्ज पर बनल यमुना एक्शन प्लान। लेकिन ओकर रेजल्ट का भइल ? उहे ढाक के तीन पतई। आ ले दे के सब गुड़ गोबर हो गइल। लोग ई जानते नाही बाड़न कि इ एक्शन प्लान का हवे ? एकर का मतलब भइल ? सरकार के अगुवो लोग ई नाही समझ पावत बाने कि का करीं, आऊर कइसे करीं ? आ इहो हो सकेला कि जानि बूझि के समझले के कोशिश न करत होखे लोग। एकरे

खातिर आम मनई लोग के जागरुक कइल अऊर जगावल बहुत जरुरी बा। आमी अऊरी गंगे, यमुना नाही, सब नदी नाला ताल पोखरन के सफाई के खातिर आम मनई लोग के जगावल अउर उनके भागीदार बानावल जरुरी बा। हम सब लोगन के एह बाति के ध्यान रखे के चाहीं कि हमनी के जीवन में अऊर एह पर्यावरण में पानी के बहुते महत्त्व बा अउर एह पानी के गंदा नाहीं होखे देवे के बा। ई खुशी के बात बा कि एहर कुछ दिन से गोरखपुर के जनता, मीडिया अउरी अखबारी नेता लोग, आमी में फइलल गंदगी के खिलाफ सीना तानत बा। कई गो समाजसेवी लोग आपन जोर आजमाइस करत बाड़े। लोकसभा के चुनाव में आमी एगो मुद्दा बनत बनत रह गइल। लेकिन लोग के इ जरुर कहल चाहत रहल कि वोट उहे पाई जे आमी के जिआई। इ बढ़िया बाति हो सकेला कि सब केहू मिल-जुल के पर्यावरण जागृति के एगो रचनात्मक आंदोलन बना दिहले बा। देखल जाई कि सरकार कब जागेले ? प्रदूषण विभागो काने में तेल डारि के सुत्तल बा। उद्योग लगावे से पहिले प्रदूषण रोके खातिर जवन नीति नियम बनल बा ओकर प्रोत्साहन आ देखभाल नइखे। पइसा लेके अउरी कुछ नेता लोग के दबाओ में अधिकारी लोग आपन मुँहे में जाबि लगवले बा। जेसे कि मुँहवे न खुले। नाही त प्रदूषण फइलवले के जुलुम में फैक्ट्री त बन्दे होइत, ओकर मालिको लोग के सजा होखे के चाहीं। पर्ल लैब के वैज्ञानिक डॉ० अनिल कुमार द्विवेदी पिछले तीन साल के वैज्ञानिक शोध में ई खोज कइले बाने कि आमी के पानी में आक्सीजन के घुलल मात्रा रोज कम होत जा रहल बा। अउर एहमें कोलीफार्म वैक्टिरिया के संख्या खतरनाक ढंग से घुल रहल बा। ऐसे बेहतर इहे बा कि आवे वाला समय में खतरा बढ़े आऊर सबके जिनगी खतरा में पड़े, ओसे सबे केहू सचेत हो जाय। कूड़ा कचरा अऊरी गंगा पानी नदी में न जाए दिहल जाव। पूजा कइले के बाद बाकी बचल सामान पानी में न फेंकल जाव। नाहीं त ऊ दिन दूर नाहीं बा, जब हम सब लोगन के बूंद-बूंद पानी खातिर तड़प-तड़प के जान दे देवे के परी।

●●●

इयाद में : मोती बी.ए.

एगो दीया जरेला.....जवन कहियो ना बुताय जवन परे ना लखाय जवन हाटे ना विकाय
जवन कोना-अँतरा सगरो अँजोर करेला !

एगो गीत

जइसन अँजोरिया तोहार हे भइया
ओइसने अँजोरिया हमार ह।

झारल-बहारल टीकुर आ चीकन
चन्नन छिरिकला से लागत बा नीमन
पूजा का चउका नियर बलि बेदी
आहुति से महँके दुआरे ले आंगन
जवन डहरिया तोहार हे भइया
ऊहे डहरिया हमार ह !

बड़हन तपेस्या से ई दिन भेंटाइल
नगर नगर गाँव-गाँव नेवता दियाइल
सोहर आ झूमर आ कजरी गवाइल
आजु फेन पोथी पुरनका खोलाइल
जवने अछरिया तोहार हो भइया,
ऊहे अछरिया हमार ह !

ईहे अछरिया नु बरम्हा कहाला
सबके करमवा विधान बनि जाला
एक-एक जिउवा के लागे ठेकाना
ई बात कहला से कबो न ओराला
जवन मंजिलिया तोहार हो भइया
ऊहे मंजिलिया हमार ह !

मिल-जुल अन्हरिया के होली जरवलीं
क्रांति के लुकारी सरेहे घुमवलीं
खून आ पसेना क लोना बनवलीं
ओकरा प अँसुअन क दीया सजवलीं
जवन ललसवा तोहार हो भइया
ऊहे ललसवा हमार ह !

●●●

धरोहर

भोजपुरी साहित्य - परम्परा

❑ हजारी प्रसाद द्विवेदी

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दुसरा अधिवेशन में दिहल गइल अध्यक्षीय भाषण, बरिस १९७६]

बन्धुगण, अपने सभ हमरा के बहुत बड़ाई दिहलीं जे एह सम्मेलन के सभापति बनवलीं। एह कृपा खातिर हम बहुत आभारी बानी। हमार मातृभाषा भोजपुरी जरूर बा बाकिर हम भोजपुरी के कवनो खास सेवा नइखीं कइले। हम त इहे समझलीं हां जे अपने सभ में उदारता बहुत बा आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनों के समान भाव से प्रेम करीले। अइसन ना होइत त हमरा नियर आदिमी के, जे सही माने में 'ना देव के ना लोक के' बा, ओकरा के काहे बोलइतीं। माननीय पाण्डेजी के हुकुम भइल जे आवे के होई, चुपचाप राजी हो गइलीं। मगर जब उहाँ का कहलीं जे सभापति के भाषण लिखि के ले आवे के परी त थोरिका चिन्ता भइल। बड़ बना दिहला से केहु बड़ थोरे हो जाला ? कुछ भीतरी होखे के चाहीं। कबीरदास जी साइत भोजपुरी के आदिकवि हवीं। उहाँ का कहि गइल बानी जे, 'जो रहे करवा त निकंसे टोंटी'। बधना में पानी रही तबे त टोंटी से निकसी ? इहाँ एको ठोप पानी नइखे। सोचत रहलीं जे भोजपुरी त आपन मातृभाषा ह, एमें लिखल बड़ा सोझ होई। अब देखतानीं जे सोझे डाँड़ि खींचल सभसे टेढ़ काम बा, टेढ़ डाँड़ि खींचे में कवन मेहनत बा। रोजे जवना भाषा में बोलल जाता ओही में लिखल कठिन काम लागत बा। कवनो भाषा आ बोली में लिखे खातिर कुछ साधना चाहीं, कुछ पहिले से आदत डाले के चाहीं, कुछ मेहनत-मसक्कत क लेबे के चाहीं। ऊ सभ अपना में ना देख के मन ऊभ-चुभ हो गइल बा। अब त अपनहीं सभ के आसरा बा, सभापति बनवलीं त ओकर भारो अपनहीं सभ के सम्हारे के परी।

भोजपुरी बहुते शक्तिशाली बोली ह। लोक साहित्य के त अइसन भण्डार अउर जगह साइत नइखे। मुहाबरा, लोकोक्ति, व्यंग्य-विनोद के त एकरा पासे खजाना बा। कुछ लोकगीतन के संगेरे के थोर-बहुत जतन भइल बा, एकाध कोसिस महाबरा वगैरह के बटोरे के भी कइल गइल बा, बाकिर ई सभ काम समहुते बरोबरि बा। जतना काम भइल बा, ओतने से ई पता चले में कवनो कठिनाई नइखे रहि गइल जे शक्तिशाली भाषा होखे खातिर जइसन गुन गरवर चाहीं, एकरा में पूरा बा। एकर बोले वालन के तदादो बहुत अधिक बा। चार-पाँच करोड़ त होइबे करी। अपना देस में, अउर बाहरो बहुत कम भाषा होइहें जेकर बोले बालन के तदाद एतना बड़ होई। बोले बालन के तदाद एतना बड़ बा जे बहुत बड़का कहाए वाली बहुत भाषा भा बोलिन से भोजपुरी कहि सकेले जे 'जवन तोहरा घरे भोज तवन हमरा घरे रोज'। भोजपुरी लोगनि में अपना बोली के अभिमान बहुत बा। देस में रहो तऽ, बिदेस में रहो तऽ, भोजपुरी घर में अपने भाषा बोली। ग्रियर्सन साहेब त लिखले बानी जे अइसन भाषा प्रेम उन्हका अउर कहीं ना मिलल। सभ बा, लेकिन भोजपुरी हमेसा देस के अखण्डता के बात सोचेला। देस के अखण्डता के खतरा होई त ऊ अपना प्रिय से प्रिय चीजो के बाधा ना देबे दी। हमेसा भोजपुरी के नजर देस का एकता पर रहेला। एह खातिर ऊ सभ तियागि सकेला। भोजपुरी के ई गुन जग-जाहिर बा। एमें कतहीं खोट ना मिली। ई बात नइखे कि ओकरा में अपना घर में बोले जाए बाली सभ से मीठी बोली के अभिमान नइखे, ईहो नइखे कि ऊ अपना बोली में कविता वा गाना लिखल छोड़ देले बा, मगर ऊ कबहीं अलग हो के रहे के बात ना कइलस। हमनी के जवन सार्वदेसिक स्वीकृत भाषा हिन्दी बा, ओकरा के गढ़े-सँवारे में त भोजपुरी लोगनि के सबसे बेसी जोगदान बा। सदल मिसिर आ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ले के आजु तरीक बहुत बड़-बड़ साहित्य-निर्माता भोजपुरी लोग रहलन हा। सदल मिसिरजी का बारे में त हमरा नइखे मालूम जे उहाँ का भोजपुरी में कुछ लिखले बानी कि ना, बाकी भारतेन्दु जी त निश्चिते रूप से बनारसी बोली में बहुत बढ़िया कविता लिखि गइल बानी। मगर अपना घर का बोली के प्रेम अछइत उहाँ सभे सार्वदेसिक भाषा के गढ़े-सँवारे में जीव आ जान लगा दिहलीं। अपना बोली के प्रेम भी बनल रहल--सार्वदेसिक भाषा के भी ओतने, बलुक कुछ अधिके, प्रेम उहाँ सभ के रहल। बाकी कबहीं उहाँ सभ ई ना कहलीं जे अपना बोली के अलग कइ दियाउ। ओ सभ का मन में सोगहग प्रेम रहल।

'सोगहग' जानते होइबि। लइकइयाँ में हमार बड़की पितियाइनि--हमनी का उहाँ के 'बाबूजीबो' कहत रहलीं, उहाँ का खास भोजपुरी गाँव के बेटी रहलीं आ कथा-कहनी के त उहाँ का पासे भण्डारे रहल--एगो कथा

सुनवले रहलीं। कथवा भुला गइल बा, मगर ओकर नायक एगो राजकुमार रहले, कवनो सराप से बेंग हो गइल रहले। उन्हकर हठ रहे कि हम सोगहगे लेब। बहुत-बहुत फितकाल में परले बाकी सोगहग खातिर अरियाइले रहले। कुछु साल पहिले डा. शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग बैतरनी' में सोगहग शब्द मिलल त हम सोचे लगलीं कि ई 'सोगहग' कइसे आइल। खोजत-खोजत संस्कृत में एगो शब्द मिलल 'सयुगभाग' -- दूनों हिस्सा समेत - पूरा। हमरा ई बुझाइल जे 'सोगहग' एही शब्द के परवर्ती रूप होई। भोजपुरी के सोगहग प्रेम, आपन पुरान अर्थ में 'सोगहग' होला। घर के बोली के प्रेम आ देस के बोली के प्रेम- प्रेम के दूनों हिस्सा मिलाके सोगहग- सयुगभाग ! भोजपुरी आदिमी पुरातनी कथा के राजकुमार हऽ-सोगहग के प्रेमी। भोजपुरी बोले बालनि पर आर्थिक कमजोरी के सरापो साइत लागल बा। एही से ई लोग कुछ बेंगिया गइल बाड़न। एह लोगन में माण्डूक्य वृत्ति जरूर कहीं-ना-कहीं रह गइल बा। मगर लिहें त लिहें सोगहगे।

'सोगहग' प्रेम कवनो बाउर चीज ना हऽ। निमने हऽ। निमन अर्थात् निर्मल, निष्कलुष ! बहुत दिन से स्वच्छ साफ बतावे खातिर ई शब्द चलल आवता। प्राकृत में 'निम्मन' चलत रहे - 'निम्मल मरअद-माअण परिट्ठिया रांखसुत्तिब्ब' - निर्मल - 'मरकत भाजन परिस्थिता शंख सुक्तिरिव।' बहुत बोलिनि से ई उठि गइल, बाकिर भोजपुरी में बनल बा। का जाने काहें। अइसन बुझाता कि ए बोली के बोले वाला निर्मलता के भुला ना सकले। मगर इहो कइसे कहीं ? गाँव में एगो निमन्त्रण-पत्र शुद्ध हिन्दी में मिलल। निमन्त्रण देबे बाला लोग कहे के चाहत रहे कि निम्मन निम्मन आदमी बोलावल गइल बाड़े। शुद्ध हिन्दी में लिखल लोग जे 'निम्न निम्न आदमी बुलाये गये हैं'। छोड़ीं ए बात के। एतना त साफे बुझात बा जे शुद्ध हिन्दी ठीक से पचत नइखे। तबो जवन भोजपुरी के सहज गुन हऽ, 'धरम करत में होखे हानि, तबो न छोड़ीं धरम के बानि'। सोगहग के प्रेम, मगर निर्मल चित्त से, ई सही रास्ता लागत बा।

तनी खुलासा कइके समुझावतानी। पुराना जमाना से एह देस में दू तरह के भाषा के प्रयोग होत आवता बा। लोकभाषा आउर अभिजात संस्कृत भाषा। कई बार लोकभाषा में बढ़िया साहित्य लिखाइल। थोरहीं बाँचल बा, बेसी त नष्ट हो गइल। बौद्ध लोगनि के, जैन लोगनि के विशाल धार्मिक साहित्य ओह जमाना का लोक प्रचलित बोली में लिखाइल। पालि के बहुते समृद्ध साहित्य मिलल बा। ऊ त हमरा बुझाला जे भोजपुरिये के पुरान रूप हऽ। फेरु प्राकृत में लिखाइल, फेरु अपभ्रंश में लिखाइल। मगर जब तक धार्मिक उपदेश, कुछ प्रेम आ नीति के कविता, कहानी, कुछ ज्ञान वगैरह तक के बात रहे तब तक मजे में काम निकलत गइल। जब दर्शन, तर्कशास्त्र आदि सूक्ष्म चिन्तन के जरूरत पड़ल तबे फटाफट संस्कृत में लिखाये लागल। कई बार दोहा त लिखाइल अपभ्रंश में मगर टीका लिखाइल संस्कृत में, जइसे कृष्ण पाद के 'दोहा कोश' पर 'मेखला टीका'। 'सन्देशरासक' अपभ्रंश के बढ़िया काव्य रहे। कवि अब्दुल रहमान त कहले-जे, जे ना मुरूख होखे ना पण्डित होखे, उनहीं लोगनि का सामने ई बार-बार पढ़बि :

जिण मुक्खु न पंडिअ मज्झियार
तिण पुरुउ पढ़िब्वइ सब्ब बार।

मगर तीन गो टीका के पता चलल बा - दूगो त छपि भी गइल बाड़ीस - सब संस्कृत में। काहे ? दू कारन से। पहिले त जइसहीं आवेगतरल सहज मनोभाव का क्षेत्र से उठि के विचार का बारीकी का क्षेत्र में पहुँचल गइल तइसहीं अनुभव कइल गइल कि शुद्ध जनभाषा ई कुल करे के राजी ना होई। अब काटलि-छाँटलि, गढ़ल-छीलल, कसावटवाली भाषा चाहीं। याने संस्कारवती भाषा होखे के चाहीं। दूसर कारण ई रहे कि लोकभाषा के क्षेत्र सीमित होला। अगर दूर-दूर तक, विभिन्न भाषा बोले-समझे बाला लोगनि तक विचार पहुँचाये के बा त सार्वदेसिक, भले कृत्रिम होइ, भाषा के सहारा लेबे के पड़ी। एही से लोकभाषा के साहित्य ढेर दिन जी ना सकल। जियल ओतने, जेतना के कवनो बड़ा धार्मिक आन्दोलन के सहारा मिलल।

आधुनिक हिन्दी पहिले त लोकभाषा का रूप में चलति। बाकिर जइसे-जइसे ओकर लोकभाषा के मूल गुण के ह्रास होखे लागल बा। अब धीरे-धीरे ऊ उहे पद पावे लागल बा जवन पहिले संस्कृत के रहल। अबहियों ओकरा में संस्कृत नाइन कसाव नइखे आइल, मगर आ जाई। विद्वाननि आ विशेष ज्ञानिनि के हाथ में पड़ि जाए से ऊ अभिजात सार्वदेसिक भाषा के रूप ले ले जातिया। जहाँ तक ज्ञान-विज्ञान के सूक्ष्म चिन्तन-मनन-मूलक साहित्य के सवाल बा, हिन्दी निश्चित रूप से सार्वदेसिक भाषा के रूप लिही। बाकिर जहाँ तक रागात्मक अभिव्यंजना के प्रश्न बा, अइसन शिकायति बहुत सुने में आवति बा जे हिन्दी जन-जीवन से दूर होत जाति बा। एक तरह के बौद्धिक कसरत बढ़ोतरी पर बाइ। असल में हिन्दी के

रागात्मक अभिव्यंजना उहें सफल होई जहाँ-जहाँ जन-जीवन में घुलल-मिलल भाषा, प्रतीक, बिम्ब, महाबरा जन-भाषा से लिहल जाई। ईहो प्रवृत्ति हिन्दी में बढ़लि बा। आंचलिक कहे जाए बाली कथा-कहानी में ई प्रवृत्ति कुछ अधिक उजियार लउकति बा। बहुत लोकविधा के प्रवेश भी बढ़ि रहल बा। लेकिन बेसी प्रतिष्ठा पावे वाला साहित्य आ साहित्यकार लोग धरती का ओरि ओतना नइखनि, जेतना आसमान का ओरि बाड़नि। एकर भारी प्रतिक्रिया भी हो रहलि बा। अब हरेक बोली के प्रतिभावान साहित्यकार लोग, जन-भाषा का ओरि देखे लागल बा। अब एक तरह के खिचड़ी पकावे के कारबार शुरू भइल बा, नाँव दिहल गहल बा आंचलिकता। बड़का-बड़का लोग कबे-कबे ईहो कहत बाड़े जे ए भाषा के नास हो रहल बा। मगर कवनो असर त नइखे देखात। ई जन-भाषा के सच्चा प्रेम का ओजह से हो रहल बा। एही से काफी मजबूत लागत बा। अब त हर बोली के लोग कहे लागल बाड़े जे सहीं ढंग से रागात्मक अभिव्यक्ति ओही भाषा में हो सकेला, जवन जन-साधारण के आपन देख-सुख के भाषा होखे। भिन्न-भिन्न बोली में कविता-कहानी लिखाए लागालि बाड़ी स। अइसन बुझात बा जे ई प्रवृत्ति बढ़ोतरीए पर जाई।

ई सब बिना कवनो कारण के नइखे होत। इतिहास-विधाता का अंगुलि-निर्देश पर होइ रहल बा।

जवना विशाल क्षेत्र के हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र कहल जाला ओमें बहुत बोली बोललि जालीं। ओमे केतना त हिन्दी का भाषाई ढाँचा से निकट बाड़ी स, केतना कुछ दूर बाड़ीस आउर कई गो त अति दूर बाड़ी। फिर कई बोली में दीर्घकाल से साहित्य-रचना में आपन निजी परम्परा रहलि हा। ब्रजभाषा निकट त बाइ, बाकिर ओकर साहित्य बहुत समृद्ध रहल। अवधी के त साहित्य संसार में प्रसिद्धे बा। राजस्थानी के आपन समृद्ध परम्परा बा। मैथिली त अब स्वतंन्त्र भाषा माने जाए लागलि। ओकर भाषाई ढाँचा दूर के बा। ओकरा दीर्घकाल से साहित्यिक परम्परा रहलि हा। भोजपुरी ना निकट के ह, आ ना बहुत दूर के। साहित्यिक परम्परा एकरो कम पुरान नइखे। हिन्दी सबके आपन मानि के चललि। कुछ दिन त कहीं कवनो आवाज ना उठल, बाकिर अब बहुत जगह आवाज उठे लागल बा। जमाना अइसन जरे-बुताए लायक आइ गइल बा जे कवनों कहीं पत्ता खड़कल ना कि उहाँ राजनीति पहुँचलि ना। भाषावार प्रान्त-विभाजन के सिद्धान्त अलगाव के उकसावहीं में मदद कइ रहल बा। जब केहू अपना भाषा के स्वतन्त्र कहेला त पहिली शंका ईहे होले कि अलग राज्य बनावे के कवनो दूरभिसन्धि त ना ह। रउवाँ कतनो किरिया खाईं जे हम खाली जन-जीवन के सही अभिव्यक्ति देबे खातिर ई बात कहतानी, बुद्धिमान लोग ना मनिहें। 'मनवें में चोर बा, केहू के ना जोर बा'।

ई त कवनो समझदार आदमी ना कही कि एक ठो शक्तिशाली केन्द्रीय भाषा ना होखे के चाहीं जे एतना बड़ा विशाल देश के एकता बनवले रहे। ओकरा के राष्ट्रभाषा कहीं, राजभाषा कहीं, सम्पर्क भाषा कहीं, कवनो फरक नइखे पड़े के। एगो सामान्य सार्वदेसिक भाषा रहल जरूरी बा। संविधान बनावे वाला लोग हिन्दी के चुनले बा। लेकिन बहुत लोग एबात के माने के तइयार नइखनि। ऊ लोग हिन्दी नइखन चाहत। चाहत बा लोग जे अँगरेजिए ऊ काम करो। उहे सम्पर्क भाषा रहो। थोड़ा सरम पहिलवाँ रहल हा, बाकिर धीरे-धीरे अब सरम बाली बात मद्धिम परल जाति बा। अब लोग खुलि के कहे लागल बाइ जे हिन्दी ना, अँगरेजिए सम्पर्क भाषा रही आउर रहे के चाहीं। कठिनाई ई बा जे एह देश के जनता अभी विदेशी के ओतना गुलाम नइखे भइल। घूम-फिरि के नजर जाति बा त हिन्दीए पर। बड़का-बड़का लोग जे चाही कहो, अँगरेजी देश के आत्म सम्मान के उपेक्षा कइ के कबहूँ ना चलि सकेले। चली त हिन्दीए चली। हम कवनो बनावटी बात नइखीं कहत। कुछ अँगरेजी प्रेमी लोग सोचे लागल बाड़े जे यदि हिन्दी एही परिस्थिति में रही त ओकरा के हटावल कठिन बा, काहे कि कवनो प्रान्तीय भाषा ओकरा आगे सार्वदेसिक भाषा का रूप में ना टिक सकेले। एह कान से कोसिस ई हो रहल बा कि हिन्दी के शक्ति तूरि दिहल जाउ। ए प्रकार के विचार के प्रत्यक्ष रूप अब दिखाई देबे लागल बा। हिन्दी का अन्तर्गत आवे बाली बोलिन में अलगाव के भाव ले आवे के कोसिस हो रहल बा। बाकिर जहाँ तक हम समुझत बानी हिन्दी भाषी कहे जाए बाला लोग ए अस्त्र से घायल ना होइहें। अलग-अलग बोलिनि में सर्जनात्मक साहित्य लिखल भी जाइ आ हिन्दी के राष्ट्रभाषा रूप के सम्मान भी दिहल जाई। भोजपुरी के आदर्श 'सोगहग', बराबर स्वीकृत रही। बाकिर गलत ढंग से सोचे वाला लोगनि से सावधान त रहहीं के परी।

ठीक बात ठीक ढंग से सोचे के चाहीं। भोजपुरी ए कारण से साहित्य-भाषा ना हो सकेले कि कुछु थोड़े आदमी का मन में अइसन हुलास बा। हिन्दी एह कारण

से ना मुरझा जाई कि कुछ लोग चाहताड़े कि कमजोर हो जाउ। सम्पूर्ण देश के बहुसंख्यक जनता के जवना से हित होई आ जवना बात के समर्थन मिली, उहे होई। हम का सोचत बानी आ रउवाँ का सोचतानी, एकर महत्व तब होई जब एह सोचला से देश के बहुसंख्यक जनता के भलाई होई आ ओकर समर्थन मिली। भोजपुरी बोले वाली जनता के आशा-आकांक्षा का अभिव्यक्ति में सहायता मिले, ऊ कुछ अधिक सुख-सुविधा मान-सम्मान पा सके। राष्ट्रभाषा हिन्दी से एकर कवनो विरोध नइखे। ना कबहीं भोजपुरी का सोचे के चाहीं कि ऊ हिन्दी के प्रतिस्पर्द्धी होके रही। ठेठ भोजपुरी शूरता आउर निर्भीकता के भाषा हऽ। राष्ट्रभाषा हिन्दी भी ओतने आपनि हऽ जेतना भोजपुरी। दूनों आपन भाषा हऽ। दूनों के, देश का जनता के सेवा खातिर स्वीकार कइल गइल बा।

कबीर, तुलसीदास, कुँवर सिंह आ भारतेन्दु के भाषा छोट उद्देश्य के भाषा कभी हो सकेले ? ई सब लोग पूरा देश के, भीतर-बाहर से एक आ अखण्ड करे के साधना कइले बा लोग। भोजपुरी कबहीं छोट बात में ना परल आ ना परे के चाहीं। राष्ट्रभाषा हिन्दी हमहन के आपने भाषा हऽ। ओकरा के सजाये-सँवारे में भोजपुरी के रक्त आ पसीना कम नइखे लागल। दूनों में लिखीं, दूनों में पढ़ीं, दूनों एके हऽ। दाहिनी आँख आ बाईं आँखि में कवनो झगड़ा बा ? ब्राह्म धर्म और छात्र धर्म में कवनो बैर बा ? - 'इदं ब्राह्म मिदं क्षात्रम् शापादपि शरादपि'।

संविधान में कुछ भारतीय भाषा के मान्यता दिहल बा। बाकिर बहुत अइसन भाषा बाड़ीस जवना के मान्यता त नइखे मिलल बाकिर उनहनि में कुछ-ना-कुछ साहित्य-निर्माण हो रहल बा। कुछ दिन तक साहित्य अकादमी संविधान में स्वीकृत भाषनि का साहित्य के पुरस्कार देति रहलि, बाकिर एने आके अइसन भाषा भी पुरस्कार वास्ते स्वीकार कइल गइलीं हा जेकर कवनो चर्चा संविधान में नइखे। उद्देश्य रहल साहित्य-निर्माण के प्रोत्साहन दिहल। कवनो भाषा राजनीतिक दृष्टि से संविधान के अंग ना होके भी उत्तम साहित्य दे सकेला। राजेशखर कहि गइल बाड़न जे उत्तम उक्ति-विशेष काव्य कहल जाला, ओकर भाषा कोई भी हो सकेला। एह बात के आउरी बढ़ाइ के कहल जा सकेला कि रागात्मक सम्बन्ध के उजागर करे वाला साहित्य कवनो बोली में लिखल जा सकेला। एही से अब साहित्य अकादमी अइसन अनेक बोली के साहित्य के पुरस्कार दे रहलि बा जेकर मान्यता संविधान में नइखे। शुरू-शुरू में हमरा ई बात बहुत अच्छा ना मालूम भइल। ई डर बाइ जे आगे चलि के ई बात राजनीतिक उलझन पैदा करी। मगर अब त साहित्य अकादमी धड़ाधड़ बोलिनि के मान्यता देत जाति बा। अब मगर सब बोलिनि में पुरस्कार प्राप्त होखे लागल त भोजपुरी, अवधी वगैरह शक्तिशाली बोलिनि के काहे उपेक्षा होई। हम समझतानी जे जब आउर बोलिनि के साहित्यिक मान्यता मिलि गइल त भोजपुरी के भी अवश्य मिले के चाहीं। एह भाषा के जे प्रतिभाशाली कवि, कथा-लेखक बाड़नि उनहूँ के पुरस्कार जरूर मिले के चाहीं। राष्ट्र के दसवाँ हिस्सा लोग जवना बोली के बोलत बा, आपन दुख-सुख, आशा-आकांक्षा के अभिव्यक्ति दे रहल बा, ओकर सम्मान होखहीं के चाहीं। बाकिर ई विशुद्ध साहित्यिक प्रस्ताव हऽ। एकरा साथे राजनीतिक सौदाबाजी ना होखे के चाहीं। केहू का मन में ओइसन बात होइ त तुरन्ते मन में से ओके हटा देबे के चाहीं।

फेरु हम आप लोगनि के यादि दिलाई जे हिन्दी आ भोजपुरी के एके समझि के काम करे के चाहीं। दूनों के दुइ मनले झंझटि पैदा होई। विद्यापति जी कहले रहलीं जे 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा, तँ तैसन जंपों अवहट्ठा'। देसिल बयन आपन घर के बोली हऽ। अवहट्ठ सार्वदेसिक भाषा हऽ। आजु का युग में ऊहे हिन्दी बा। विद्यापति जी के कहनाम रहे कि जइसन देसिल बयन हऽ तइसन अवहट्ठ (परवर्ती अपभ्रंश) हऽ - 'तइसन ! कवनो भेदभाव ना राखे के चाहीं'। विद्यापति जी दूनों में लिखले रहलीं। हमनीं का उहे मानि के चले के चाहीं। मउज आइल त 'तैसने' हिन्दी। हमन के दूनों भाषा आपने हऽ। एह क्षेत्र के भोजपुरी लिखे वाला साहित्यकार भी नमस्य बाड़े आ हिन्दी में लिखे वाला भी प्रणम्य बाड़े। भगवान सबकर कल्याण करसु।

●●●

कविता

गाँव खामोश बा....।

❑ अशोक द्विवेदी

एने कई दिन से
गाँव खामोश बा
मनगुपुते कुछ सोचत
फिकिरमंद
जइसे खोहा में होखे बंद।
पाकत फोड़ा लेखा
भितरे भीतर खदकत बा
बाकिर चुप बा गांव
एघरी।
अंगुरी प' दिन गिनत
बूढ़ हो चलल बा
बीच के आदमी
दयाद-पटीदारन से खार खइले
बनियन से उधार खइले
बइठल बा, नीचे मूड़ी लटकवले।

राजनीति : हर नीक काम में
डाल देले बिया बिधिन-
केहू हेने जाता, केहू होने
केवनो तालेमेल नइखे
बस, कुछ लोगन क वाह वाह
आ कुछ लोगन क आहि।
मुखिया, मेम्बर, परमुख, सिकरेटरी,
सेवक सभकर दाल गलत बा- बस
बिचबिचवे हाथ मलत बा!

सुक्खू रेडियो बजावल छोड़ि
टी.वी. देखत बाड़न चमटोला
दूइ सौ वाट बलब का अँजोरा
लेहना काटत बाड़न स बेटा पतोहि
गाय-गोरू फेंड़ा तर
आ नाती-नातिन ओसारा-
हाहा-ही ही में मशगूल
एकलेखा मउज बा सुक्खुए के।

बीच के अदिमी चुप.....
बुतात कउड़ा लकड़ी से खोरत बा...
'बचवा' भा 'बचिया' खातिर
कुछऊ नइखे बाँचल ओकरा पास
सिवाय दू बिगहा खेत
आ पांच बोरा धान के
गोहूँ बेंचि के पढ़ाई के फीस देव
कि मेहर के दबा-बीरो
कि 'बचिया' के बियाह के पइसा जोड़ो
ऊहो दिने-दिन भइल जातिया सेयान।

चउधुर के दुआर मनसायन बा
ग्रामनिधि आ रोजिगार-गारन्टी क
चाभिये बा उनका तकिया तर
लोग ओइजे जमल बा
सिगरेट-बीड़ी फुंकाता
सुर्ती ठोकाता
अहरा सुनुगा के पाकऽता घाठी-लिट्टी
मुरुगा के इंतजाम फरका बा।

बीच के आदमी ससुरा
न ओनिये के ना एनिये के
कूल्हि ठसक आ इमानदारी
केने दो घुसुर गइल बा।
शहर से मनीआडर आइल बन्न बा
बेटा ससुरा मेहरिये से तंग बा
बाप-माई का देखी ?
सोचत बा, किरिस किरिस के
बीच के आदमी
कि ऊहे लाचार
आ सबसे बेकार बा !
रेक्सा चला ना सके
दुकान-दउरी क बेंवत नइखे

क्रमशः आगे...

तीन-पॉच के लूरे नइखे।
जोगाड़ लगावे के सहूरे नइखे
रोजिगार खातिर 'अनफिट' बा।
काहेकि सरकारी नजर में
गरीबी रेखा से ऊपर बा।

बा संतोष त अतने
कि गाँव एघरी खामोश बा
सब अपना में परेशान बा
अपने में मगन
अतने में गील
कि हिनिके उड़ा देब
हुनुके भठा देब!
उनकर मामर हेठ करब
बहुत जल्दिये गोटी सेट करब !!

●●●

(एक) नक्शा बेचे वाला लइका

❑ अजय कुमार पाण्डेय

हमरा कचहरी परिसर में,
एगो लइका
नक्शा बेचेला,
भारत के।
केहू बोलाके
ओसे दाम पूछेला
अउर
नक्शा कीनेला,
केहू खाली
दाम पूछेला
अउर दाम सुनिके
अनसुना बनिके
दूसरी ओर तिकवेला
लइका बिना कुछ कहले
आगे के राह
ले लेला।
ऊ रोज-रोज के
मोल-भाव करे
आ नक्शा लेवे भा
ना लेवेके लोगन के
मंसा से पूरी तरह
वाकिफ हऽ
काहेंकि,
लोगन के मानोभाव के
समझे खातिर
ओह लोगन के मुँह के भावे-भंगिमा
ओकरा खातिर
काफी हऽ।
खैर,
केहू नक्शा कीने
भा ना कीने
हमरा भला का परे !
हमार तऽ अन्तर्मन
रउवा से
एतने भर पूछेला -
भारत के नक्शा में
कश्मीर से कन्याकुमारी के बीच
ऊ लइका कहाँ रहेला ?

(दू) नइहर में बेटी

आजु
बेटी
नइहर आइलि हऽ।
माई के आँचर में
नदी बहेले।

(तीन) उमेद

हमरा दुआरे
नीम के फेड़ पर
अपना खोंता से
एगो गौरइया आपन
मूड़ी निकाल
एहर-ओहर देखि के
सीधे आसमान की ओर
उड़ि गइलि।
उदास मन
उमेद से भरि गइल।

●●●

चोट लोहार के

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

चोट सइ सोनार के
एक बस लोहार के।

साँस मुअल खाल के
धौंकनी कमाल के
अगिन के जरा रहल
लोह के गला रहल
रीत बस प्रहार के
ना कबो गोहार के।

हाथ जगन्नाथ बा
हुनर संग-साथ बा
मन मचलि-मचलि रहल
शकल नया ढलि रहल
धार हर के फार के
फावड़ा-कटार के।

साँस बा फंफा रहल
धौंकनी हंफा रहल
बिपत बा बरफ बनल
बा समय थमल-थमल
जिन्दगी सुखार के
बात बस फुहार के।

जे सृजन के धार दे
हुनर के संवार दे
जिन्दगी खउलि रहल
रेत-अस फिसलि रहल
चोट करु लोहार के
जंग आर-पार के।

●●●

गीत

❑ त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'

खूब सींचऽ कि बिरवा, बिरिछ बनिजाय ।

सींचऽ पसीना क पानी से सींचऽ
आपन चढ़लकी जवानी से सींचऽ
ढारल सनेहिया फलित बनि जाय
खूब सींचऽ कि बिरवा, बिरिछ बनि जाय ।

मेहनत से कोड़ऽ, कुदारी चलावऽ
माटी के हिकमत से सोना बनावऽ
व्रलि–खिलि जाय
बिरिछ बनि जाय ।

बीनि–बीनि फेंकऽ
त दिन छेंकऽ
के भीति हिलि जाय
बिरिछ बनि जाय ।

भ्ड़राई
ोड़ि बिटुराई
तिरिथ बनि जाय
बिरिछ बनि जाय ।

पुरुज–चान–तरई
ाने क चिरई
प गिरि जाय
बिरिछ बनि जाय ।

कहानी

कतिकहा विदवान

❑ रामदेव शुक्ल

आई 'मास्टर जी बइठीं'। कहीं, आप डाक बंगला में कइसे चलि अइनीं। कहि के लुटावन मनबोध मास्टर के बइठवले। मास्टर बइठि के पुछले, 'का हो लुटावन, दिल्ली से कुछ लोग आवे वाला रहलन। ओह लोग के कुछ अता पता बा।' लुटावन चिहा गइलें। कहलें दिल्ली से त नेता लोग कबो-कबो आवेंले। आजु त केहु की अइले के कवनो खबर नइखे। मास्टर कहलें, 'केहू नेता के अवाई रहत त हम काहे फेर में परतीं।' आरे ऊ बहुत बड़हन विदवान लोग हवें। बड़का लेखक लोग। जानेलऽ लेखक का होलें। लुटावन कहलें. ..... 'लेखपाल ह लोग। आजु काल लेखपाल त बड़का भूते बा लोग'। मास्टर ठठा के हँसले। कहलें, 'ज्जा हो लुटावन भाई। तुहऊँ बुरबके रहि गइलऽ।' लेखक लेखपाल नाहि होलें। किताब त मसीनी में छापल जाला न। आकि हाथ से लीखल जाला। मास्टर - 'अरे भाई ! पहिले हाथ से लिखाला तब्बे त मशीनी में छपाला। तुलसी दास रमएनवां पहिले हाथे से लिखले रहले। तब्बे न आजुकाल छापि छापि के लोग बेच रहल बा। लुटावन- 'त का तुलसी बाबा अइसना साधू लोग के लेखक कहल जाला?' हंसि परले मास्टर। कहले, 'नाहीं हो, साधू लेखक हो सकेले; बाकि सगरी साधू नाहीं। लेखक केहु हो सकेला। तूँ कुछु लीखऽ त तुहऊँ लेखक कहइब।' गान्ही महतमा नेता रहलें आ लेखकों रहलें। बहुत किताब लिखले बाड़े ऊ। जावाहिरो लाल बड़का लेखक रहलें। मनबोध मास्टर आपन बात पुरहर करें, तबले एगो गाइ के हाता में ढूकल देखि के लुटावन ओके हाँके चलि गइलें। हाँकि के लवटलें त पुछलें, 'मास्टर जी का कहत रहनी हँ।' लीख त फूहर मेहरारून की कपारें में होली स। आप लेखक के बतावत रहनी हँ। मास्टर उदास हो गइलें। कहलें जायेद लुटावन भाई। आजु ले लेखक नाहीं जनलऽ त अब बुढ़ौती में का करबऽ जानि के। हमके इहे जानेके रहल ह कि दिल्ली से दू तीन जने आवे वाला बाड़े। ऊ लोग कब अइहें। साँझि ले एक बेर अउरी हम आके देखि लेबि। एह बीच में आ जाव लोग व बता दीह, कि मनबोध मास्टर आइल रहलें। लुटावन कहलें, 'ठीक बा हम बता देबि।' मानबोध मास्टर लवटि परले। थोरही आगे बढ़ल रहले कि एगो गाड़ी हनहनाति आवति रहल। गाड़ी डाक बँगला कि हाता में ढुकि गइल, त मनबोध मास्टर लवटि परलें। उनका बुझाइल कि ऊहे लोग रहल ह। जबले मनबोध मास्टर धावत-धूपत डाँक बँगला कि भित्तर पहुँचले तबले दिल्ली से आवे वाला लोग डाक बँगला की कमरा में नहाए चलि गइल रहे। मनबोध मास्टर लुटावन से पुछले का हो। ऊहे लोग ह न। तूँ हमार नाव बतवल ह। कुछ कहत त नाहीं रहल ह लोग। लुटावन कपारें हाथ लगा लिहलें। कहलें, 'ई बताई रउरे एही कुल्हिन के बड़का लेखक कहत रहनीं हँ। आ हम त गुनावनि में परि गइल बानीं।' जब हम एकनी से बतवनी हँ कि मनबोध मास्टर जी आइल रहनी हँ त ओमें से एगो चिहा के पुछलसि कि मास्टर अकेले रहलें हँ कि उनकी साथे कवनो लइकनियों रहलि ह। एतना सुनते हमार त एड़ी से कपार ले जरे लागल ह। रउरा जानत बानी कि इ दुनू लम्पट हउवें सों। साल में तीन चारि बेर आवेलें सो। हर बेरि एकनी कि साथ एगो पतुरिया रहेले। हर बेर नई लइकनी। रउवाँ एकनी के लेखक कहत रहुईं। कहत कहत लुटावन चुपा कइलें आ मास्टर की ओर एहलेखा ताके लगलें जइसे मास्टर के दारु पीयत में पकड़ि लिहले होखें। मास्टर लुटावन के निगाह से घबड़ा गइलें। कहलें तू काहें एह लेखा ताकत बाड़ हो। लुटावन कहलें, 'हमके माफी देई' मास्टर जी, बाकि एक बाति बताईं। ओमे से एगो ई काहे पुछलसि ह कि मास्टर अकेले आइल रहलें कि उनकी साथ कवनो लइकनियों रहलि ह। का आप कवनो लइकनी ले के आवे वाला रहनीं। आप एह नीच करम में कइसे फँसि गइनीं। मनबोध मास्टर जम्मा से बहरा हो गईलें। कहलें, 'होस में आव ए लुटावन। जानत बाड़ऽ कि केसे का कहत बाड़ऽ। हमार बेटी एमें में पढ़ि रहलि बा। ऊ हो किताब लिखेले। एह लोग से मिलल चाहत रहलि।' दिल्ली में एह लोग कि लग्गे चिट्ठी लिखले ह कि मिलल चाहत बानी। ओकरे जबाव में चिट्ठी आइल कि फलाने तारीख के ई लोग एही डाक बँगला आई। एही जा आके भेंट करे। ओही खातिर हमहूँ तहसे पूछे आइल रहुईं'। ओही से ईहो लोग तहसे पुछले हँ। तू कहाँ से कहाँ अरथ लगावे लगलऽ। रीस की मारे मनबोध मास्टर दाँत पीसि के रहि गइलें। लुटावन सम्हरले, 'मास्टर जी, आप

एकनी के जानत नइखीं, एही से हमार बात आपके जहर लागत बा। हम डाक बँगला के चौकीदारी करत करत बूढ़ हो गइली।' उप्पर से उजरका लउके वाला एक से एक नेता आ बड़मनई लोगन के नरक देखि रहल बानी। जवने लोग के आप बड़का लेखक कहि रहल बानीं ई लोग केतना गइल गुजरल आदिमी ह हमसे पूछीं। आप हमरी पर खिसियाईं मति। आपसे हाथ जोरि के कहत बानीं कि अपनी बेटी के परछहियों एकनी की लग्गे नति आवे देइबि।' लुटावन के आँखि भरि आइल। बोली बन्हा गइल। चुपा गइलें। मनबोध मास्टर के रीसि बुताए लागल। लुटावन के बहुत दिन से जानेंलें। चौकिदार हउवें त का भइल, अदिमी अच्छा ह। एकरी बात में दोजन होखी। कुछ सम्हरि के कहलें लुटावन भाई; बेटी वाला परसंग रहल हऽ एही से रीसि लागि गइल ह। हम एह विदवानन के असलियत जनतो नइखीं। हम त ईहे जानल बानीं कि एकनी के बड़हन नाँव बा। किताब पर किताब लिखत रहेलें सो। पढ़वइया लोग एकनी की नउवें से अदकि जाता। हम कइसे जानीं कि एनहनी के विचार बात एइसन बा। लुटावन अपना के सम्हारी लिहले रहलें। कहलें 'आप हमार एगो बात मानि लेईं'। एकनी से भेंट करीं। कहि देईं कि बेटी बेराम हो गइलि बा एही से आजु नाही आइलि ह। जीउ ठीक होई त बिहान परसो ओके लिया आईबि। आ अपने एकनि के देखा के लवटि जाईं। कवनो लेखा एकनी के आँखि बचा के राति के आईं त हम एकनी के लिल्ला देखाइबि। आप अपने समुझि जाइल जाई कि ई विदवान असल में का हवें सँ। मास्टर मानि गइलें। एहर ओहर टहरत रहलें। दिल्ली वाला विदवान नहा धो के बहरियाइल लोग। लुटावन चाह लेके दउरलें। चाह पीयत में एक जने पुछलें का हो लुटावन जवन मास्टर हमन के पूछत आइत रहुवे ऊ कहाँ बाड़े। देखीं हउ का आवत बाड़ें, कहि के लुटावन गेट के ओर तकलें। आडर मिलल कि एक कप चाह मास्टर खातिर ले आवऽ। लुटावन चाह ले आवें गइलें। तवले मनबोध मास्टर नियरे आ गइलें। हाथ जोरि के पौलगी कइलें। दूनू विदवान एक सथहीं चिहाके उनके आवभगत कइलें, आईं मास्टर जी ! बताईं का हाल चाल बा। मास्टर कहलें सब ठीके बा। तनि बचिया के जीउ खराब हो गइल बा। काल परसों ले ठीक हो जाई और सब लोग ठिके बा। आपन कहल जाय। "हमनो के हाल चाल ठीके बा। सोचत रहल गइल कि मधु आ जइतीं त कुछु कविता कहानी सुनल जाइत। आप कहत बानीं कि उनके जीउ खराब बा। का भइल बा?" डाक्टर से देखावल गइल ह ? मास्टर महलें, 'एमें डाक्टर से देखावे लायक कवनों रोग नइखे। अरे मौसमी जर बोखार भइल बा। हो सकी त बिहने लिया के आईबि। अबहिन त आप लोग दू चारि दिन रहल जाई न। ऊ त अपनहीं आप सबसे मिले के बेचैन बिया। मास्टर कनखिए से दूनू जने के चेहरा देखलें। उनका बुझाइल कि दूनू चेंहरा उदास हो गइल बा। लुटावन से बाति नाहि भइल रहत त मास्टर इहे समुझतें कि उनकी बेटी के बेमारी के हालि सुनि के लोग उदास हो गइल बा, बाकि अब उनका बुझाइल कि भुखाइल बाघ की समने से पाड़ा बहकि गइल होखे, एइसन उदासी विदवानन की चेहरा पर बा। कुछु अऊरी बतकही क के मास्टर दूनू जने से छुट्टी मंगलें।' कहलें, 'मधु के जीउ हरियरा जाई त बिहान उनके लिया के आईबि जरुर।' विदवान लोग से रामरमी कर के मास्टर लुटावन की लगे जाके कहलें, 'अब हम चलत बानीं।' लुटावन कहलें एगो बाति मानीं, खा पी के एहि जा चलि आईं। जवने कमरा में विदवान लोग ठहरल बा ओकरे बगल वाला कमरा आजु खाली बा। हम चुपचाप रउवाँ वोही में राखि देबि। एइसन जोगाड़ कर देवि की आप ए लोगन के बातकही सुनि लेईं। तब एह सब के असली चेहरा लउके लागी। मनबोध मास्टर कहलें, 'अच्छा देखल जाई। अबहिन त हम घरे जात बानीं।' कहि के मास्टर चलि गइलें। लुटावन साहब लोग की कमरा में जा के राति के खाना पीना के बारे में पूछे लगलँ। विदवान लोग के मुँह पिटइले एइसन लागत रहे। एक जाने कहलें, 'का खाये के मन करत बा जी।' दुसरका जाने खिसियाइल हँसी हँसि के कहले, 'अब जवन मिली तवने न खाए के परी।' पहिलका जने कहलें, 'आरे उदास काहे होत बानी डाक बँगला ह, जवने फुरमाइबि तवने हाजिर हो जाई। लुटावन की ओर ताकि के आँखि मरले। का हो लुटावन हम ठीक कहत बानी न। लुटावन बूझि गइले कि का कहत बानें, बाकिर अबूझ बनि के कहलें, मुरगी मिलि जाई। अब देसी कहीं भा विदेसी जवन बजरिया में बिकाले ऊहे न मिली।' पहिलका विदवान कहलें, 'अबहिन तू जा।' हमन के सोचि के बतावल जाई कि कवन खाना बनी। लुटावन, जी हजूर कहि के चलि गइले। मनही मन चारि गारी दिहलें कि तहार मुर्गी के मरम त हम बूझत बानीं सरऊ

बाकि, बेबस बानी। लुटावन सोचे लगलें कि हर बेरि त मुर्गी ई कुलि अपनी साथहीं लेके आवत रहलें, एह बेरी मास्टर की बेटी पर निसाना लगवले होइहें सँ, एह से एतना मिसमिसा रहल बाड़े सँ। लुटावन जैसे आडर पवलें खाना बना के दे दिहलें। ओहर साहेब विदवान लोग बोतल खोलि के खाए पीए बइठल, एहर मनबोध मास्टर आ गइलें। लुटावन चुप्पे-चुप्पे बगल वाला कमरा में ढुका दिहलें। बत्ती नाही जरवलें। बन्द केवाड़ी के छेद देखा के मास्टर से कहलें एही में आँखि सटा के देखत रहीं, राउर विदवान लोग का का कहत सुनत बाड़े। एह बाति के ख्याल रखबि कि कवनो अवाज नाही होखे के चाहीं। जानि जइहें सँ कि हम आप के कमरा में ढुकवले बानीं त हमार नोकरिए चलि जाई। मास्टर इसारा से कहलें जा कवनो आवाज नाहीं होखी। लुटावन चलि गइलें आ मनबोध मास्टर केवाड़ी की छेद से आँखि सटा के बइठि गइले। उनके कान अँखिये में सट गइल। बड़का विदवान कहलें, जा मरदे आजु की रात कुली मजा बिगाड़ि दिहलऽ। एसे अच्छा त ई रहित की अइलें नाही रहतीं जाँ। 'अरे साहब कुछु निम्मन चीज पावे खातिर तीन इंतजार करहीं के परेला। हो सकेला कल्हि परसो ले मामला फरियाइए जा। कहि के छोटका लेखक आँखि दबवलें। गिलासें में लालपरी ढारि के एगो उनकी ओर बढ़वले 'एगो मुँह से लगवले।' पलेट में से भूजल मुरगी के टुकड़ा आ अण्डा के टूँगत टूँगत बड़का विदवान कहलें, 'हमरा त बुझात बा मास्टर कुछ समुझि गइल बा।' बेरामी के त बहन्ना बनावत बा। छोटका जने, कहलें, 'नाहीं भाई ! मास्टर बड़ा सोझ मनई हवें'। जब हम एह कसबा में रहनी तबसे ओके जानीले। कवि आ लेखक लोग के बड़ा आदर करेला। एही से अपनी लइकिया के लेखक बनावल चाहत बा। बड़का जने कहलें, 'ओके लेखिका त बनइए देतीं बाकि आवे तब न।' केवाड़ी की पाछे मनबोध मास्टर की देहीं में आगि लागि गइल। जवन भाव दूनू लेखकन की चेहरा पर आ आँखिन में ऊ देखलें ओसे उनके खून खउले लागल। धीरे से कमरा खोलि के निकड़लें। लुटावन बहरा खाड़ रहले। कि कहीं साहब लोग के कुछ फुरमाइस होखे त लेके धावें। मास्टर उनसे कहलें, 'लुटावन तू ठीक कहत रहल। ई सारे त कातिक के कुक्कुर बाड़े सँ हो। अब एकनी से हमार बेटी का मिली ? हमहूँ कब्बों नाहीं एकनीं क मुँह देखबि।' कहि के चलि परलें।

●●●

कहानी

नेकी कर नदी में डाल

❑ राजगुप्त

सनेही बाबू खाली अपनही गाँव खातिर ना, बलुक समुच्चा जवार खातिर भल आदमी रहले। सभे उनकर सम्मान करें। बेचारु सभका दुख-सुख में दिल खोलि के हाथ बँटावें। लइकी के नीमना घर विअहि देले रहले। लइका सुदामा अफरात कमात रहले। एह से ऊ अपना पिता सनेही के पास ढेरकी ले पइसा भेजे। सनेही बाबू के घर में दू परानी आ दूगो नोकर, एतना छोट परिवार आ ऊपर से खेती-बारी। केतना ले खासु आ केतना उड़ावसु। एकरा चलते सनेही बाबू बहुते दयावान हो गइले। सुदामा के भेजल सज्जी पइसा गरीब-दुखियन के सेवा में खर्चा क देसु।

दुधारु गाइ के लातो भला। बाकिर सनेही बाबू भुलाइयों के केहू के अनभल कबहीं ना तकले होइहें।

सनेही बाबू के पुरान कच्चा घर रहे। खपरइला घर में सनेही बाबू के बड़ा नीक लागे। हर मौसम खातिर सदा बहार घर। कई तोर सुदामा जोर दहिले कि खपरइला घर तुड़वा के पक्का बनवा लऽ, बाकिर सनेही बाबू लइका के बाति पर धेयान ना देसु, हे कान से सुनसु ओह कान से निकालि देसु। पुराने चाउर पंथ कहाला, कहि के बाति टारि देसु।

सुदामा जहाँ नोकरी करत रहले ओही आफिस के एगो लइकी से पेयार-विआह के दिन तारीख रखा गइल। पहिले त सनेही बाबू छान पगहा तुड़वले कि गांवे से विआह होई। अंवार-जवार के लोग का कही, बाकिर लइकी के माई-बाप के जिद्द के आगा सनेही बाबू के झुके के परल। बड़का शहर दिल्ली में बिआह नधाइल। सनेही बाबू अपना बेकति सीमा देवी के लेके गांव के घर में ताला मारि के दिल्ली चलि गइले।

हँसी-खुशी गाजा-बाजा के साथ विआह भइल। कम्पनी-घर (काम्पलेक्स) में सज्जी कर्मचारी एके साथे रहत रहले। सनेही बाबू कर्मचारी परिवार में एतना घुल-मिल गइले घर भुला गइले। जब गांवे जाये के बाति आवे त कर्मचारी परिवार चिरउरी विनती क के एक महीना अउरी बेलमा देव।

चारि महीना बाद जब गाँवे अइले त घर के दशा देखि आँखि से लुत्ती बहरिया गइल। करेजा घवाही हो गइल। आन्ही पानी में गिरल घर में से नरिया-थपुआ, बांस-बल्ली सज्जी गायब ? बक्सा आलमारी के, के पुछो ? खटिया-मचिया कुर्सी कहीं लउकबे ना कइल। हे दइब, के ढो ले गइल ? घर के दशा देखि सनेही बाबू कपार ध के दवरे बइठि गइले। सीमा देवी आँचर से लोर पोंछत सुसुके लगली 'भील भाई लूटि लीहले बन, राजा के खबर ना भइल।' ●●●

कहानी

घाव

❑ हीरा लाल 'हीरा'

राम आधार के गोड़ में छोटहने फुसरी निकलल रहे। हाड़ पर होखला के कारन रहि-रहि ऊठत बइठत बड़हन घाव अस अभकत रहे। एकरे चलते तनी-तनी बोखरहसों रहे। सुघुरवला पर इचिकी आराम मिले, बाकिर जवन घाव हिरिदा के भीतर भइल रहे, ऊ ढेर करेजा के सालत आ छेदत रहे। आजु उनुकर मन बड़ा उदास रहे। दुअरा बइठल कुछ सोचत रहले।

एही बीचे उनकर लइकी जानकी आके कहली - "बाबूजी हो ! चलऽ दवाई खालऽ।" बोली सुनते राम अधार कहसों उठले आ सोटा के सहारे, तनी-तनी गोड़ से दबते खम्हिया में गइले। उनके भगवान जी तीनि गो बेटा आ एगो बेटी देले रहले। सभकर पढ़ाई लिखाई आ शादी बियाह हो गइल रहे। दू जाना सरकारी नोकरी में मुम्बई के आरी कगरी आ एक जाना प्राइवेट में कानपुर में नोकरी करत रहले। जानकी सबसे छोट रहली।

जइसे-जइसे आदमी शिक्षित आ विकसित होता, परिवार के परिभाषा आ दायरा सिकुरल जाता। आजु परिवार में अपना बेटा-बेटी आ मियां बीबी के अलावा दोसरा के जगह नइखे। सरकारियों कायदा कानून में ईहे बा। रोज कुकुरहो आ घरकच ना होखे, भा माई बाप के जीयते सब आपन-आपन हांड़ी डाली ना छितरावे, एकरा से बाँचे खातिर रामआधार तीनों बेटन के परिवार, संग लगा देले रहले। बेटा पतोह एब बड़ा खुश रहे आ माई बाबू के सब बड़ाई करे। मोका कुमोका सब जुटे आ हफ्ता दस दिन नीक से कटि जाय। बाप महतारी जमाना के रंग-ढंग देखि के मने मन सबुर संतोख कइके तनहा रोटी सेंकत आपन दिन काटत रहले। जानकी गाहे बेगाहे आइके माई बाबू के हाल-चाल ले लेत रहली। आजु काल्हु ऊ एहिजे आइल रहली।

"आखिर कहिया ले खर बिरउवा दवाई करबऽ अइसे ई हाड़ पर के घाव नीमन ना होई। चट्टी पर जाके वर्मा डाक्टर से अंग्रेजी दवाई ले लऽ।" जानकी अपना बाप से कहली। "हँ रे ! हमरो ईहे विचार बा। आजु जरूरे जाइबि। फुसरिये त बा, बाकिर बाड़ा दीकि कइले बे।" राम आधार कहले। ऊपरी बेरा जानकी अपना ससुरा चलि गइली आ ऊ दवाई लेबे डाक्टर किहाँ चलि गइले।

वर्मा डाक्टर के जवार भर में बड़ा नाव रहे। टिन से छावल उनकर दवाखाना रहे। शुरुआती घरी त सड़क के किनारे कुर्सी मेज धइके आ झोरा में स्टाक लेके दवाई करसु। गवें-गवें दवाखाना चालि गइला आ कुछुवे साल में एतना कमा लिहले कि शहर में कोठी बनि गइल। लोगन के भरमावे आ भेद छिपावे खातिर आजुवो टिनवे रखले बाड़े। इनिका पासे कहवाँ के कवन डिग्री बा, ई केहुए नइखे जानत, बाकिर सगरी रोग के माहिर हउवन। सरकारी अस्पताल में त हर रोग के अलगा-अलगा डाक्टर होले आ सीरियस केस के ऊपर रेफर कइ देले, बाकिर ई डाक्टर कइसनो केस में हाथ लगा देले आ दोसरा किहाँ भेजल आपन बेइज्जती बूझेले। मरीज के आपन मर्जी, जब ले सहत बने सहो नाही त रुपया पइसा संगे आपन जानो गँवा देव। बिछी के मंतर के हालि ना जनिहे बाकिर साँप के बियरी में हाथ डालल इनकर बायां हाथ के खेल बा। अपना देस के ईहे बिडम्बना बा। सत्तर प्रतिशत गँवई आबादी खातिर सुबहित दसो प्रतिशत नीमन आ योग्य डाक्टर नइखन। अइसना डाक्टरन किहाँ गइल जनता के मजबूरी बा। जब सरकारी छाया परत बा त गदहा के सींग नीयर क्लीनिक बन्द कइके गायब हो जाता बा लो।

"आईं बाबा बइठीं। रउवा बाड़ा तकलीफ में बानी।" राम आधार के देखते डाक्टर कहले। "देखीं ना, हई छोटहने फुसरी रहलि हा बाकिर आराम भइला के जगहा बढ़लि जात बे। चलल फिरल दुलुम बा।" राम आधार जबाब दिहले। घाव देखत डाक्टर कहले, "कवनो खास बात नइखे। समय से आइल बानी। मामुलिये बा, एक हफ्ता में सूखि जाई।" डाक्टर के मिसिरी नियर बोली सुनि के राम आधार के बाड़ा सकून भइल आ मन में डाक्टर के प्रति भगवान नीयर सरधा जागि गइल।

राम आधार के किनारे ले जाइके डाक्टर अपना कम्पाउडर संगे उनकर घाव चीरले। मरहम पट्टी कइके दनादन २-३ गो सुई घोंपले। एकरा बाद कुछ खाड़, कुछ बूकि के आ कुछ मेर जोर कइके मजगरे दवाई उनुका के हिदायत देत थमा दिहले। घाव चीरत में भयंकर दर्द भइल। राम आधार पसीना-पसीना हो गइले। लरिका रहिते त चिचियात एने ओने भगिते परइते, बाकिर एह उमर में लोग का कही, ईहे सोचि के कइसो बरदास्त कइ लिहले।

राम आधार के अब दुइयों चार डेग चले फिरे के सकान ना रहे। हारि दाव के दिक्शा पर बइठले आ घरे ओरि चलि दिहले। राही भर ईहे सोचत कि, अभी त इलाज के शुरुआत बा, गवें-गवें आराम मिली। देवकुर गइला, दूना दुख वाली हालि हो गइल। घाव ठीक काहाँ ले होई बढ़ते गइल। दवाई के कवनो असर ना भइल आ गोड़ फूलि के कुप्पा हो गइल। फुसरी के कहो, अपना से किरियो करम करे लायक राम आधार ना रहि गइले।

"राउर भारी देहि बा, हमरा से सम्भरात नइखे। अतना तकलीफ में बानी। बेटा पतोहि लोगन के काँहे नइखीं बोला लेत ? आखिर अइसने समय दिन खातिर नू आदमी संतान पैदा करेला।" राम आधार के सलाह देत उनकर मेहरारू परमेसरी कहली। "ठीके कहत बाडू। आजु सभके समाचार बताइबि।" अतना कहत रामआधार दवाई लेके तनी ओठगिं गइले। राति में सबके बारी-बारी आपन दुख आ कष्ट कतवले। एक हफ्ता के भीतरे सब पहुँचल आ अपना-अपना ढंग से, केहू बात से, केहू शरीर से आ केहू रूपया पइसा से उनकर मदद करे लागल।

"बाबूजी हो ! आजु हम जाइबि। छुट्टी पूरा हो गइल बे।" राम आधार से उनकर बड़ बेटा कहले। "ठीक बा जा, नोकरी के सवाल बा।" ऊ जबाव दीहले। जब परमेसरी आके बतवली कि अपना बड़की बहू से कहले, "हमार हालि देखते बाडू। कुछ दिन रहि जइतू त सहारा हो जाइत। तोहार अम्मा जी दिन राति हमरे में अझुराइल रहत बाड़ी। तनी जून पर दू गो रोटी मिलल करित।" "राउर सेवा टहल कइल हमनी के घरम आ पुनि के काम बा। बाकिर ओइजो चलाव नइखे। लरिकन के पढ़ाई अकाज होई। रउवा सब कवनो फिकिर जनि करीं, जल्दिये लवटबि जा।" राम आधार के बड़की बहू कहली आ विहाने सब तेयारी के साथ बाल बच्चन के साथ दुनो परानी चलि गइले। "दू तीन दिन बाद मझिलको परिवार लेके चलि गइले। छोटका जाना के के तहरा कुछु अन्दाज मिलत बा।" परमेसरी से राम आधार पूछले। "ना हमरा किहु मालूम नइखे। आजु इनिको से पूछि लीहल जाई कि का इनकर विचार बा ?" परमेसरी जबाब दीहली।

राम आधार के छोटका लरिका अपना बड़ भाइयन अस ना कहले। सेवा खातिर परिवार छोड़ि दिहले आ तनहा नोकरी पर चलि गइले। बुधिमान कम ना रहले, बाघ वन दूनो रखले। जात समय अपना महतारी से कहि गइले कि बावूजी ठीक हो जइहें त उनुका (अपना पत्नी) के नइहर भेंजि दीहऽ। कहिए से जाये-जाये कइले बाड़ी।

छोटकी बहू के रहला से परमेसरी के काम कुछ हलुक हो गइल आ आपन मये समय रोगी के सेवा टहल में लगावे लगली। घाव के हालि ई रहे कि दवाई से नीक काहाँ ले होई बढ़ते जात रहे। राम आधार एकदम असक्त आ लाचार हो गइले। एकदिन छोटकी बहू अउँजा के फोन पर अपना मरद से कहली, "अजबे हालि बा, राउर दूनो भइया चिकना के चलि गइल लो आ बहरा मउज करऽता। हमरा के मुआवे खातिर छोड़ि दिहलीं हाँ। कूल्हि जजादि आ सम्पति तनहा हमने के मिली का ? हमरो से तनहा सेवा टहल ना होई। हम काल्हु अपना नइहर जाइबि।" उनकर मरद बहुते समुझवले बाकिर ऊ टस से मस ना भइली आ दुसरके दिन फोन से अपना भाई के बोला के महतारी के बेमार के बहाना बना के नइहर चलि गइली।

राम आधार दूनो बेकति खूँख बाँड नीयर तनहा रहि गइले। जब अपना बेटा पतोहि के ई हालि बा त उनकर बेकति भइल जानकी पर कवन अधिकार बा ? बाकिर मन ना मानल आ लइकी के फोन कइले। जानकी विहाने दउरल अइली आ सेवा में जूटि गइली। मोबाइल के घंटी बजल। बड़का भइया के नम्बर देखि के जानकी उठवली। बहरा से ऊ पूछले- "बावूजी के का हालि बा ?" "घाव सूखत नइखे।" ई जबाव दीहली। "बुचिया कवनो चिन्ता मति करिहे, हमनी के बानी जा नू।" ओने से ऊ कहले। "चिन्ता फिकिर रहिए के का करी ? ओइजा से तहनी लो का कइ लेब ? जवन करे के बा, अब हम करबि। फोन राखऽ।" अतना कहत जानकी फोन काटि दिहली आ किछु सोचि के अपना बाप से कहली- "बाबूजी ! हमरा से अब ना देखि जाई। एगो बात कहत बानी, इन्कार मति करिहऽ। हम आपन घर परिवार छोड़ि के कहिया ले एइजा रहबि। दूनो जाना हमरा संगे चलऽ। बेटा बेटी में कवनो फरक नइखे। अपना बेंवत आ सकाव भरि हम उठाइ ना राखबि।" "लोगन के कहल सुनल देखबि कि आपन दीन दासा देखबि। हम तनहा सकत नइखीं। रउवा अपने से किरिया करम लायक नइखीं। आखिर जगहे पर सरबि ना नू। किछु मति सोचीं, जवन आगा आइल बा देखीं। बबुआ लोगन से मन भरि गइल। चुपचाप बेटी संगे

चलीं।" परमेसरी राम आधार से समुझावल कहलीं।

विहाने अपना बाबू माई के लेके जानकी घर में ताला मारि के ससुरा चलि गइली। ओइजा सब बाड़ा खुश भइल आ अपना बेंवत भर ऊ सेवा भाव करे लगली। कुछ मानसिक शांति, कुछ दवाई आ कुछ परिवार के प्रेमभाव से उनकर घाव धीरे-धीरे नीक होखे लागल। एक दिन परमेसरी अपना पति राम आधार से कहली - "जमाना केतना खराब आइल बा। आपन खून होके अफदरा में छोड़ि के मये बेटा भागि गइलन स। बेटी ना रहिति त का हालि होइत ?" "लरिकन में दोष नइखे। उन्हनी में हमने के खून बा। हमनी खातिर मोह माया बा, बाकिर पतोहियन से हमनी के खून के नाता नइखे। एह से उन्हनी के भीतर हमनी खातिर कवनो माया मोह नइखे। खाली स्वारथ बा। कवनो ना कवनो बहाना लेके फरका रहल चाहत बाड़ी स आ लरिका मदारी अस उन्हनी के बात मानत नाचत बाड़े स।" समुझावत राम आधार कहले।

राम आधार अब गवें गवें चले फिरे लगले घाव सूखि चलल रहे। एक दिन अपना मेहरारू परमेसरी से कहले - "दुनिया समाज के अइसन गलत सोच बा कि बेटा बेटी के दूइ आँखि से देखत बा। हमहू बेटन के आगे बेटी में भेद कइलीं आ कम जनली मनलीं। बेटी कवनो माने में बेटा से कम नइखीं। हम किछु कइल चाहत बानी कि मन के बोझा आ पाप हलुक होखे। बाधा मति डालिहऽ। हमार विचार बा कि आधा संपति जानकी के लीखि दीं। अहसहूँ कानूनन ऊ चवन्नी के हकदा बिया। बाकिर अतना कइला खातिर हम आधा देइबि। अधवा में ऊ बबुआ लोग लेत रही।" "राउर विचार बाड़ा नीक बा, आ हम बहुते खुश बानी। हमरो ईहे मन बा।" परमेसरी जबाबा दिहली आ उनका आँखि से लोर गिरे लागल। पता ना ऊ लोर खुशी क रहे कि दुख के; कि मन का भीतर दबाइल हूक के शांत भइला के।

●●●

लघुकथा

मजबूरी

❑ अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

हई ना देखऽ बुढ़िया के,बेटा के मरते सॉढ़ हो गइल।

हँ जी सहिये बात बा,जबले बेटा जीअत रहल तबले त सॉसे परान ना रहे इनका में। लागत रहे कि अब मरिहें तब मरिहें। बेटा के मरते फरहर हो गइली। ओह घरी त एगो खरो ना टकसावत रहली। बेटा पतोह जे लायक मिल गइल रहे।

खर कइसे टकसवती। बेइज्जती ना हो जाइत इनकर। ऊ त सरवन बेटा रहे कि प्राइवेटे काम धंधा कइके सही,घर के बढ़ियॉ से चलावत रहे। बूढ़ी अपना पेंसन के एको पइसा थोरे देत होइहें।

भगवान कबो कबो बड़ा अनेत करेलन। पता ना कइसे चली अब एह बेचारन के खरचा बरचा। फंड पिनसिन कुछऊ त ना मिली। सरकारी नोकरी रहीत त मेहरारू के नोकरियो मिल जाइत। इहवाँ त ओहू के सहारा नइखे।

टोल-महाल में मेहरारून के बीचे एह तरह के बात होत बूढ़ी अनचितले सुन लेत रहली। दुख त बहुते होखे बाकिर करस का। केसे-केसे सफाई देत चलस।

एकदिन घर के ओसारा में बइठल बूढ़ी अपना सखी लालमुनी से अपना मन के बात कहत रहली-जानऽ तानीं जी। हमरा बारे में लोग झूठ इचिकियो ना कहे। बेटा के रहते हम साँचो खटिया ना छोड़ीं। बेटा पतोह अतना लायक रहनल कि कुछ करहीं ना देस। बेटा के ना रहला पर हमार पिनसिनिये न सहारा बा। खटिया पर परल परल सोचत रहब त हमहूं हूके मरि जाइब। अइसना में बेअलम हो जइहें हमार पतोहि आ नाती नतकुर। इहे सोच के अपना पर खियाल राखे के परत बा कि हमार जिनिगी बॉचल रहो। बूढ़ी के बात ध्यान से लालमुनी सुनत रहली। जब बोलल बन्द भइल त एगो अजीब खामोसी पसर गइल उहवाँ । लालमुनी सोच ना पवली की का बोलीं,तबले बूढ़ी सॉस छोड़ के भरल गला से फेरू कहे के कोशिश कइली-बताईं कवन माई अइसन होई जे बेटा के मरले टूट ना जाई। बाकिर मजबूरी जे ना करा दे। मजबूरने नूँ कुल्हि नाटक करे के परत बा।

●●●

कहानी

माथ मुड़ाते ओला पड़ल

❑ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

काल्हु विश्वकर्मा पूजा के चलते प्रेस में बंदी रहे। अखबार ना आइल रहे। काल्हे के 'आज' आ 'प्रभात खबर' लेके अपना हाता में चउकी पर, गेट के दहिने कर के, बइठल, मूँड़ी गाड़ि के पढ़त रहीं। हमरा पीठ तरफ बढ़इन के काम करे खातिर करकट के सेड आ ठेहा रहे। सामने करकट डालि के बनावल सेड, जवना में तरह तरह के लकड़ी आ आधा पूरा बनल लकड़ी के फर्नीचर रहे। काल्ह के अखबार देखल आ ढेर पढ़लो रहन स। बाएँ तरफ तइयार होत घर रहे।

नित्य क्रिया से निपट, आसन कर चुकल रहीं। कवनो खास काम ना रहे। मउवत आ गँहकी के कवनो समय ना होला, सोच के बाहर ना गइल रहीं।

उल्टत-पल्टत 'प्रभात खबर' के मुख्य पृष्ट पर दाहिने, नीचे कोना में जाके आँख अँटक गइल। चित्र में करीब आठ बरिस के लइकी, एक तरफ लाल रीबन से चोटी वान्हल आ एक तरफ के केस उड़िआत, लाल-उजर फराक पहिरले, दहिना हाथ में लाल कचकड़ा के बाला पहिरले रहे। बरत ललटेन उठवले आँख फारि फारि के देखत रहे। हमरा बुझाइल कि ई बिहार के चुनाव में शासक दल के कवनो प्रचार होई, बाकिर चित्र के नीचे छपल "भाई को तलासती आँखें" पढ़नी तब आपन पहिला विचार गलत बुझाइल। चित्र के साथ छपल समाचार के ऊपर लाल आ मोट अक्षर में छपल समाचार के मथेला पर आपन नजर ले गइनी त "दूध की साँच पर भारी पड़ी भूख की आँच" पढ़ि के सत्य जाने खातिर समाचार पढ़े लगनी। साँच कहत बानी कि काल्ह उड़ते नजर से चित्र देख के, बिहार के शासक दल के विज्ञापन समुझ के नजरअंदाज कर देले रहीं।

न्यूज स्टोरी में रहे कि धिरनी आ ओकरा पति के नगरपालिका के सफाई कर्मचारी के पद से हटा दिहल गइल रहे। पति, जे टी०बी० से ग्रसित भइला के चलते, जब तब रिक्सा चलाबत रहे। परिवार में पति-पत्नी के अलावे तीन गो लइको-लइकी रही स। धिरनी के अछूत समुझ के केहू कवनो काम ना करावत रहे। रिक्सा के कमाई से कबो-कबो रोटी-पानी मिल जात रहे। भूखे रहे से बचे खातिर पूरा परिवार भिखमँगी करत रहे। पति-पत्नी के भीखो ना मिलत रहे बाकिर लइकन के चलते पेट में दाना-पानी चल जात रहे। भोजन के लेके घर में बराबर कलह होत रहत रहे। पति-पत्नी एक-मत रहे मात्र एके बात पर, कि कमाऊ पर्था रहे तब भंगी समाज के घर भरल रहत रहे। मुर्गा-दारु, कपड़ा-लता, अन्न-पानी घर के कवनो कमी ना रहे आ लोग खुसहाल रहे। हल्का-भारी गहनो के कमी ना रहत रहे।

धिरनी आ ओकरा पति के समझ में ना आबत रहे कि पढ़ल-लिखल हमनी के पूर्व इतिहास से परिचित लोग हमनी से छुवाए काहे ना ? लोग जानत बा कि हमनिए के इहाँ के राजा रहीं जा। बाहर से लुटेरा गिरोह आके हमनीं पर हमला कर देले रहे। हमनी के बसुधैव कुटुम्बकम् आ विश्व बंधुत्व के बात करे वाला सोगहग अहिंसक रहीं जा। लुटेरा मारे-काटे में निपुन रहन स आ ओहनी के पास तेज-हथियारो रहन स। हमनी के लाचारी में लड़ल रहीं जा, बाकिर मरा-कटा के हार गइल रहीं जा। कुछ आदमी भाग के, जंगल में छिप के कंद-मूल खाके आपन जान बचवले रहे। जे धरा-पकड़ा गइल रहे ओकरा से गंदा-गंदा काम करवावत रहन स। खाए खातिर छोड़न-छाड़न देत रहन स। ऊ अपना के ऊँच आ हमनी के नीच समुझत रहन स। ओहनी के भासा हमनी से भिन्न रहे। हमनी से दूरे दूर रहत रहन स। ओहनी के भासा हमनी का बोल ना सकत रहीं जा आ ऊ हमनी के भासा बोलल ना चाहत रहन स।

धिरनी काम के भा माँगे चूँगे का फेर में घर से चलल रहे। सड़के पर खड़ा दू-चार आदमी आपस में बात करत रहलन। धिरनी हाथ पसरले, काँखी तर साल भर के लइका के दबले-सटले ओह लोगिन के नजदीक गइल। दहिना हथवा के कबो पसारे, कबो लइका के मुँह तक ले जाय। लोग समझियों के ना समझल, धिरनी के नजदीक आवत देख के, ओकरा के नजर अंदाज करत अलग हट गइल आ बतिआवे में लागल रह गइल। ... .. कवनो खास-भारी बात होई। रहम कर के कुछ दी लोग। ..... सोचत आसा में रहल। कबो इहो सोचे.. .. देबे के बा हाथ से, बोले के बा मुँह से, सुने के बा कान से ..... लोग चाहित तब दे देले रहित, बाकिर हटल ना। धिधिआत रहल।

"जा ना ! का कपार पर चढ़ल आवत बाड़ू ?

'हतना दिन चढ़ल, अवहीं चाहो के दर्सन नइखे भइल।' सड़के पर, होटल के सामने खड़ा बानी जा कि कवनो मुर्गा आवे तऽ ओकरा के हलाल करीं जा। कुछ मिलल होखे तब, तूहीं दे द कि खरहमेंटाव कइल जाय।"

एके ना करीब करीब सभनी के चेहरा पर इहे भाव रहे। बढ़ल-सटल तऽ मुड़ते कान में पड़ल, "कवन पेपर हऽ ?"

"काहे ?"

"उड़ीसा में कवनो मतारिए अपना पाँच साल के लइका के बेंच देले बिया।"

"काहें ?"

"अपना आ अपना परिवार के भुखमरी से बचावे खातिर।"

"ओहिजे, जहँवा रहत रहे ?"

"ना ! कतहूँ दूर जाके।"

घिरनी उठल कदम के पीछे खिंच के, काँट निकाले के बहाना से बइठ के ओहनी के बात सुनत रहे। ओकरा अंदर भूचाल आ गइल, विस्फोट पर विस्फोट होखे लागल। तरवा झार-पोंछ के उठल, बाकिर जवन काँट ओकरा दिल-दिमाग में धँसल रहे ऊ परपरात रहे।

घर से निकले के पहिलहूँ घर-परिवार में भोजन खातिर हाय-तौबा मचल रहे, बाद-बिवाद भइल रहे। "हमरा चलल-बोलल नइखे जात। हम कतहूँ भीख माँगे ना जाइब।" कहला खातिर अपना लइकिया के पीटियों देले रहे।

कान में आवाज पड़ल। कवनो ट्रेन आके स्टेसन पर रूकत रहे। गिरे से बाँचत-लपकत ट्रेन के पास गइल। प्लेट-फार्म पर एह डब्बा से ओह डब्बा तक घुमत रहल बाकिर केहू कुछ बाँचलो-खुचल ना फेकल। गोड़ से चलत, मुँह से बोलिके, हाथ से इसारा करि के माँगत रहे तबो भीतरे के ज्वार-भाटा ओसहीं उठत-गिरत रहे। कवनो सागर के लहर पर लहर आ आके, किनारा पर माथ पीट-पीट के चिल्लात-दहाड़त रही स। ..... परिवार के भुखमरी से बचावे खातिर कवनो मतारिए अपना लइका के बेंच देलसि। ..... डिब्बा के भीतर कुछ लोग नास्ता करत रहन। ..... बचला पर कुछ मिल सकेला..... सोचत डिब्बा के अंदर चल गइल। भीतर एने से ओने आवत जात रहे, बाकिर भीतर के बवंडर चुपचाप सांत होके बइठल ना रहे। ..... मतरिया गलत कइलसि। .... तऽ कबो सोचे, ... बेंच के अपना आऽपपना परिवार के मरे से बचा के नीक काम कइलसि।

"लइको बिका सकेला ?" ओकरा भीतर से केहू पूछल तब जबाब केहू भीतरहीं से दिहल, " बिकाइल तबे नू बेचलसि। जिंदगी रही तब लइके ना होई सोचले होई।"

"दूर काहे गइल ?"

"नजदीक पास के केहू पुलिस-प्रसासन भा लोक-लाज से ना खरीदले होई।" इहे सवाल जबाब ओकरा भीतर बदराह आकास में छुपत-निकलत चान अस झांकत-तुकात रहे।

"काहे भीख माँगत बाड़ू ?"

देखे तब पूछेवाला अधेड़ उमिर के धनी-मानी आदमी ओकरा लइकवा के तरफ ललचाइल नजर से ताकत रहे।

"पेट के जरले अउर काहे ?"

"मर्द नइखन ?"

"दोसरा के लइका लेले बानी ?"

"कुछ करस ना ?"

"टीबीआह देखि के नगरपालिका छँटनी करि देलसि। जब तब रिक्सा चलावेलन।"

"आ तूं ?"

"अछूत, भंगी, जान के लोग काम ना देला। देखते बानी। भोरे से निकसल बानी जब तक कुछुओ नइखे मिलल। दुनिया बड़ी अपस्वार्थी हो गइल बिआ। लइकन के भीखमँगी करत देखि के छाती फाटे लागेले। पत्थर बन के जीअल कवनो जीअल हऽ ?"

"हम काम देबि तब करबू ?"

"कहवाँ ? का करे पड़ी ?"

"घर-गाँव तऽ हमरो सबहीं बा बाकिर तहरा के इहँवा ना राखबि। दोसरा जिला में काम करीला। उहाँ परिवारो रहेला। दूइए प्रानी बानी जा। ठहर-चौका, वर्तन-बासब, कपड़ा-लत्ता करे के पड़ी।"

"देखत नइखीं ? गोद में लइका नबोज बा। एकरे चलते केहू कुछ करे के कहेला तब पार ना लागे।"

"गाड़ी रूक गइल।"

"ऊ अदिमिया कहलसि, जंकसन ह। गाड़ी देर तक रूकी। चलऽ ! नीचे से खरीद के तहरा के कुछ खिआ-पिआ दीं।"

घिरनी एगो अनजान तागा में बन्हाइल ओकरा पाछा पाछा उतर के प्लेटफार्म पर आइल। काहे दो ओह अदिमिया के बतिया ओकरा नीक लागत रहे आसा के

ज्योति ओकरा भीतर जगमगावत रहे।

"जानत बाडू कि आज के अखबार में छपल बा कि एगो मतारी अपना आ अपना परिवार के बचावे खातिर अपना पाँच साल के लइका के बेंच देलसि हा। तहरा क गो लइका-लइकी बा ? अस मन जनिह कि ई मरि-ओरा गइल। अउर लइका-लइकिन के अपना आ अपना पति के बचाव।"

ऊ अदिमिया कहलसि तब सड़क छाप अदिमियन के बतिया फिर समने आके सोगहग खाड़ हो गइल। ". ... कइसन हत्यारिन मतारी रहे कि लइकिन के बेच देलसि ?" "तऽ का करित ? सब के मरे से तऽ बचा लेलसि। जहँवा सब जात होखे, उहँवा तनिकी सा के तजला के, के गलत कही ?" भीतर सवाल-जबाव तर-ऊपर होत रहे, बाकिर "तीन गो" कहत ओकरा देर ना लागल।

"क गो लइका ?"

"एगो त देखते बानी। एगो एकरा से बड़ बा।"

"आ लइकिया ?"

"बड़को से बड़ि हऽ।"

"एगो बात कहीं ? हमरा धन-दौलत के कमी नइखे। कमी बा तऽ एगो संतान के। चाहऽ त हम तहरा एह लइका के खरीद सकीला।"

घिरनी सोच के चकोह में परि गइल। तर-ऊपर होखे लागल। का जबाब देवे, सोच ना पावत रहे। कबो लइका के मुँह देखे तऽ कबो अपना परिवार के पातर दिन इआद करे।

गाड़ी सीटी देलसि।

ऊ अदिमिया कहलसि, "अब गाड़ी खुली। हम चढ़ब। लइकवा के हमरा के दे देबे के होखे तब गाड़ी पर चढ़ि चलऽ। ना त इहँवे से लौटि जा।"

"का देबऽ ?"

"तू जे कहबू ?"

नौकरी से छँटनी के समय बकाया वेतन बगैरह ना मिलल रहे। धरना-घेराव के बादो करीब पचीस हजार बाकी रहे। पचीस हजार के चर्चा कइ एक बार चलल रहे। उहे ओकरा इआद आइल आ अपना जाने ढेर समुझि के, कुछ छोड़े के जकह रखि के, ऊ कहलसि, "पचीस हजार।"

गाड़ी सरके लागल रहे। ओह अदिमिया के गइल जरूरी रहे, आ गाड़ी के भीतर सब सामान रहे। "ठीक बा, चलऽ। मन में आई तब कुछ कम कर दीह ना त पूरे ले लीहऽ।"

"हमरो चले पड़ी ?"

"इहँवो रुपया तऽ बा बाकिर ओतना नइखे। इहँवे लइकवा के ले लेबि तब रोवे-काने लागी। लोग पूछी त का कहब ? इहँवा से हमार ले गइल ठीक ना होई।"

अदिमिया के गाड़ी तरफ बढत देखि के घिरनी पीछा लागि गइल कि रूक गइला पर तऽ लौटि के घरे जाए पड़ी, जहाँ मउबत सुरसा अस मुँह काड़ के लील जाए खातिर बइठल बिया। मउवत अजगर अइसन आइत आ एके कौर में लील जाइत तब तऽ कवनो बात ना रहे - बाकिर मरे के रहे खुर रगड़-रगड़ के, पानी से बाहर जरत रेत पर पड़ल मछरी अस तड़पि-तड़पि के, अंग अंग से सटल चुटियन से बचे खातिर छटपटात साँप अस। घिरनी सोचिए के सिहर-सिहर उठत रहे। रोज रोज के चख-चूख, मार-पीट, कीच-कीच, उठा-पटक आ अभाव से आजिज मन रोकलसि ना घिरनी के।

कइ दिन पर पहुँचल पेट में दाना-पानी के निसा में लइकवा गोदिए में सूत गइल। घिरनियों के आँखिन के पपनी पहाड़ भ गइल रहीस। निसा अस झोंकले आवत रहे। अदिमिया तऽ जाके अपना जगह पर बइठि रहल बाकिर घिरनी दरवाजा के पास तनि भीतर होके, झार-झूर कइला पर गर्दा उड़ी तब लोग खिसिया जाई, सोच के गते से पसरि गइलि। ऊ आँख मूँद के सोचे लागलि।..... "एक तरफ पचीस हजार रूपया लेके लइका दे देवे के बा आ एक तरफ पूरा परिवार के मउवत। परिवार बाँची त लइका फिर हो जइहें स। कवनो उमिर गइल बा।" गाड़ी से तेज ओकर दिमाग दउड़त रहे। "अदिमिया से जाके कहि दीं कि जात खा जगा देब।" तय कइलसि बाकिर आँख खोले के। उठे के आ जाए के मन ना कइलसि। नीन ओकरा के ओकरा के अपना भीतरे ले के आपन मुँह बंद कर लेलसि।

आवाज मिलल। आँख खोले तब उहे अदिमिया ओकरा के जगावत रहे; उतरे खातिर इसारा करत रहे।

स्टेशन से बहरी ओह अदिमिया के गाड़ी लागल रहे। ऊ गाड़ी में पाछा बइठावे के ड्राइवर के इसारा कर के, अगिला दरवाजा खोल के बइठ रहल। ड्राइबर पिछला दरवाजा खोल के घिरनी के बइठवलसि। ड्राइबर अपना सीट पर बइठ के गाड़ी स्टार्ट करत रहे तब ऊ अदिमिया ओकरा कान में फुसफुसाइल।

घिरनी गइल रहे कि पहुँचा के चल आइब

बाकिर कहला-सुनला पर कुछ दिन रूक गइल रहे।

जब लइकवा ओह अदिमिया आ ओकरा औरतियों से घुल-मिल गइल तब घिरनी चल आइल रहे- लइकवा के सुतले छोड़ के। घिरनी के मन स्वर्ग छोड़ के नरक में जाए के ना करत रहे।

घरे अइला पर बाप आपन बेटा आ बहिन-भाई आपन भाई खोज लगलन स। इहाँ काम ना मिलत रहे। बकाया कब मिली, कवनो तय ना रहे। भीखो माँगे में लाजे लागत रहे। भाग के बड़ सहर में चल गइल रहीं। बहुत बड़ अस्पताल रहे। ओही में काम करत रहीं सफाई मजदूर के। उहो काम बड़ी नाक रगड़ला पर मिलल रहे। रोज कामो ना मिलत रहे। एक चउथाई मजदूरी ठीकेदार के देवे के पड़त रहे। ठीके चलत रहे कि एक रात सुतले में बचवा के कुछ काट देलस, आ ऊ सूतल के सुतले रह गइल। बड़ी रोवनी-पीटनी, डाक्टर सब से दिखलवनी - जाँच करववनी बाकिर अंत में हार-दाव देके मन के धीर धरावहीं के पड़ल। ओकरा मौत के सच्चाई के झुठलावे के कवना उपाय ना रह गइल, ओकरा जीवन से निरास हो गइनी तब अस्पताल के पीछे में बहत बिसाल नदी में ओकरा के फेंके गइनी।

अन्हरिया रात। पनछोपा छाप-छूप सुनाइल। एक-दू आदमी भागत-फिरत लउकल। बूड़ा समझ के डर गइल रहीं कि ओही में से एगो बोलल, "के हऽ ?"

"ना तऽ का करब जा ? पूछे के साहस ना भइल आ मुँह में लुगा कोंच के गिरत-भहरात भागल चहनी तऽ.....।" फूट फूट के रोव लागल। बड़ी देर के बाद चुप्पाइल। मन तऽ डेरात रहे, छाती धक् धक् करत रहे बाकिर धइल चहिहें स तब भाग ना सकब, सोच के रूक गइनी।

ऊ हमरा पास आके कहलस, "हमनी के डोम हईं जा। नदी में बहत लास के छान के ले आके अस्पताल में बेंचीला जा। डाक्टर के पढ़ाई में ओकर जरुरत पड़ेला। हमनियो के जीए-खाए भर अस्पताल दे देले।"

हमरा पास ऊ आठ-दस गो बटोरा गइल रहन स। हमरा कुछ जर-सोर, आग-पाछ ना सूझत रहे। जल्दी से जल्दी उहाँ से भाग जाइल चाहत रहीं। कुछ पूछे के साहस ना होत रहे। रोवाइल-पराइल मन भइल रहे। लहरन के आवाज के सिवा उहाँ पर दोसर कवनो आवाज ना रहे।

"हमनी का चोर-डाकू ना हईं जा। हराम के कमाई पर थूकबो ना करीं जा। हई लऽ। धरऽ.....। कामें आई।" "कहत एक गोड़ा कुर्त्ता के जेब में से निकाल के कुछ रूपया बढ़वलस तब आगे आवे वाली परेसानी के रोके के के कहाँ तउलहूं में अपना हाथ के कमजोर पाके-लाचार समझ के, हाथ बढ़ा के रूपया ले लेनी। घूम के भगनी तब फिर पाछा मुँहें देखहूं खातिर ना देखनी।"

सब बात-कहानी ओह अदिमिया, जे लइकवा खरीदले रहे, के सिखावल-रटावल रहे। अदिमिया के बतवलो नीमन स्वांग कइलस। फिर फूट-फूट के रोवे लागल। जे कुछ होखे मतारी के ममता भूख के आँच से जर गइल रहे।

घनघोर अन्हरिया-उदासी हहास बाँह के चुप्पी के साथे साथ घर में घुस गइल। कुछ बोलत ना रहे। कहे-सुने खातिर उचित सबदो ना लउकत रहन स। सभन के आँख भूफोंड-आर्टिजन बेल हो गइल रहे। लोर आँखियन से निकल के गाल पर ससरत रहे।

भोर भइल। घिरनी के अपना साथ के गठरी के इआद आइल। ओकरा के लेके चटाई पर बइठल अपना मर्द के पास गइल। गठरी खोल के कपड़ा-लत्ता आ खाए के सामान निकाले-देखावे लागल। ओकरा के छोड़ सभे खाए में लागल रहे। ललचा-ललचा के पहिरावा देखत रहे। "पानी ले आवत बानी।" कह के घिरनी उहाँ से हट गइल। अपना मर्द आ लइका-लइकी से नजर मिलावे से बचे खातिर।

करीब एक महीना पहिले तगादा से लौटत काना मुंसी के केहू गायब कर देले रहे। मुंसी जी कपड़ा-दूकान पर मुंसीगिरी करत रहन आ एके आँख के रहन। तगादा से आवत बस से उतरत लउकल रहन। घर जात खा नहर के पूलो पर लोग से बात कइले रहन। पूल के बाद जहाँ सड़क पछिम मुँहे हो जात रहे भट्टी रहे। भट्टी में जाते-आवत मुंसी जी लउकल रहन। भट्टी के बाद सड़क सोन तक जाके दखिन मुँहे मुँड़ जात रहे। उहाँ पर सड़क के वाएँ तरफ भंगी-टोला आ रंडी पाड़ा रहे। भट्टी के बाद से उन्हुँकर पता ना रहे। सोन दरियाव बन गइल रहे। दूनो कूल लबालब पानी से भरल जात रहे। सड़क दखिन मुँहे होके नदी के किनारे किनारे जात रहे। बरसात के समय रहे।

तगादा में मिलल रूपया मुंसी जी के पास रहे, एह से उन्हुँका हत्यो के चर्चा चलत रहे बाकिर इहो कहे वाला लोग रहे कि ऊ निसा के ओंक में मुँड़ल ना होइहें

आ नदी में जाके बह गइल होइहें। भरल सोन हाथी के दहवा देले, ऊ त आदमिए रहन। जे होखे बाकिर से आ उन्हुँका परिवार के लोग थाना में रिर्पोट लिखवा देले रहे। पुलिस-प्रसासन आकास-पाताल एक कर के, नदी नाला तक छान मरले रहे। आस-पास चारो तरफ गर्दा उड़ा देले रहे बाकिर हाथे कुछ ना आवत देख, हाथ-गोड़ समेट लेले रहे।

घिरनी के पहिरावा, खाइल-पिअल आ अपना मर्द के दवा-दारू करावल लोगिन के आँख में गड़े लागल। बात बिना पाँख के उड़त, बिना बैट्री, बिना गोड़ के दउड़े लागल। आ उधियात सूखल पत्तई अस उड़ के जाके थाना में गिर गइल। थानेदार के कान तक गइल। थानेदार के कान खड़ा हो गइल। लोग बिना थूक-धूर आ पानी के जोर बरत थानेदार के कुछ करे खातिर उकसावे लागल।

लोगिन के बात जब थानेदार के अरई अस गड़े लागल, बिजली के झटका अस लागल तब टेबुल पर से रूल उठा के बढ़त, पाछा पाछा आवे के सिपाही के इसारा करत घड़ धड़ात रेल से उतरल ईंजन अस जाके घिरनी के घर में घुस गइले। लइका डर के घिरनी, जे दारोगा के देखते हड़बड़ा के खड़ा हो गइल रहे, के चूँटा-माँटा अस घर के रोवे लगले स। घिरनी के मर्द सोझ से चट्टाई पर खड़ा होके हाथो ना जोड़ सकल रहन कि बिना मोल-भाव कइले दारोगा के रूल उन्हुँकर पूजा करे लागल। सिपाही सभ बर्तन, गठरी-मोटरी, वर-बिछावन, हँड़िया-पतुकी उलाट-पलाट, खोल-खाल के छिंट-छाँट देलस। फोर-फार देलस। खर्चा से बाँचल रूपया के गड्डी दारोगा के जेब में पहुँच गइल। सिपाही घिरनी के दूनो हाथ पीठ पर पहुँचा के, अपना गमछा से बाँध देलस। लइकन के ढील-अँठई अस नोंच-नोंच के फेक देलस। घिरनी के धसोरत-घिसियात कसाई के बकरा-बकरी अस थाना पर ले आइल।

दारोगा के सुखले बरारी मिल गइल रहे। उन्हुँका खुसी के थाह ना रहे। सोचत रहन कि अब त रात में सब बात बकवाइए लेब। घिरनी के हाजत में डाल के, हाजत बंद करवा के, थाना मुंसी के हवाले कर के, सिपाही के नजर राखे के ताकिद करत दारोगा होत साँझ जीप पर बइठ के गस्ती में चल देले। रात में जागे पड़ी, सोचत, दारोगा, जाके सड़क के बगल में बसल गाँव में सूत रहले।

"साँझ होते भादो-भदवारी के कुच कुच अन्हरिया चारो तरफ फैल गइल। घिरनी के आँखिन में नीन ना रहे। ..... पति-लइका कवना हाल में होइहें ? अब हमार का होई ?" सोच सोच के सूखल नदी अस अंतर्सलिला हो गइल रहे। खइले त दुपहिरया के पहिले रहे बाकिर भूख भाग गइल रहे। थाना में सिपाही के छोड़ के दोसर केहू ना रहे। टाँगल लालटेन अपनो मुँह ना देख पावत रहे। सिपाही खइनी ठोके, थूके आ खाँखारे जब बुझाय कि ऊ अपना काम से उकता के लाचार बइठल मच्छरन से देह नोचवा रहल बा।

मच्छरन के नाच-गान से, घिरनी के मन अंसा गइल रहे।... "इहाँ रहला के मतलब बा मूँज अस देह थुरवा के जीवन भर खातिर दर्द बेसाहल। भागे के कवनो उपाय करे के चाहीं। भगला पर धराहूँ के खतरा बा बाकिर बँचहूँ के आसरा बा।"..... ऊ भागे के उपाय सोचत रहे बाकिर कवनो निर्णय ना कर पाव रहे। जवने राह के घर के बढ़े उहे राह आगे जाके गंड-मंड हो जाय। बाहर अन्हरिया में भगजोगनी के बारात भूक-भाक करत रहे। ओसहीं ओकरा भीतरो धूप-छाँह के चितकबरी चादर बिछल रहे।

"साहब !" घिरनी अपनाबोली के मीठ से मीठ बना के बोलल।

"साहब नइखीं।"

"रउआ बानी नूँ ?"

"का चाहीं ?"

"अब का होई ?"

"उहे जे तहरा अस लोग के होला। अपने बोवल काटे के मिलेला। आज जे सोचत बाड़ू ऊ नतिया तहरा पहिले नू सोचे के चाहत रहे। अग्र सोची सदा सुखी; ना जानत रहूँ। बूझत रहू कि केहू जनबे ना करी। तू भुला काहे गइल रहू कि कानून के बाह लम्बा होला।"

"चभिया साहब लेले गइल बानी का ?"

"बा। थाना में टाँगल बा। का बात बा ?"

"देहिया में बड़ी थर थरी हो गइल बा। पेटवो भारी भारी लागत बा।"

"तऽ हम का करीं ?"

"खोल के आईं तनी हमरा पर बइठ रहीं भा मोट-भारी कमरा ले आके ओढ़ा दीं ना तऽ हम मर जाइब।"

".....।" सिपाही के पैर डगमगाए लागल।

"बडी पून होई सिपाही जी। हम। जिंदगी भर राउर एहसान ना भुलाइब।"

"हाजत में कैदी के मरला पर जवन फजिहत थाना-पुलिस के होला ओह से बाखबर सिपाही के पसीना छूट गइल।"

"थाना में कमरा-तोसक तहार बाप रखले बाड़न ?"

"डेरा में बा नूं ?"

"डेरा में ले जाईं आ ई इहँवे मर जाय तब ?" ..... अपना से अपनहीं पूछत सिपाही कहले, "हमनी के बैरक में डेरा-डंडा रहेला। उहाँ रात में हाजती औरत के ले गइल जुर्म होई। उहँवा से लेइयो हाजत में ना दे सकीं।"

"अब रोकात नइखे। इहँवे-गंदा कर दीं ? पानी देब नू ?"

हाजत से बहरी निकाल के मन कइलस बाकिर झाड़ी-झुरमूठ के तरफ ले जाए खातिर मन गवाही ना देलस। थाना के हतवे में जिला परिषद के डाक बंगला रहे। ओकर एगो चाभियो थाने में रहत रहे। सिपाही धिरनी के हाजत से निकाल के डाग बंगला में ले गइले। बाथ रूम के झिटकिनी खोल के, धिरनी के भीतर कर के, दरवाजा ओठंघा के, पलंग पर पसर गइले। "पाइप में पानी रहेला। बाद में पूरा पानी बहवा दिहे।" कड़ेर आवाज में सिपाही कहले। हाजती के डाक बंगला में ले आइल कवनो नया बात ना रहे। सफाई-खर्च बचावे खातिर आ सफाई से पहिले के दुर्गंध से बचे खातिर अइसन कइल जात रहे।

धिरनी भीतर जाके चारो तरफ देखलसि। जेने से घुसल रहे ओकरा सामने वाली दीवारो में दरवाजा रहे। टोंटी खोललसि तऽ झर झरा के पानी बहे लागल। बाहरी दरवाजा के पल्ला बंद ना ओठंघावल रहन स। केहु सफाईकर्मी खातिर छोड़ के चल गइल रहे। खोल के देखलसि तब बाहरो से बंद ना रहे। ओकरा भीतर से आवाज भइल, "अब का सोचत बाड़ीस जल्दी कर। देरी कइल घातक होई। तोरा भागे खातिर खुला रह गइल बा।" होखे वाली कवनो आवाज के संभावनो को मुँह पर जाब लगावत दबे पाँव, धिरनी बाहर निकल के अन्हरिया के मोट-भइल चदर अपना चारो तरफ लपेट के चल देलसि।

थाना के हाता चारो तरफ से खुाले रहे। दीवार-फाटक ना रहे। धिरनी हाता से बाहर आके, बिना देर कइले, अपना घर के बिपरीत दिसा में कुछ दूर तक सड़क पर चल के गली में घुस के डेगर गरे चले लगालि।

थानेदार के जीप आइल। पूरा थाना भक से अँजोर हो गइल। जीप के गेट में घुसत देख के सिपाही जाके बाथरूम के दरवाजा पीटें लगले। थानेदार उतरत-उतरत खुलल हाजत देखले आ कान में पड़ल डाक बंगला में के "ठक !" "ठक !" के आवाज। फिर का रहे ? दउड़त डाक बंगला में गइले। सिपाही से हकीकत जान-सुन के पहिले तऽ माथा पीट लेले बाकिर देर ना कइले, दरवाजा खोलते। बाहरी दरवाजा के खुलल आ धिरनी के लापता देख के, आके, जीप पर बइठ रहले। लौट के जात ड्राइबर आइल आ उछल के जीप में पीछे गइठ रहल। थानेदार चालक बन के जीप चालू कर देले।

थानेदार थाना से बहरी आके जेने-तेने झाँके लगले। धिरनी के घरो पर गइले। परेसानी के सिवा दोसर कुछ हाथे ना लागत देख के, आके थाना में बइठत ड्राइबर से कहले, "तूं जा, बाकिर मुंसी जी के भेजिहऽ।"

थानेदार मुँड़ी गाड़ के, आँख मूँद के कुछ सोचे में लागल रहन। मुंसी के पैरन के आवाजा टेबुल के बगल में खाढ़ सिपाही के पास आके बंद हो गइल। दारोगा जानल चहलन, "कहँवा रहलऽ ?"

"डेरा में।"

"थाना केकरा पर छोड़ के गइल रहलऽ ?"

"हमरा पर।"

"कैदी का भइल ?" दारोगा हाजत के खुलल फाटक देखत रहन।

मुंसी के अक-बक बन्द हो गइल। कंठ झुरा के काँट हो गइल। थर-थर काँपे लगले। कसहूँ हिम्मत जुटा के सिपाही से पूछले, "तूं रहलऽ नू ? का भइल हा ?"

"भाग गइलि।"

"कइसे ?"

"तब सिपाही जी का होई ?" दारोगा के सवाल अनुतरित रह गइल। बाकिर हवा में पँवरत रहे। दूनो लोग बइठ के, दारोगा के एक एक पैर ध के रावे-कलपे लागल।

"डायरी भर देले बाड़ऽ ?"

थानेदार पूछले तब मुंसी पूछले, "अइसन कबो भइल बा ? रउवा लिखवाइला तब नू लिखाला।"

"लिखाइल नइखे नूं ?"

"ना।"

दारोगा काइंयाँ रहे। केहू के मजबूरी से फायदा उठावे के खूब हाल जानत रहे। दूनो जाना से मोल-भाव करे लागल।

"हम तहरा लोग के बचा सकत बानी।"

नदी के धारा में बहत बचे खातिर हाथ-गोड़ मारत आदमी के पाँव से जमीन छूवा गइल। लोगिन के जान में जान पड़ल। दूनो जाना पैर छोड़ के खड़ा हो गइले। केहू कुछ बोलल ना। सवालिया निगाह से ताकत रहन जा।

"तू लोग जब्त रूपया में से हिस्सा ना लेब। घिरनी के धरइला, बंद भइला तथा भागला के चर्चो ना चलइबऽ।"

दूनों जाना सुन के भीतरे-भीतर जल-भून के खाक हो गइले। दारोगा के पंजा में फँसल-दबाइल अपना गर्दन के दर्द के दबाव के महसूस करत कहले जा, "ठीक बा, हिस्सा ना चाहीं। चर्चो ना करब।" लोभ साधु-सन्यासी तक के ना छोड़े; ऊ लोग त साधारन अदमिए रहे। लोभ त्यागल ना जात रहे बाकिर "नोकरी रही त अइसन ढेर मौका आई" सोच के लोग बोले में देर ना कइले रहे।

थानेदार खइनी झोरी से निकाल के टेबुल पर धर देले। लोग अगल-बगल बेंच-कुर्सी पर बइठ रहल। खइनी मलाए-पीटाए लागल। हँस-हँस के अइसन बात होखे लागल कि तनिको आभासो ना होत रहे जे अबहीं थोरिके देर पहिले इहँवा कवनो गंभीर भा साधारनो बात होत रहे। दैत्याकार मनहूसियत के फैलल छाया के रंग-बू तक ना रह गइल रहे।

"सोंच ल जा। हमार कवनो दबाब नइखे। ई ना कि बाद में झंझट करे लागऽ जा।" दरोगा अउर साफ कइल चहले।

"ना जी ! एह में सोचे के का बा ? इहाँ रउवे नू हमनी के बाप-मतारी बानी। रउवा हमनी के बुराई कबो सोचब, हमनी के विश्वास नइखे।" मुंसी के आवाज के ऊपर चापलूसी के चासनी मलाईदार परत अस रहे। सिपाही खइनी पीटत-रगड़त रहन। कुछ बोलले त ना बाकिर नजरे नजर से आ मूँड़ी से समर्थन कइले।

घिरनी बढ़ल चलल जात रहे। ऊ ना जानत रहे कि कहँवाँ जा रहल बानी। रोवे के मन करत रहे, बाकिर मन के भीतरे से केहू समझावत रहे कि रोवाई के आवाज अनर्थो पैदा कर सकेले। ई खेयाल ओकरा के रोवहूँ ना देत रहे। आँचर जे काँट-कूस, झाड़ी-झुरमुट से बचावे खातिर फेंटा बान्ह के कस लेले रहे ओकरा के खोललसि। आँचर से ससरत लोर के पोंछलसि।

पाँव रूक गइले स। उठल-बढ़ल पैर के पीछे खींच के, घिरनी खाड़ हो गइल। जंगल साँय-साँय, भांय-भांय करत रहे। अन्हरिया में कबो कबो लागे कि केहू बतिया रहल बा।

●●●

इयाद में : चन्द्रदेव सिंह

''गज़ल''

हमरो से पड़ी कबो पाला, जरूरत पर
गड़हो समुन्दर हो जाला जरूरत पर।

के जाने कब कहवाँ, केकरा पर, का बीती?
गदहो के बाप कहल जाला जरूरत पर।

साँप काटल रोगी के, जिनिगी बचावे के
जहरो में जहर दिहल जाला जरूरत पर।

कतल रामफल कइलँऽ, फाँसी सामफल के
बापो के नाँव बदल जाला जरूरत पर।

राजनीतिक चाल ह ई, सब नाहीं चोर होई
तनी मनी चलेला घोटाला, जरूरत पर।

रूपयो दिहला प खाद ना आइल, ना आइल
केतने क पूँजी डूबि जाला जरूरत पर।

एही तरे चोरवन के चरचा जो चलत रहल
संसद में लागि जाई ताला जरूरत पर।

(पाती, अंक-२२-२३ से)

''ईमान के खोज''

❑ भगवत प्रसाद 'देहाती'

का कहीं हाल कुछु कहाते नइखे,
अइसन ई रोग बा, रोकाते नइखे।
हैजा, प्लेग, चेचक सब दूर हो गइल,
एगो बड़का रोग सबमें भरपूर हो गइल,
जवनी से बेचैन बहुत हमहूँ बानी,
अइसन बुझाता,? जाई अखड़ेर जवानी।
डाक्टर किहाँ हम गइनी एही रोग की मारे,
डाक्टर हमार देह सजी लगले निहारे,
ना बुझाइल रोग, देखले आला लगाके।
छाती पीठ टोवले, सब वस्त्र हटाके।।
कहलें कि रउरा हो गइल बा बड़हन बिमारी
उपचार नाहीं करबि तऽ ई जान से मारी।
कहलीं कि कवन रोग ह, बा कवन दवाई ?
तनि ठीक से निदान कके हमके बुझाईं।
डाक्टर बतौले, आपमें इमान घटल बा,
बेइमानी जाके, पेट की अँतड़ी में सटल बा।
जाईं कहीं से ले आई ईमान खोजि के,
पीं जाईं कहीं भले मन की कड़ाही में घोंटिके।
हम कहनी, रोगवा के कारन बता दीं,
ठीक ठीक कहिके तनि खूब समुझा दीं।
कहले कि लोभे सवारथ प्रधान बा,
ए कारण से सगरो तूफान बा।
लोभे भगाइब त जाई बेइमानी;
आई इमान, त पल्टी जवानी।
संयम में देर लागी जल्दी छोड़ादीं,
अपना लगे होखे त तनिकि भर देदी।
डाक्टर साहेब कहले हमार मजबूरी बा,
रोगवो छोड़ावल राउर बहुत जरुरी बा।
केन्द्र से चलिं के जनपद ले थोरे थोरे आवेला,
ऊ त्तऽ अधिकरिये से आँटे नाही पावेला।
देखीं सवाचिं लेईं बीडिओ, से जाके,
तब हम उहँवाँ से उठनी अगुता के।
साहेब देखतही बइठवले बोलाके,
सुनले त धीरे से कहले समुझाके।
ऊ त अन्तोदय में सगरो बँटा गइल,
इन्द्रा आवास में प्रधानो लोग खा गइल।
बँचल त गाँव गाँव सड़क भराइल हऽ;
कामें की बदला अनाज में दिआइल हऽ;
तनिको ना बाँचि पावल साँचों बताइले,
काहे ना आप तनि थाना में जाइले।
साहेवे कि कहले हम थाना में गइनी;
बड़के दरोगा से बातचीत कइनी।
सुनते दरोगा जी उठले चिहाके;
कइसे ई बात रउरा कहनी हँ आके।
ई सब चीज अब थाने में रखाई;
रही त, रउरे जइसन लोग के दिआई।
थाना में बखरा वा नेता परधान के,
बाँची तऽ दिहल जाई चोरे बेइमान के।
जाईं जाईं थाना में तनिको ना पाइबि,
कहि के ऊँच-नीच बात बतियाइबि।
हाथ जोरि कहनी कि मति रिसिआईं,
कहँवा भेंटाई जगहिये ना बताई,
कहले कि थाना से ऊठीं अब भागीं,
जाके हो कसयाँ एस डीयम से माँगी।
धाके पहुँचनी एस डीयम दुआरे,
कुर्ता ले फाटि गइल धाका की मारे।
फुर्सत बुझाइल त उनसे बतौनी,
उनहूँ से कोरे जवाव हम पौनी।
दुनिया क सब नारि सातिये हो जइती,
गुण्डा बदमाशन से बाँचे जो पइती।
नेता पत्रकार लोग उधार होके नाची,
कइसे 'ईमान' अधिकारी के बाँची।
झूठे हरान रउरा एतना दूर भइनी हँ;
काहें ना चकबन्दी के दफ्तर में गइनी हँ;
वोह दिन त बीति गइल गइनी बिहाने,
कुर्सी पर जाके बइठनी सिरहाने।
सीओ से कहनी कि हई हई हाल बा,
ऊ कहले, रउरो बुद्धि के कमाल बा।
जहिये चक बन्दी में पोस्टिग हो जाला,
तहिये ईमान धरम ताख़ पर धराला।
केहू विधायक से जाके सवाँचीं;
पवला प पावर इमान कहाँ बाँचीं।
जवनी विधायक के जनता हराई,
बोहू विधायक के पिन्सिन दियाई।
सत्तरि पर्सेन्ट लोग भूते हो जाई,
भारत के सम्पत्ति सब भूत बनि के खाई।
झूठे हरान भइनी शहर बजार में;
नियरे भेंटाइल देहाती गँवार में।
मँगला कहले कि ई ना दियालाऽ;
लाखो रूपया पौला पर वेंचल ना जाला।
बेंचही के रहि त हई गति होइत
मेहर उधार, लइका भूखि-भूखि रोइत।।

●●●

कहानी

हमरो पता जान लऽ....

❑ डॉ० आशा रानी लाल

ए बचिया आज तू ना भेंटइतू तऽ ई पेट के बात तऽ पेटे में न रहि जाइत। एह दुनिया के एकर हवो ना लागित। अरे अब हमनी के उमिरियो तऽ ओराते नऽ जाता। अब तऽ ई गोड़ कबर में लटकिए गइल बा। कहिया आँख मुदा जाई इहे नइखे मालुम। हम तऽ भगवान जी से, माता माई से आ अपना पुरखा पुरनिया से रोजे बिनवत रहीलाँ कि अब हमके ऊ लोग बोला लेव। अब तऽ एह जिनगी के कुल कहनियों ओराइए गइल बा। का जाने कवन पुन कइले रहीं कि एह अन्तिम समइया में पहुँचत के तू भेंटा गइलू हऽ-ए-बिन्दू। अवरी सबसे तऽ भेंट होइयो जाला बाकि बहिन-बहिन बड़ा भागे संजोगे नऽ भेटाली।

ई गाड़ी जवन छपरा से बम्बई जाले ओह में रास्ता में दू दिन आ एक रात तऽ बितवहीं के परेला। ओतना दूर जब जाये के परेला तऽ मन काँप जाला। बाकी अबकी बेर त बुझइबे ना कइल कि ई दिन रात कइसे सरक गइल। एह गाड़ी में दू दिन के बदला चारो दिन चले के परित तबो हमनी के दुनु बहिन के भेंट खातिर कमें बुझाइत। हम तऽ अकेलेहीं बाबू लगें जात रहीं, काहे कि इहें छपरा से गाड़ी चलेले आ सीधे मुम्बई जाके उतार देले। इहाँ घरे से 'ई' आके हमके गाड़ी में बइठा देले रहन आ उहाँ हमार बड़का बाबू आके उतारिए लिहन। बइठे सुते खातिर पूरा एगो सीट के रिजर्वेशन हो गइल रहे। खाये-पीए खतिर भर डब्बा पूरी-तरकारी-पानी आ फल 'ऊ' रखिए देले रहन, तऽ हम निःचिन्ते अपना सीट पर बइठल चलल जात रहीं, कि मऊ में एगो भरल-पूरल परिवार ओही डिब्बा में चढ़ल, आ ऊ चारो पाँचों जना हमरा सामने के सीटिए पर आके बइठल लोग। एह पाँच जना में एगो मरद-मेहरारू, दूगो लड़िका आ एगो बूढ़ रही। हमरा सोझा वाली सीट एगो बूढ़ मेहरारू के रहे। हमरा के अधबूढ़ आ अकेल देख के ऊ बूढ़ा हमरे सीटिया पर आके बइठ गइली। जब सब लोग अपन सामान सहेज के अस्थिरा गइल तऽ हमनी के दूनु जानी आपुसे में एक दूसरा के ससुरा नइहर पुछे आ बतियावे लगनी जा। पता चलल कि उनकर नइहर तऽ इलाहाबाद के लगे बा, बाकी जब जनलीं कि हमार नइहर गाजीपुर जिला हऽ तऽ लगलीं तिखार तिखार के पुछे। हम कुल बतवलीं कि करिमुद्दिनपुर स्टेशन उतर के अन्मउर गाँव जाइल जाला, उहें हमार नइहर हऽ। एतना सुनते एह बुढ़ापा में उनकर अँखिया चमक गइल, ऊ हमके पकड़ के कहली कि ओही गाँवे हमार ननियाउर हऽ हो। तू केकरा घर के बाडू। हमरा बतवला पर तऽ उनकर रूप देखही लायक रहे। ऊ हमके धऽ के कहली कि गड़हिया पर तऽ एके गो घरवे रहे बिहारी मामा के आ उनुका एकेगो बेटीए रही तऽ का तूही बिन्दू हऊ का। अब तू हमके का चीन्हबू। तू हमसे बहुते छोट रहू। आठ-दस बरीस के तऽ रहबे कइलु जब हम तोहके देखले रहीं। हम ईयाद करत कहनी कि तू दुर्गा फूआ के बेटी शीला दीदी हऊ का ? ई बात कहते हम दीदी के अँकवारिए में धऽ लिहलीं आ कहली कि केतना आ कवना पुन के बले आज ए दीदी तू हमके भेंटइलू हऽ। लागता कि एगो जुग बीत गइल, लरिकाई के बाद एह बुढ़ापा के मिलन से दुनू जानी के आँख में लोर भर गइल। ना बुझाइल कि मिलन के खुशी से भरल- कि बचपन के इयादन के झकोरा से। बहुते लोग कहेला कि बहिन-बहिन के रोवाई तऽ देखावा होला, बाकी एह मनवा के- के रोकी, जब अपन लोग भेंटाई तब। दीदी हमके पकड़ले कहते जात रही कि ए बहिना बियाहे के बाद से तऽ बहिन नदी के दू किनारा हो जाली, जेकर भेंट कबो कबो संजोगे, कवनो संगमें पर नऽ होला। आज ई गाड़िए हमनी खातिर गंगा-जमुना के संगम बन गइल बा। एगो जुग बीत गइल जब हमनी के हरदम मिलत रहीं जा। ओह घड़ी तऽ दुनु जानी कुँआरे न रहलीं जा। हमार उमीरिया तऽ बियाह जोगे रहबो कइल बाकी तूं तऽ अभी लरिका रहू- इयाद बा नऽ।

गर्मी के छुट्टी में फुआ गाँवे आवत रही तऽ शीला दीदी साथे-साथे आँवस। अइसे तऽ गर्मी में गाँवे ढ़ेरे लरिका जूट जात रहन तऽ खेले-कूदे, बतियावे आ खाये-पीए सब में बड़ा मजा आवे। सटले-सटले घर रहे तऽ रतियो खानी एक-दूसराके घरे बइठ के कहनी सुने चाहे गीत गावे में बड़ा नीक लागे। दिन में लगे के फेड़न पर से घूम-घूम के टिकोरा, आम, जामुन लूटे में आ बहस-बहस के अपन अपन बाते बतियावे में सब रह जात रहे कबो-कबो गोटी-खेलीजाँ तऽ कबो एकड़-दुक्कड़। हँ दीदी के गाँवे अइला से गाँव

में केहू के घरे साथे-साथे जाये में बड़ा अच्छा लागे। अइसे दीदी अपना भाई के अकेल संतान रही, बाकी जब ऊ अठारह-बीस बरीस के हो गइली तऽ सुने में आइल रहे कि उनका एगो भाई भइल बा। ओह भाई के हम देखले ना रहीं, काहे कि अब फुआ गाँवे अवतो ना रही। फूआ के घर से पता चलल रहे कि एतना दिन बाद उनका लड़िका भइल बा, तऽ ओही के पोसे-पाले आ शीला दीदी के बियाह-शादी खोजे में बाझल रहतारी, ओही से नइहरो घुमे के मोका ना मिले। हमरो गाँव तऽ बाद में छुटिए गइल रहे, काहे कि बाबूजी के नोकरी पर पढ़े-लिखे खातिर जाए आ रहे के परल। तऽ शीला दीदी के बियाह कब भइल आ ऊ कहाँ गइली ना जान पँवलीं। पढ़ला-लिखला आ बड़ भइला पर हमरो बियाह भइए गइल, तऽ सभे अपना-अपना रूई-सूत आ नून-तेल में अँझुरा गइल। अब एह बुढ़ापा में, बम्बई जाए के रास्ता में, ई दीदी भेंटाइल रही, तऽ पीछे के कुल बीतल बात तऽ इयाद अवते रहे, साथे-साथे एह दुनो बहिन के जिनगी में अब ले का-का आ कइसे-कइसे भइल-गइल रहे ऊहो बतियावे के रहे, तऽ बुझइबे ना करे कि ट्रेन कहाँ से चलल बा आ कहाँ ले जाई।

हम लगलीं दीदी के बिना सेनुर के देख के उनका जिनिगी के बारे में पूछे आ जाने। तऽ पता चलल कि एगो बेटी दे के जीजा जीप आ कार के भिड़न्त में दीदी के छोड़ के चल देलन तऽ ओही आफिस में दीदी के नोकरी मिल गइल। उनकर पढ़ाई कामें आइल। ऊ अपना बेटी के पढ़ा-लिखा के आ लायक बना के, एगो इन्जीनियर दामाद खोज के, ओके ससुरा भेंज देली। नोकरी से तऽ ऊ बहुत पहिले रिटायर कऽ गइल रही। हँ पिनसिन अबो पावेली आ अपना भाई-भउजाई साथे बम्बई जा तारी। अब दीदी ऊँहे आ ओही लोगिन साथे रहेली। दीदी के उनकर भाई अवहीं ना देलन। दीदी के ऊ बहुते मानेलन आ दीदीओ ओह लोगिन खातिर जान देली।

बीतल बहुते बात ईयाद करते हम फूआ के ओह बेटा के बारे में पूछ बइठलीं, जे दीदी से अठारह-बरीस छोट रहन। लगनी पूछे कि ऊ अब कहाँ रहेलन, कइसे बानऽ, आ उनकर नाँव का हऽ। गाड़ी चलत रहे, रात के दस बज गइल रहे। सीट पर चादर बिछा देले रहीं जा बाकी सुते के मन ना करत रहे, काहे कि गड़ियो में एक दिन आ रात साथे रहे के रहे आ पचीस-तीस बरिस के जिनगी के कुल पन्ना अभी उलटे के बाकिए रहे। हमनी के सट के बतियावत देख के साइड वाली सीट पर आके बइठे के जगह लोग दे दीहल, काहे कि सबका सुते से बीचे में बइठल ना बनत रहे। दीदी सबका सुते खातिर बतियो बुतवा दिहली, आ हमरा साथे जम के ओही किनारे के सीट पर बइठ गइली। अब हम उनका ओह छोट भाई के बारे में पूछे लगनी। बतिया बुतवला पर ऊ कहली कि जानतारू काहे कुल बत्ती हम बुतवा देलीं हँऽ ? एह से कि अँन्हार हो जाव, आ सब सुत जाव। अब तू तऽ जवन बतिया पुछलु हऽ ओहू के रंग करिए नऽ बा। आज दूगो बहिन भेंटाइल बाड़ी; तऽ जवन बताइब, अब एह एकान्ते में कहे आ सुने लायक बड़लो बा। ई देबी-देवता लोग बड़ा दयालु हऽ। एने केतना दिन से सोचत रहीं कि एह बात के राज हम केकरा से कहब। ई तऽ हमरा पेटे में रह जाई। आज देवता-पित्तर लोगिन के दया से तू भेंटाइल बाड़ू तऽ अब पचत नइखे। अब ई पेट फूलऽता तऽ तोहसे तऽ सब बताइए देब।

जानतारू हमार बियाह हो गइल तऽ माई हमरा भाई के जे चार-पाँच बरिस के रहलन, हमरा लगे पढ़े-लिखे खातिर भेज दिहलीं। कहली कि तूँ बढ़ियां से रखबू आ पढ़ा-लिखा देबू- हमरा से अब होत नइखे, देंह जांगर अब चलते नइखे। तोहरा गइला से ई अपना दीदिया खातिर बड़ा हहरत रहतानऽ। हमरो गोदी में तले बेबी अइसन बेटी आ गइल रही। एह सीतू के मन बेबी के खेलावलो में लाग गइल आ पढ़बो करँस। साल दू साल रहला के बाद तऽ ई अपना माँ लगे हमके छोड़ के जाइले ना चहलन। माई-बाबूजी लोग तऽ अब हइयो नइखन आ हमरा के छोड़ के इनके देखे वाला अब बड़ले के बा ? जानतारू बिन्दू अब हमहीं इनकर बहिन आ महतारी दुनू बानी। अब ई बम्बई में रहेलन। उहें नोकरी करेलन। अपना मेहरारू आ लरिकन के साथही राखेलन। हमरो से कहलन कि कहियाले तू अकेल रहबू ? अब एह बुढ़ापा में हमरे लगे रहऽ। इनकर लड़िका आ मेहरारू तऽ हमरा बिना लोग रहबे ना करे। जानते बाड़ू कि अपने खून नऽ अपना में सटेला। हमहूँ सोंचलीं कि बेटी साथे का बुढ़ापा बिताईं। भाई लगे रहब तऽ तनी कन्हवो लगइहन। आगियो दिहन। जब बेटी बिदेशे में रहतारी तऽ बेटा आ भाई में अन्तरे का बा ? एतना बात कहत के तऽ शीला दीदी के बुझइबे ना कइल कि का कहतारी जवना बतिया के रंग

करिया बा-कि चट से हम उनके पकड़ के कहनी कि ए दीदी तू ई राज एतना दिन ले कुन्ती नियर छिपवले आ लुकवले रहलु हऽ। तोहार भाई सीतू नऽ तोहार कर्ण बानऽ।

ए बिन्दू बहिना केकरा से कहीं ? माई-बाप जे जानत रहे मरिए गइल। बेटी अपना दुलहा साथे बिदेशे में रहेली। अब हमार एह दुनिया में के बा। आ बेटा चाहे छोट भाई में फरके का होला? लोग तऽ माने जानेला तऽ दुसरो केहू अपने हो जाला। इनके तऽ पाप से चाहे चोरा लुका के जनमवलहीं बानी। अब तोहरा से का बताईं? उहे केशव जे एलाहाबाद में हमरा पड़ोस में रहत रहन आ साथे कालेजो जात आवत रहन आ साथ पढ़तो रहन, ओही घड़ी उनका साथे ई पाप हमरा से भऽ गइल रहे। ई केशू तऽ हमरा बिआहो में बड़ा काम कइलन आ हमरा घर के मददो कइलन बाकि जब हमार बिदाई होत रहे तऽ हमनी के अँखिए आ मनवा बुझत रहे कि एक दूसरा ओरी काहे ताके आ रोवे-बिलखे। आजकाल के तऽ लड़िका-लड़की अपना माई-बाप से ई कुल प्रेम के बात कहे में लजातो-डेरात नइखन लोग, बाकी हमनी के जमाना अइसन रहे कि कुछु कहल तऽ दूर रहो, ताकहूँ के हिम्मत ना रहे, एही से लागलो मन टूट गइल। ऊ तऽ माई अइसन रही कि हमार इज्जत बचा लिहली। माई हमके दू-तीन महिना पहिलही लेके बनारस चल गइली आ सीतू के दू महिना के भइला पर ले बनारसे रही। फिर हमके गंगाजी नहवा के हमार पाप धोअवली, आ विश्वनाथ जी के दरसन करा के जल्दी बियाह हो जाये के आशीर्बाद मँगली, फेरू सीतू के गोदी ले के पोसलीं-पललीं आ कहलीं कि ई एतना दिन पर बाबू के मुँह देखलीं हँऽ तऽ दुधवे नइखन पकड़त। सभे कहल कि नइखन दूध पकड़त तऽ का भइल, बाहरे के दूध पी के जी जाँस। बंश के मुँह तऽ तू देखलू नऽ। अब तोहार खानदान तऽ चली नऽ। एगो बेटी रहबे कइल, भगवान बेटो तऽ दे देलन, अब का चाँहीं।

एतना बात सुनते हमरा ईया के कहलकी बतिया इयाद आइल तऽ कहलीं कि जानतारू दीदी एक बेरी ईया-माई से बतियावत रही कि दुर्गा बबुनी बुझेली कि ना कहला से चाहे ना बतवला से ई कुल केहू जानी ना। अरे चमाइनो से कहीं ढींढ़ छुपला का ? बबुनी कहत रही कि सीतू जनमें से दूध धरबे ना कइलस ! बहरे के दूध पर पालातानऽ। अरे बबुनी के देंह चाहे छतियो तऽ लरकोरी के नइखे बुझात। बड़ा छतीसी बतियावेली। बुझाता कि बेटवा ओह शिलवा के जामल हऽ तऽ छिपइहन ना तऽ ओकर बियहवा कइसे होई। आ कुछु बबुनी करँस, ओह बेचारी बेटिया के ठिकाना लाग जाव, अपना इज्जत पानी से अपना घरे जाव, इहे देवता पित्तर से हम मनावतानी।

एतना सुनते शीला दीदी फफक-फफक के एह बुढ़ापा में रोवे लगली, बाकी उनका रोवाई के सिसकी हमरा के छोड़के केहू सुन ना पावल काहे कि ई ओह बेरा आधी रात होत रहे। दीदी कहली कि हमसे तऽ पाप हो गइल बाकी माई एके सम्हार लेली। अभी ले ई बात सीतू बाबू नइखन जानत कि ऊ हमार भाई हउवन कि बेटा। तूं भेंटा गइलू हऽ तऽ बहिन भइला के नाते मुँह खुल गइल हऽ। आगे अब केहू ना जाने, इहे चाहतानी। अब जीयहीं के केतना दिन बा। हम अपन ध्धन दउलत जियते इनही के लिख देलीं हँऽ। बेबी के कवनो एतराज नइखे। ऊ तऽ अब लागता कि ओह बिदेसे में रह जइहन।

ए बिन्दु अब मरे के बेरा ई मुँह खुलल हऽ, जेसे एह मन के राज बाहर आ गइल। ई कुल बतियवला से हमनी के दुनू बहिन के मन में घनघोर बवन्डर उठत रहे, बाकी गाड़ी सनू सनू अपना रफ्तार में चलल जात रहे। दुसरो दिने गाड़ी में हमनी के फुसुर फुसुर अपने बतिया बतियावत रहीं जा, तऽ उहो दिन कब बीत गइल ना पता चलल आ साँझी खानी मुम्बई आ गइल।

स्टेशन पर हमार बाबू खड़ा रहन जे हमके लेबे आइल रहन। हम नीचे उतरते अपना बाबू से कहलीं कि - ए बाबू - ई हमार दीदी बाड़ी, तोहार मउसी लगिहन। एगो जमाना के बाद भेंटाइल बाड़ी - तू इनकर गोड़ छू लऽ, आ दीदी के ले के घरे जा। बड़ बहिन महतारिए अइसन होले - ई जान के इनकर सेवा आगहूँ करत रहिहऽ, बड़ा पुन मीली। अब तोहके छोड़ के ए देस में इनकर के बा। हमहूँ इहें बम्बईए में रहेलीं। हमरो पता जान ल। हमरो लगे सबके लेके अइहऽ। आ हमरा दीदी के जोह-पता देत रहिहऽ।

●●●

उपन्यास

गतांक से आगे ....

'दालभात तरकारी...' के अगिला भाग

नौवां कलछुल (नौवां अध्याय)

डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव

- पउवा हंसे पसेरी के? अपना बाप से ना पूछलऽ ह जे उ केतना पढ़ले बाड़े? जाते रजिस्ट्री कचहरी में त सीधे कजरौटा में अंगूठा रगड़के निसान लगावेले। एने त एतना बा नू कि हम कौन कागज पर फस-से बाकलम खास लिख के दस्तखत कर दीले। एक बेर रजिस्ट्रार पूछले- क्यों मथुरा प्रसाद ! यह आपका दसखत है? त हम फटाक-से कहनीं-हं हुजूर, ह हमारा दसखत है। कहिए तो फेन से कर दें। उ बोलले-ना, ना। आल राइट।

- त बाबू, अभी तू लोग नवका दुनिया के मोला हउव, धीरे-धीरे पोढ़इबऽ तब पौधा बनबऽ आ एने सीधे हिम्मत क के गाछे पर टिहुकारी मारत बाड़ऽ।

कुछ इसकुलिया लड़िका हमरा हाथ में किताब-कापी देख के हँस देले रहले सन। हमार इ गति त मैनेजर साहेब के कारन भइल। बेर-बेर टोकस-मथुरा प्रसाद, तुम किसी तरह मैट्रिक पास कर लो, उसके बाद बी०ए० कर लो। पढ़े-लिखे आदमी को समाज में इज्जत मिलती है।

अब उनकरा के के समझाओ कि हमार पढ़ेलिखे वाला उमिर बीत चुकल बा। का बरखा जब कृसी सुखाने। तबो सोचनी कि बेचारू हमरे भलाई खातिर नू कहत बाड़े। एक हाली ट्राई के के देखऽ तानी। बइठ गइनी किताब पढ़े। तले गांव के कुछ इसकुलिया लइका हमरा के देख के हंसे लगले सन-का चाचा, पढ़ायी होता? पढ़ीं-पढ़ीं। रउआ त बिना फीसे-फारम के एम. ए. पास कर जाएब।

ओकनी के हंसी से हमार देह जर गइल-पउवा हंसे पसेरी के?

लइका बूझ गइले सन कि चाचा खिसिया गइल बानी। एगो होशियार लइका संभरलस-ना, चाचा। हमनी के मतलब इ ना रहल ह।

-- तहरा लोगिन के मतलब हम खूब बूझत बानी हो। आ ए बेटा ! पढ़ाई-लिखाई से उमिर के का सम्बन्ध बा। लोग त साठो साल के उमिर में डिग्री ले लेता। हाले के जामल आइल बाड़ऽ हमरा पर हंसे। अपना घरे जाके बूढ़-पुरनिया लोग से नू पूछेला कि मथुरा प्रसाद का जीव हउंवे। आ कवना माटी के बनल बाड़े।

ओही में एगो मोट देहगर लइका बोललस-रउरा बारे में हमरा मालूम बा चाचा। अपना जवानी में चार-चार गो नामी पहलवान के रउआ अखाड़ा में पटक के धूरा चटा देहले रहनी।

- हं रे बाबू, तें त अइसन बात इयाद परा देहले कि मन हरियर हो गइल। हमरा बारे में जेतना सुनले बाड़ऽ ओमे तनी अउरी सुनलऽ। उमिर त अब पैंतालिस के फानत बा। जब चौबीस-पचीस साल के रहनी त लोग हमरा अखड़िया बांह के बेंधुची आ छाती के चौड़ाई देखे आवे। अखाड़ा में त हम पंचवे किलास से लड़त रहनी। ओकर माटी के सुगंध हमरा नाक में आजो ढुकल जात बा। पढ़ाइयो छूटला के बाद पन्द्रह साल ले पहलवान लोग से हाथ मिलवनीं। तब अपना गांव के उत्तरवारी पोखरा के लगे बगइचा में रोजे अखाड़ा चले। कुश्ती में खल-बेखल के दांव-पेंच देखावल जाव। शिवरात के मेला में जवन दंगल होखे ओमे एक से एक पंजाबी, राजस्थानी, बंगाली, बिहारी पहलवान जुटस। एगो जलंधरी पहलवान बड़ा फउकत रहले। कहस कि इस एरिया में कोई ऐसा बंदा नहीं है जो हमसे हाथ मिला सके। दाल-भात तरकारी खाकर कोई क्या लड़ेगा? आ ओकर बतिया कुछ सांचो रहे। तीन गांवन के पांच गो कुश्तीबाज लोग के पटक के उ आपन झंडा गाड़ देले रहले।

अगिला साल के डोल के मेला में दंगल के तइयारी रहे। हजारों लोग कुश्ती देखे खातिर जूटल रहे। उहे जलंधरी पहलवान ताल ठोक के खड़ा रहले। तीन गो पहलवान के चित्त क के आपन छाती ठोंकत रहले। आजो उनकरा मुंह से उहे बोली निकलल-दाल-भात-तरकारी वाला बंदा मुझसे क्या हाथ मिलायेगा। मीरपुर के लोग हमरा के पोंछियावे के शुरू कइल- का मथुरा, इहे सब सुने खातिर खड़ा बाड़ऽ। आरे जवान, कूद जो अखाड़ा में। जो होगा देखा जाएगा। आरे इहे नू होगा कि तुम पटका जाएगा। त

उससे क्या कुश्तीबाजी में पटकना-पटकाना तो लगा ही रहता है। मगर इस भंइसा पहलवान के जवाब दे दे बाबू। इहो समझस कि खाली रोटिए में ताकत ना होला, भातो ढेर-ढेर बड़बोलिया पहलवान लोग के भठा के रख देला। आइ आम चाहे जाइ लबेदा, पहलवान जी के गर्दन पर तनी माटी मल दे।

अइसन बात सुनके हमार मन फड़फड़ा उठल। बुझात बा जे अब हमरो हाथ मिलावही के पड़ी। इ भंइसा सब दांव-पेंच त जानत बा बाकिर धोबिया घाट के जानकारी इनकरा ना होई। अबका, बजरंगबली के नाम लेके अखाड़ा के माटी माथा से लगवनी आ उनकरा आगे खड़ा हो गइनी।

- चाचा रउआ त अइसन बखान करत बानी कि हमनी के लागत बा जे आँखि के आगा दंगल हो रहल बा।

- बेइ भाई, तनी चुप रहऽ ना! हं चाचा त सुनाई आगे का भइल। हे स्टूलवा पर बइठ जांई चाचा।

हम बइठ गइनी। आगे कहनी-हमनी के कुश्ती देखो खातिर ठठ के ठठ जनता खड़ा रहे। ओने ढोल-नगाड़ा बाजत रहे। केहू-केहू त जीभ से सीटी बजावे लागल। अपनही गांव के एगो बुढ़उ किरासन तेल के खाली टीन लकड़ी से पीटत रहऊ। सभे के नजर हमरे ऊपर टिकल रहे। दोस्त लोग दूरे से कहे-मथुरवा! पीठ मत देखइहे! गांव के जिन्न बाबा ताहार मदद करिहें। इ जलंधरी खन्ना जी तीन दिन से खनखना रहल बाड़े। बाजी जीत के घमंडे फूलत बाड़े। पहिलके दांव में अइसन मार कि बबुआ जी के आसमान लउक जाव। आज गोबारा के फोड़ दे !

पता न चलल कि उ कवन आदमी रहे। भीड़ के हउंजार में से चिलइलस- मथुरा प्रसाद, असली महतारी के दूध पियले होखऽ त आज एह सांड़ के सींग तूर द। इहो का बूझी कि छपरो जिला में पहलवान लोग पैदा होला। एही धरती पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, जयप्रकाश नारायण, ब्रजकिशोर बाबू, नटवर ला, भिखारी ठाकुर, महेन्द्र मिसिर आ केतना-केतना मशहूर लोग पैदा भइल। छपरा के नाम मत डुबइहे बाबू !

अब एतना बात के दूनो कान में संभार लेबे के केकरा लगे ताकत रहे। हमरा भीतर आग धधके लागल। तले एही छन अपना उस्ताद जी के बात इयाद पड़ल कि अखाड़ा में खीस-पीत लेके ना उतरे के चाहीं। खीस से बल घटेला।

हाथ मिलावते पंजाबी पहलवान हमरा ऊपर साफे तड़प गइल। हमरा त अइसन बुझाइल जे एह पहाड़ के नीचे दबा के भुरकुस हो जाएब। बाकिर दाव-पेंच के भेद हमरो मालूम रहे। भीतर से मन कहलस-मथुरा, घबरा मत। इ गीदड़ भभकी ह। तनिको बिचिलइलऽ कि इ चढ़ बइठी। उनकर तीन गो वार बेकार हो गइल। उ उत्तर त हम दखिन, कबो उ पूरूब त हम पश्चिम। ओने नगाड़ा आसमान गुंजावत रहे। हमार नाम ध ध के लोग चिल्लात रहे। तले चउथका फेरी में उ जइसे हमार लंगोटा पकड़ले कि धांय दे हम तड़प गइनी आ पीछे से धोबिया पाट दीहनी। जइसे बिजली कड़क गइल। धरती पर गिरते उनका छाती पर बइठत देर ना कइंनी। उ केतनो एने ओने कइले आसमान लउकाइए के छोड़नी।

नगाड़ा-ढोल जोर-जोर से बाजे लागल। पब्लिक थपरी बजा-बजा के नाचे लागल। हमरा के रिक्शा पर बइठा के गांव-टोला घुमावल लोग। केहू-केहू हमरा मुंह में मिठाई डाल दीहल। फूल-माला से लदा गइनी। जांलधरी पहलवान पर अलगे से लोग टिहुकारी मारे-गेहूं-बाजरा के रोटी के त मथुरा जिउवा अरारोट बना देहलस। आरे खाली खइला के मोल ना ह भाई, पचाहूं के पड़ेला। रहरी के दाल, साठी के भात आ आलू-भंटा-टमाटर-सोवा के तरकारी के सवाद पहिले चीखऽ ए पहलवान जी।

पहलवान जी बिहाने भइला पश्चिम के रेलगाड़ी पकड़ लेहले।

ओही गोल में एगो छोट इस्कूलिया लड़का रहे। बोललस-चाचा, हमार भात के पहाड़ा सुनेब ?

- भात के पहाड़ा! इ कवन पहाड़ा ह रे बाबू ? तनी सुनाव त।

लड़िका सुनवलस -

'भात का भात
भात दूनी दाल
भात तियां तरकारी
भात चउका चोखा
भात पचे पापड़
भात छक छनौरी
भात सते सलाद
भात अठे अचार
भात नवा नमक
भात दहा दही
हमार पहाड़ा सही।'

पहाड़ा सुनते सभे हँसे लागल।

इस्कूलिया लड़िका बड़ा मन से हमार बात सुनले सन। एगो विदियार्थी खुश होके कहलस- चाचा, रउओ हमनिए के साथे पढ़ी ना। हमनी का समझा देब सन।

आरे जो सन रे बाबू ! फाटल बोरा पर रेशम के पेबन्द लगा देला से बोरा रेशमी ना नू बन जाई। इ पढ़ायी-लिखाई के पेबन्द सांच पूछी त हमरा नीमन ना लागत रहे। मैनेजर साहेब के चढ़वला पर शूली पर चढ़ गइनी ह। इ अंग्रेजी के पहाड़ा हमरा मूंड़ी पर ना ढोआई। सतवां किलास में जवन मास्टर साहेब हमरा के पढ़वले रहले उ देखे में तनी चटकदार रहले। दरभंगा से बदली होके हमनी के स्कूल में आइल रहले। हमेशा साफ-सुथरा कपड़ा पेन्हस, देह में सेंट-इतिर गमकत रहे आ होंठ-मुंह त पान के लाली से हमेशा लाले लउके। केतना बेर हम उनकरे मुंह से सुनले रहनी-के कहल कि चुनरी रंगालऽ। तब एकर मानी-मतलब ना बुझाइल। किलास में कमजोर छात्र के उ इहे बतिया कहस। ऐ बाबू, के कहल चुनरी रंगालऽ? पढ़ाई-लिखाई के इ जहमत काहे उठावत बाड़ऽ ? जा घरे, खा-पी के सूतऽ। संउसे देस सूतल बा, तुहूं सूतऽ।

मास्टर साहेब के बतिया पर पूरा किलास हंसे लागे।

सांच पूछल जाव त हमार चुनरी रंगावे खातिर मैनेजर साहेब कहले। अंगरेजी के हरूफ देख के कपार बथे लागे। किताब के पन्ना पलटीं त फोटउए पर ताकत रह जाई। शकुन्तला कहली- रउआ से पढ़ाई ना होई। नौकरिये में चुपचाप मन लगाई।

अभी इ सब बात होते रहे कि खबर मिलल कि पटीदारी में के बहनोई सचिदा बाबू आइल बानी। मिलला ढेर दिन भइल रहे। रात के आठ बजे हम उनकरा से भेंट करे गइनी। प्रणामा-पाती भइल। साला-बहनोई वाला रिश्ता के भी भांड़ा-भंड़उवल भइल। हंसी त खूब लागल। एह गांव के रिश्ता में हम उनकर साला रहनी आ उनकरा मौसिअउरा गांव के नाता में हमार सार उहे लागस। जेकर जब दांव लागे, उहे दबोच ले। उमिरो में हमनी का लगभग बराबरे रहनी सन। सचिदा बाबू इंटर किलास तक पढ़के सरकारी शिक्षा बोर्ड में कलर्क बन गइल रहले।

-- तब कइसन कटत बा? बानू सब फिटफाट? - उ पूछले।

-- सब फिटे बा- हम कहनी।

-- हमरा आवते पता लागल ह कि रउआ मैट्रिक परीक्षा के तइयारी करत बानी।

-- ठीके पता लागल ह। जब कान्हा पर जुआ धरा गइल बा त केहूं तरें गाड़ी धींचही के पड़ी।

-- काहें केहूं ते? हमरा रहते केहूंते काहे?

उ हमरा ओर ताक के मुस्करइले। फेन हमार चेहरा देख के ठठा के हंसले-एहीसे नू कहीले, एह गांव के सारन के दिमाग टुंइयां ह। कवनो बात ठीक से ढुकबे ना करेला। अबो त मान लीं कि बहनोई लोग के दिमाग तेज होला।

-- आछा मननी। अब बुझौवल मत बुझावल जाव। खुलासा कइल जाव। हमरा बात पर उ हंसत हंसत पूछले - मैट्रिक पास करे के मन बा नूं?

-- काहे ना, बड़लही बा।

-- त अपने जवन करत बानी तवन सब बेकार बा। गोइंठा में घीव सुखवला से फायदा? लालटेन जरा-जरा के आपन आंख काहे फोड़त बानी? सब दुखों की एक दवा है, काहे घबराए- फिल्मी गीत सुनले बानी नू? थोड़ा खर्चा करेके पड़ी, घर बइठले मैट्रिक के सार्टिफिकेट के जोगाड़ हो जाई।

हम त उनकरा बात पर भक हो गइनी। इ सचिदा बाबू कहत का बाड़े? इ सार हमरा के कहीं बुड़बक त नइखे बनावत।

-- दुलरूआ जी, फिकिर में का पड़ गइनी? खाली-पांच हजार रूपया खर्चा करे के पड़ी, सारा ममिला फिट।

-- पांच हजार? हम चिहइनी।

-- अउरी का। नीचे के चपरासी से लेके ऊपर के चेयरमैन तक के सेवा करे के पड़ेला। केतना लोग त बीस से पचास हजार तक ढकच के जाला। रउआ आपन बानी। ओही महकमा में हमरा रहते रउआ से जियादा ना नू लिआई।

हम कुछ सोचनी आ कहनी-अछा, बिहने बताएब। रउआ कबले बानी?

-- काल्ह सांझ के जाएब। छुट्टी नइखे। जबसे नवकी सरकार आइल ह तबसे मूड़ी पर तेरूआर लटकल रहेला। पहिले त हफ्ता में दू-तीन दिन फ्रेंच लीव मारा जात रहल ह। अब कड़ाई बा। नेता चिल्लात बाड़े सन कि देश के सुधारे के बा। त हमनियो का का कहीं सन, ठीक बा भाइ। पहिले दफ्तर के बाबू लोग के सुधार लऽ, देस त अपने आप सुधर जाई।

-- खूब कहत बानी जी।

-- अउरी का कहीं। - सचिदा बाबू हंसले- जानत नइखी दफ्तर आ देस डोंगी के दूगो छोर ह। दफ्तर डूबी त देस उठी, आ दफ्तर उठ गइल त देस के केहू तरे डूबहीं के बा। उनका बतिया पर हंसी आ गइल। दफ्तर चलावे वाला आदमी अइसन बात बोलत बा।

-- ठीक बा, हम बिहने बताएब।

घरे लउट के शकुन्ता से बतवनी। पहिले त उ सकइली। आजकल बड़ा धोखाधड़ी सुने में आवत बा। लोग पइसा लेके गायब हो जाता।

- सचिदा बाबू अइसन आदमी ना हंउए। दुनिया के साथे कुछू करस, ससुरारी में असन काम करिहें त फेन मुंह देखावे लायक ना रहिहें। -हमार विचार रहे।

-- आरे त, शरम लेहाजवाला नू मुंह देखावे से डेराला? जे जाल के घोर के पी जाला ओकरा कवना बात के लेहाज जी। रउवा भूला गइनी का? रउरे ममहर के परमानन्द सिंह नौकरी लगावे के लालच देके दस पन्द्रह गो लइकन से साठ-साठ हजार रूपया बटोर के चंपत हो गइले। लोग के लाखों रूपया डूब गइल।

-- छोड़S उ सब बात। एने पांच हजार के बात बा। बिना पढ़ले-लिखले सर्टिफिकेट मिल जाई।

रूपया के जोगाड़ क के दोसरा दिने हम सचिदा बाबू के लगे चहुंपनी। उनकरा हाथ में रूपया देके कहनी- ली थामीं। उ काम जल्दीए कराईं।

-- रउआ निसखातिर रहीं। हमरा हेड आफिस जाए के देरी भर बा, तीने दिन में सगरे काम पोखता हो जाई। सार्टिफिकेट रउआ लगे चहुंप जाई। बाकिर इ बात अपने ही मन में रखेब। एने ओने ओसावला के जरूरत नइखे। अइसन काम में हजार आदमी दुश्मन बन जाले।

लोग से हम सुनले रहनी कि इ बड़ा जोखिम के काम ह। धरा गइला प सीधे जेहले जाये के पड़ेला। एह से तनी फेन से खुलासा करवा लेहनी- भाई साहेब, काम अइसन करवायेब जे बाद में हमरा ऊपर कवनो जरब ना पहुंचे। एतना पइसो रूपया खर्चा करीं आ लावाघली में जेल जाके चक्की चलाई। जगहंसाई अलगा बा।

सचिदा बाबू ठठा के हंसले। हमरा कान्हा पर हाथ ध के तनी दबवले- मथुरा बाबू, जरब आवे वाला काम में हम खुदे हाथ ना डालिले। एम०ए०, पी-एच०डी के डिग्री त अब केतना मिनिस्टरो लोग खींच लेता आ कवनो आंच नइखो आवत। त पसेरी के आगे कनवा-छंटाक के का मोल। रउआ बेफिकिर रहीं। घरे जाके हमरा सरहज से हलुआ बनवा के खाईं।

फेन सार मजाक कइलस। बेर-बेर पटकाइलो ठीक ना होला। सोचनी-तनी हमू दाग दीं- नीमने कहत बानी ए भाई साहेब। असली हलुआ त रउए भेंटात होई। चलीं अपना मौसीअउरा ओहीजा लंगटे ना नचा देहनी त हमरो मथुरा प्रसाद नाम ना।

उ लगले दांतचियार के हंसे। घूस के पान खात-खात अगिला दूगो दांत गायब हो गइल रहे।

हफ्ता बीतल। खबर आइल कि आपन सतवां के सर्टिफिकेट भेज दीं। हम भेज देइनी। महीना बीतत-बीतत रजिस्ट्री डाक से मैट्रिक के सार्टिफिकेट आ गइल। अब का पूछे के रहे।

जब मैनेजर साहेब से बतवनी त उ भकुआ के देखत रह गइले।

-- इतना जल्दी ये सब कैसे हो गया? अभी तुम्हारी पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई?

-- ये सर, उ सब अब नाहिये पूछिए सो नीमन। आदमी जोगाड़ क के का नहीं पा लेता है। एही देस में जोगाड़ लगा के मलेरिया के मारल सरकार केतना-केतना साल चल जात बीया आ अपने इ काहे भूला जात बानी कि इ बिहार ह, एहीजा हर चीज जोगाड़े से भेंटाला। जोगाड़ लगाईं त भगवानो के दर्शन हो जाई।

मैनेजर साहेब तनी मुस्की छंटले। कुछ छन चुप रहले फेन बोलले- मथुरा प्रसाद, हम सोचते हैं कि बहिन की दूसरी शादी कर ही दें।

-- कोई लइका लउका है का?

-- हां, एक-दो जगह मैंने बात बढ़ायी है। जब तक बात मटेरियालाइज्ड न हो जाय तब तक खोलना नहीं चाहिए। इस काम में तुम्हारी मदद चाहिए।

-- हुकुम किया जाय। सेवक रेड्डी है।

उनकर प्रस्ताव रहे कि हम दूनू जगह जाके लइका से डायरेक्ट मिल आई। ओमें एगो के मेहरारू नइखी। दोसरका के बांह में कुछ खराबी बा बाकिर घर-गृहस्थी से जबर बाटे।

इ काम जिम्मेदारी के रहे। लड़िका के जाने-समझे में इचिको भर चूक भइल त लड़की के जिदिगानी नरक बन जाई। अब का करीं। इ काम खुदे मैनेजर साहेब के

करे के चाहीं। शकुन्तला जनिहें त तनी रंजे होखिहें। हम अहजह में पड़ गइनी। शकुन्तला से कहीं कि ना कहीं। कुछ लोग कहेला कि जनाना से सब बात ना कहे के। जनानी दिमाग के पेंदी पातर होला। ना गरम होत देरी लागेला, ना ठंडे होत। उल्टा-सीधा अर्थ लगावे में इ झोंटलहवा पंच बड़ा तेज ह। मान ली कि हम शकुन्तला से सब बता दीं। कवन ठेकाना ए बाबू, हमार बात सुनते उ व्यंग्यवाण छोड़े लागस-अधिया पर ढेला होए में बड़ा मन लागेला। उनक बहिन राउर के लागेली जे एतना चिंता-फिकिर हो गइल? अपना घर के काम त सपरत नइखे, ऊपर से दोसरा के सेवा-टहल करे खातिर रउआ हुल हुलाइल रहिले। जाके मैनेजर साहेब से साफ-साफ बोल दीं- राउर आपन बहिन के बियाह के ममिला बा। फइसला त रउए करे के बा। अइसन झंझट में हमरा के मत सउनी।

इ बात हम शकुन्तला से ना कहनी। सरिता के साथे रेक्सा पर बइठला के बतिया जब से उ जनले बाड़ी तबे से हमरा ओर तनी दोसरे भाव से देखेली। सोचत होइहें कि हम सरिता से भीतरे-भीतर प्यार करत बानीं। भा सरिते हमरा के चाहत बाड़ी। उनकरा के अब के समझाओ कि हमार उमिर पैंतालिस छूअत बाटे आपन बाल-बच्चा बा। अब दोसरा मेहरारू से मोहब्बत करे के इ दिन ह? चेहरा-मोहरा मिलाईं त शकुन्तले बीस पड़िहें। गोर त बड़लहीं बाड़ी, आंख-नाक सुघड़ बा। जब खुशी में हंसेली त बुझाला जे हमरा अंगना में हरसिंगार झरऽता। उनकरा कोहनइलो में एगो खूबसूरती बा। आपन हीरा छोड़ के दोसरा के कोयला पर के जाई टूटे जी ! आरे इहे नू कि सरिता के उमिर कम बा। जवानी के रंग उनकरा देह पर से उड़ल नइखे। तबो ओकरा से का। जवानी में त गदहियो सुन्दर लागेले।

दू हफ्ता बीत गइल। केतना हाली लुका के निकल जाईं, जेमे मैनेजर साहेब के आगे हम ना पड़ीं। तले एक दिन आफिस के आगे भेंटा गइले। पूछ पड़ले- तब मथुरा प्रसाद। कुछ पता लगाया ?

अइसन मौका पर झूठ बोलत ठीक ना रहे। सीधे कह देहनी- सर, अगिला एतवार के साइकिल उठाएब। आठ कोस गइल कवन बड़का काम बा। पता लागते अपने के सब बता देव।

ढेर दिन से साइकिल के धूरा-गर्दा पोंछाइल ना रहे। कुशल खाली चलावे के हाल जाने ले। बिना कानो-कीचड़ पोंछले ओहीं से लीआ के अंगना में लगा देले। शनिचर के दिन हमहीं कपड़ा लेके झाड़-पोंछ करे लगनी। शकुन्तला अंगना में चल के त ना आए सकत रहनी, दूरे से पलंग पर पड़ले-पड़ल पूछली- रउआ साइकिल काहे पोंछत बानी? बेटा से कहीं।

-- आरे छोड़ऽ बेटा के। जेतना देर में उनकरा से कहेब ओतना में खुदे पोंछ पांछ लेब। आज काल्ह के जवनका लोग के जानत नइखू। मन में आई त करिहें ना त महटिया के केन्हहू चल जइहें।

-- त कौनो तामादी बीतल जाता का? डकौतिया जी वाला एगो दवइया आज तक ले ना आइल। जाके लिआ दीं। कहीं जाए के बा का ? साइकिल त अइसन चमकवले बानी जइसे ससुरारी जाए के होखे।

-- कहां तू बाड़ू। साइकिल से ससुरारी जाये के दिन गइल। अब त मोटर साइकिल भा कार आई तबे जाएब।

-- कारवा पर सरितो के ले जाएब कि ना? - कह के उ हंसे लगली।

-- ताहार मुंह फेर हगुआत बा का? जवाब भेंटा जाई त लगबू डेहरी के ओर ताके।

-- ना, सांचो बताई, कहां के तइयारी बा?

-- काल्ह एगो दोस्त से भेंट करे जाए के बा। एतवार के भोरे साइकिल हांक देहनी।

दसवां कलछुल (दसवां अध्याय)

कुशल आके सुनवले-- बिनेसरी बाबू के एक्सीडेंट हो गइल बा। अस्पताल में पड़ल बाड़े। बचे के कवनो उम्मीद नइखे।

सुनते मन कइसन दो हो गइल। बेचारू जिनिगी भर बियाह खातिर हीकत रह गइले। एगो उ समय रहे कि उ हमार दुआर ना छोड़स। दिन रात इहें के साथे लागल रहस। कहस कि मथुरा भाई, कहीं हमरो बियाह के जोगाड़ बइठा द। हमार घर बिना घरनी भूत के डेरा भइल बा। एतना बड़के दुतल्ला मकान, नौ गो कमरा। बीसन बीघा खेती बारी। बाकिर भोगे

वाला केहू ना। आंख मूंदा गइला पर इ सम्पत्ति के का होई।

बिनेसरी बाबू के बात सुनके कबो-कबो हमरो मन दु:खी हो जाव। बी०ए० पास, धन दउलत के कवनो कमी ना, तबो लगन नइखे चर्चरात। ना मालूम उनकर कवन नछत्तर खराब बा।

जब इहां का ना भेंटाई त बिनसेरी बाबू चउकी पर बइठल, हमरे से बतियावे लागस। ओ घरी हम निरोग रहनी। नाता में त हम भउजी लागते रहनी। इहां से उ छह साल छोट हउंए। इनकर बाबूजी जब इ पांच साल के रहले तबे मर गइले। महतारी बिनेसरी के कनिया देखे खातिर हीकते-हीकते मर गइली। तीन जगह बियाह लागल बाकिर संयोग अइसन कि कवनो ना कवनो बिधिन पड़ जाव। टोटरमो- कम ना कइल गइल, जे जइसन बतावल बिनेसरी बाबू कइले तबो मूंड़ी पर चढ़ल शनीचर उतरे के नाम ना लेव।

फैक्ट्रिये में इहां का खबर मिल गइल रहे कि बिनसेरी बाबू अस्पताल में पड़ल बाड़े। एगो हाथ टूट गइल बा। उ साइकिल से अपना कवनो हितई में गइल रहले तले पीछे से ट्रैक्टर ठोकर मार देहलस। सिर में भी चोट आइल। हाथ पर पलस्तर लागल। उनकरा के देखे इहां का केतना हाली अस्पताल गइनी। पलस्तार साढ़े तीन महीना पर उतरल।

बिनेसरी बाबू जब ठीक हो गइले त एक दिन दुपहरी में हमरा घरे अइले। जेठ के महीना में लू चलत रहे। बहरा ताकला पर आंख में अंजोरो आगी नियर लागे। पेड़ पौधा से लेके, आदमी पशु-पंछी सभे गर्मी से बेचैन रहे। दुपहरिया के लू में बुझाव जे समूचा गांव के लकवा मार देले बा। छांह खातिर आंख आसमान में बदरी के टुकड़ा खोजत रहे। अइसन कुटाइम में बिनसेरी बाबू के आवाई जानके मन चंउकल। कवन जरूरी काम पड़ गइल कि दुपहरिए में गोहरावत बाड़े- मथुरा भइया ! ए मथुरा भाई, बाड़S हो? दलीची से झांक के हम कहनी- ओसरवा में बइठीं। मिल में से डयूटी से छूट के उहां का आवते होखब।

-- एगो नीमन खबर लेके आइल बानी भउजी। -बिनेसरी बाबू बोललें।

-- काल्ह सांझ के कुछदेखनहरू लोग आवत बा।

- इ त बड़ी खुशी के बात सुनवनी जी। कहां के लोग ह?

-- लोकले ह। नाप-जोख के दस किलोमीटर जमीन पड़ी।

बइठल-बइठल बिनसेरी बाबू पूरा कहानी सुना गइले। उनकरा दहिना आंख काल्ह भोरे से फरकत रहे। मंदिर के पुजारी जी उचरले कि वियाह के जोग बनत बा। जल्दीए कवनो शुभ समाचार सुनाई पड़ी। दुअरा पर एक जना आके हमरा के खबर कइलन हा कि रउआ के देखे कुछ लोग आ रहल बा। हम दउड़ल अइनी हं कि मथुरा भाई से कुछ राय विचार क लीं।

आज बिनेसरी बाबू के रोवां-रोवां फुलाइल लागत रहे। जइसे सूखल-झुराइल पौधा पर बरखा के पानी पड़ गइल होखे। देर तक ले इन्तजार कइले, कुशल के बाबूजी पता ना कहां फंस गइनी। मिल के मजदूर यूनियन वाला लोग कबो-कबो धर के उहां से बतियावे लागेला। बेरा गिरे लागल। बिनेसरी बाबू उठके जाए लगले- अब जात बानी, रस्ते में भइया से कहीं भेट होई। तले उहां के आवाई के आहट मिलल। भेंट होते बिनसेरी बाबू सारा हाल कह सुनवले। इहां का ओही बेरा उनकरा गांवे गइनी।

तीन गो बरतूहार दुअरा पर बइठल बिनेसरी के इंतजार क के लउट गइल रहे लोग। कह के गइल रहे लोग कि हमनी के दूगो अउरी लइका देखे गइल जरूरी बा। देर ले एहीजा बइठ जाएब सन त रात हो जाई। अभी तीन कोस जमीन नापे के बा। बिनेसरी बाबू से मिले हमनी का बिहने फजरहीं आएब सन।

इहां का लउट अइनी। रास्ता में पता लगवनी त कुछ अजीब बात मालूम भइल। आजकल कुछ अइसन ठग दलाल पैदा भइल बाड़े कि लड़का के घरे बरतूहार बनके चल जात बाड़े। एने-ओने के बात करत बाड़े, ओ लोग के खूब स्वागत-सत्कार होता। छूट के खात-पियत बाड़े। इहां तक कि तिलको दहेज तय क के, पंडित बोला के दिनो रोपवा देत बाड़े। मगर दोसरा दिने उ लोग लउट के नइखे आवत। उ पार्टी ठगुआ रहे।

समझ में ना आवत रहे कि आखिर बिनेसरी जी के शादी में रह रहके बाधा काहे पड़ जात बा। केतना बार बरतूहार लोग आइल आ जे गइल से फेन लउटल ना। इहो सुने में आइल कि कवनो के मुँह से निकलल बा कि बिनेसरी बाबू के मकान में प्रेत के

बास बा। उ इनकर घर ना बसे दी। एगो हजाम ठाकुर कहत रहले कि उनकरा घर के दखिनवारी नींव में तेलियामसान के हड्डी गड़ाइल बा। उ बरकत ना होखे दी। इहो अफवाह फइलावल गइल कि बिनेसरी के हाफ कमीज पेन्हले केहू आज तक ले देखले नइखे। भरबहियां कमीज के भीतरी अपना दहिना हाथ वाला चरक के दाग छिपवले रहेले। त कवना बाप अइसन चरकाह दुलहा के आपन बेटी संउपी !

इ सब बदनाम करे वाला बात सुनके हमनी का दुःख होखे। कुशल के बाबूजी भी चिन्ता करीं कि केंहुते बिनेसरी के बियाह हो जाइत त बेचारू के जिनिगी खुशहाल हो जाइत।

एक दिन सूतला रात में इहां का अउंजा के उठनी आ हमरा के जगा के कहनी--हमरा मन में एगो बात आवत बा शकुन्तला। बिनेसरी के बियाह काहे ना सरिता से करा दीहल जाव। मनेजरो साहेब ढेर दिन से फिकिर-हरानी में पड़ल बाड़े।

-- कइसन बोली निकालत बानी जी रउआ? हो मुसमात से बिनेसरी बियाह करिहें? कुंवार पड़ल बाड़े त एकर मतलब इ ना ह कि बवनो अकट बलाय के बांह थाम लेस? उनकर किस्मत हमेशा सूतले ना नू रही।

उहां का हमरा ओर ताके लगनी।

-- सरिता में कवनो कमी बा का? पढ़ल-लिखल त उहो बाड़ी। बी०ए० हई। भले दिमाग में तनी कमजोरी आ गइल बा।

-- ए बात पर मनेजर साहेब खिसिया जइहं, हम गारंटी से कहत बानी।

तीने दिन बाद इहां का मनेजर साहेब से जा के कह देहनी- इतना जो आप हरान-परेशान हो रहे हैं तो काहे नहीं मीरपुर के पासे के गांव में लड़का देखा लेते हैं। वह बी०ए० पास है, घर-दुआर, धन-दउलत के कवनो कमी नहीं है।

मैनेजर साहेब सुन के चुप रहले। एतने कहले- मैं सरिता को समझाने की कोशिश करूंगा।

फैक्ट्री के काम से मैनेजर साहेब हफ्ता भर खातिर पटना जाए के पड़ल। लउटला पर बहुत उदास रहले। कुशल के बाबूजी से अपना मन के हाल बतवले-हमारी जिनिगी का कोई ठिकाना नहीं है मथुरा प्रसाद। पटना में मैंने अपना मेडिकल चेकअप करवाया है। मुझे बाईपास सर्जरी करवानी होगी नहीं तो किसी वक्त भी मेरा हार्ट फेल हो सकता है।

-- सर, हम तो परे साल बोले थे कि इ सिगरेट आ शराब का लत बहुत खराब होता है। दुनू जिनिगी का दुश्मन है।

उ कुछ बोलले ना। उनकरा जनाना के मरले आज बीस साल से ऊपर हो गइल। दोसर शादी ना कइले। मेहरारू के मरते शराब के लत धरा गइल। डिब्बा के डिब्बा सिगरेट फूंक लगले। इ सब कहां जाई। फेफड़ा खराब करी आ हार्ट अटैक के नेवता दी। एने बहिन के इ हाल रहे।

सरिता से जब दोसरका शादी खातिर पूछाइल त उ रोए लगली। मैनेजर साहेब समझवले-तुम्हारी लम्बी जिन्दगी है। हमारा अपना कोई ठीक नहीं। कब क्या हो जाय।

कतना दिन ले सरिता गुमसुम बनल रह गइली।

मैनेजर साहेब एक दिन कुशल के बाबूजिए के सामने समझावे के शुरू कइलन-सरिता बहन, मैंने जो कुछ कहा है उस पर गहराइ से विचार करो। दूर तक सोचो। दूसरा विवाह कर लेने में ही तुम्हारी भलाई है। इसमें कोई बदनामी नहीं है। तुम्हारी भी तबीयत कभी-कभी खराब हो जाती है। साथ में पति रहेगा तो देखभाल करेगा। दुख-सुख में जीवन-साथी ही काम आता है।

-- तो आपने क्यों नहीं की दूसरी शादी? - सरिता पूछली।

-- इसलिए कि मुझे अपना हाल मालूम है। मुझ जैसे पेड़ की जड़ में दीमक लग गई है। पता नहीं कब कौन आंधी आए और मैं गिर जाऊं। मेरे साथ किसी दूसरे का भी जीवन तबाह हो जाय। लेकिन बहिन, तुम्हारी बात दूसरी है। तुम्हारा कल्याण इसी में है कि तुम दाम्पत्य बंधन को स्वीकार कर लो।

आखिर में सरिता मान गइली। एगो साधारण समारोह में सरिता आ बिनेसरी बाबू के शादी हो गइल। केहू-केहू के मुंह से निकलल कि मथुरा प्रसाद एगो बड़का पुण्य के काम कइलन ह।

एगो जाड़ा के भोर में मैनेजर साहेब के तीसरका हार्ट अटैक भइल आ सांस टूट गइल। सरिता के शोक के अंत ना रहे। जीवन के एक मात्र सहारा बिनेसरी प्रसाद ही रहले। कुशल के बाबू जी बहुत दुखी रहनी। मैनेजर साहेब जइसन आदमी-मिलल कठिन बा। उ सांचो के इंसानियत के पुतला रहले। उ

आपन दुख पर काबू ना पा सकले। दुख आ तनाव में डूबत गइले आ शराब सिगरेट में जीए के राह खोज ले। जे उनकरा भलाई खातिर कुछ समझइबो गइल ओपर ध्यान ना देहले।

एक दिन कुशल के बाबूजी मिल में से खबर लेके अइनी कि मेहता शुगर वर्क्स के देख-रेख करे खातिर एगो नया मैनेजर अइलन हा। फैक्ट्री के साहेब लोग उनकरा अगबानी में लागल रहे। नवका मैनेजर जंग बहादुर सिंह जाति के ठाकुर हउंए। यू०पी० से आइल बाड़े। देहदसा से भारी बाड़े। पैंट के गेलिस कंधा तक धींचले रहे ले। हंसस भा बोलस त भारी तोन तनी ज्यादा हिलेला। फैक्ट्री ज्वाइन करते उहे हर डिपार्टमेंट के लोग के बारे में पता लगावे के शुरू कर दीहले। कतना लोग के डियूटी बदल देहले। कुशल के बाबूजी के त इचिको शानो गुमान रहे कि नवकू मैनेजर इहों पर हाथ फेर दीहें। अगिला सीजन के आवते-आवते इहां के फेन कंटे वाला डियूटी पर भेज दीहल गइल। मैनेजर साहेब काहे अइसन काम कइले पता ना चलल। तनिकिया सा भनक जरूर मिलल कि कवनो जाके जंग बहादुर सिंह के कान में लुबकी लगा दीहलऽ स कि मथुरा प्रसाद पुरनका मैनेजर महेन्द्र चौधरी के खास आदमी रहले ह। कौनो छोटो-छोटो बात पर नवकू मैनेजर इहां के आफिस में बोला के धंउस जमा देस। एक दिन कहले कि कंटा के सामने पांच-पांच गाडियां गन्ने से लदी खड़ी थीं। कंटा पर वजन करने वाला कोई स्टाफ नहीं था। आप कहां गए थे ?

इहां का आपन कुर्सी पांच मिनट खातिर छोड़ ले रहनी। बगले के खिड़की पर बैंक वाला बोलवले रहले। एही बीच जंग बहादुर सिंह राउंड लेके चल गइले। तीन दिन के बाद कवनो गन्ना ग्रोअर सीधे मैनेजर से शिकायत कर देहलस कि मथुरा प्रसाद कंटा पर गन्ना कम तौलता है। ऐसे तौलता है जैसे उनकर आपन दोकान होखे। फेन बोलहटा भइल। तमतमइले जंग बहादुर सिंह पूछ पड़ले - क्यों मथुरा प्रसाद ! नौकरी करने का मन है कि नहीं ? यहां बहुत से वर्कारों का मन बढ़ गया है। कंटा पर तुम्हारी ड्यूटी गन्ना तोलने की है कि फैक्ट्री में घूम-घूम कर पॉलिटिक्स करने की ?

अइसन बात पर त इहां के दिमाग चटक गइल। इ कइसन खराब मैनेजर आ गइले जे वर्कर्स के साफे भेंड़-बकरी बना के रखे के चाहत बाड़े। एगो पुरनका मैनेजर साहेब रहले। वर्कर के दुख-दरद समझस आ कहीं कवनो गलती हो जाव त मोलाय मिनय से समझा देस। नवका साहेब त मोलायमियत से दस कोस दूर रहेले। हुड्ड नियर बोलेले।

अभी कुछे महीना बीते पावल कि जंग बहादुर सिंह के बारे में तरह-तरह के बात सुनाए लागल। ओह उघटा-पुरान में इहों का मन कम ना लागे। हम इहां से एकेगो बात कहनी -- अइसन पचड़ा में रउआ पड़ला के जरूरत नइखे। एतना बड़ का फैक्ट्री में कोताही करत बा त उ जानो। ओकर कपार बत्थी रउआ काहे। रउआ आपन ड्यूटी के फिकिर करीं।

हमार बात उहां के नीमन ना लागल। तनी बिगड़िए के बोलनी- तहरा सब बात ना बुझाई। मीरपुर के शुगर मिल के नाम दुनिया में जाने कहां कहां तक ले चहुंपल बा। एहीजा के चीनी के क्वालिटी होल इंडिया में मशहूर बा। एतना साल से हमरो काम करत भ गइल। अब इ जंग बहादुर सिंह हमरा पीछे पड़ल बा। कान के कांच ह। कुचरा सन के बात बड़ा मन से सुनेला। वर्कर यूनियन के साथे कुश्ती लड़े के तइयार बा। मीरपुर के दाना-पानी अभी उनकरा पचत नइखे। यूनियन वाला लोग बेर-बेर कहत बा - चुपचाप बइठला से काम ना चली मथुराऽ। ज्यादा नरमी देखइल त इ मनेजरवा गर्दन पर चढ़के बइठ जाई। तू यूनियन के चुनाव लड़ऽ हमनी का तहरा के सेक्रेटरी बना देब सन।

-- इहो कइसन बात कहत बा लोग। रउआ सेकरेटरी बन गइला से मनेजर साहेब के मिजाज बदल जाई ? - हम कहनी। उहां का बोलनी- बदली त ना बाकिर जवन धंउस उ हमरा ऊपर जमावत बाड़े ओकर त जवाब देबहीं के पड़ी। उ एक दिन गाभी छंटले- महेन्द्र चौधरी तुम्हारी मदद करने बैकुंठ से नहीं आएगा। इ सुनते हमरो खोपड़ी गरमा गइल- मनेजर साहेब ! हम आपको जवाब देना नहीं चाहते हैं। के जाव बड़का के मुंहे लागे। बाकिर जब आप हमरा मुंह में अंगुरी डालकर चियार दीजिएगा तब कुछ ना कुछ तो उगिलना ही पड़ेगा। यह मथुरा प्रसाद कवनो पाठी-बकरी नहीं है जे हमरा गर्दन में रसरी बांध के चीक नियर आप हमको जहां-तहां घिसिटीआवते रहिएगा। अउरी कुछू ना त आपनो आन बान है। एह फैक्ट्री के वर्कर के पीछे ढेर

पड़िएगा तो अच्छा नहीं होगा। मीरपुर का लोग साफे पलट के वार करना जानता है। आपको सीधे प्रतापगढ़ का रास्ता धरवा देंगे।

बात त अउरी बढ़ जाइत ओह दिन तले बीचे में एगो लोकल नेताजी पड़ गइले। इ जंगबहादुर सिंह आउर लोगों की बात माने भा ना माने लोगों की बात को भैल्यू जरूर देता है। जहिया इस महाशय ने फैक्ट्री ज्वाइन किया ओही दिन बुझा गया कि इ खांटी पोलिटिकल आदमी है। खर्चा बोर्ड का आ पोलिटिक्स खेलता है जंगबहादुर सिंह। अब इसी पर सवाल उठता है कि पालिटिक्स दुनिया को सुधारने खातिर है कि बिगाड़ने खातिर।

आजादी के लड़ाई में अइसन दांव पेंच कम रहे। लोगे बतावेला कि तब के नेता लोग नीमन रहे। हमार बाबा त जवाहर लाल नेहरू आ सरदार पटेल के अपना हाथे मला में माला डलले रहनीं। उहां के भावुक आंख से लोर चूए लागल। उहां का आजादी के एगो सिपाही रहनी। धीरे-धीरे राजनीति में जब छल-बल ढूकल, इचको इचको बात पर दांव-पेंच चले लागल, कुर्सी खातिर मारकाट होखे लागल त उहें का कहनी कि अब का, देशभक्ति के चिता जर गइल। जेकरे के देखीं सेही देशभक्ति के खोल ओढ़ के आपन कल्याण करे में लागल बा। अखबारन आ किताबन में झूठो के हउंजार होता कि मातृभूमि के सेवा में आदमी के लागल रहे के चाहीं मगर एने त चकई के चकधिन के धुन पर नेता लोग स्वार्थ के नाच करत बा।

नरेश बाबू मास्टर के लगे कबो-कबो इहां का जाके बइठीं। फैक्ट्री के पालिटिक्स पर नरेश बाबू के खून खउले लागे। इहां के देखते उ बोल पड़ले- मथुरा बाबू, हमरा सगरी हाल मालूम बा। बीस साल से एहीजा के इस्कूल में पढ़ावत बानी। मास्टर लोग आंख मूंद के खाली पढ़इबे ना करेला, नीमन-बाउर घटना के समाचारो रखेला। जगह-जगह बाहुबली नेता लोग पैदा हो गइल बा। कानून आ ईमान के अपना मुट्ठी में बान्ह के चलेला। जे खिलाफ बोलल ओकर खैर नइखे। अपहरण भा हत्या होत देरी नइखे लागत। ओही लोग के मर्जी पर जानमाल के रक्षा होत बा। देश में आतंकवाद के फइलावे में ओ लोगन के भी हाथ कम नइखे।

संतोष सिंह के लइका के केसवा त रउआ मालूमे होई। उनकरा जवान बेटा के मुंहसे खाली एतने निकलल कि हमनी के नेताजी डेवलपमेंट फंड सब हजम कर गइले। ऊपर से अपना विरोधी के हत्या भी करवा देहले। इ बतिया कवनो जाके नेताजी के कान में ठुभका देहलस। पन्दरहो दिन ना बीतल कि ओह जवान के अपहरण हो गइल। पांच साल से ऊपरे होत बा, उ लइका घरे ना लउटल। संतोष सिंह अपना बेटा के वापसी खातिर दिल्ली से लेके पटना तक कम दौड़-धूप ना कइले।

कवनो फायदा ना भइल। अब त सुने में आवता कि उनकर बेटा के मारकाट के लाश खेत में बीग दिहल गइल। क्या कहिएगा जमाने को। तबो एह दुनिया का दस्तूर है कि जे जेतने दबेला लोग ओकरा के ओतने दबावेला। नवकू मनेजर साहेब अभी जोश में बाड़े। रउआ आपन बात व्यवहार ठीक रखीं। मन के उदास कइला के काम नइखे। जंग बहादुर सिंह कवनो रावण ना हउंए जे खा जइहें। भगवान उनकरो के फल दीहें।

चउका में बइठल बइठल इ सारा खिस्सा उहां का हमरा के सुनवनी। थरिया में के गरम खाना सेरा गइल। दाल-तरकारी फेन गरम क के उहां का खइनी।

रात में सूते के बेरा इहां का पूछनी - का कहतारू शकुन्तला ! मिल यूनियन के चुनाव हमूं लड़ीं ?

"एकर जवाब हम का दीं ?"

●●●

कसौटी

(एक)- 'कथा-वृक्ष' : जिनिगी के बिंदास अभिव्यक्ति

'कथा-वृक्ष' : - बरमेश्वर सिंह, पृ० सं० : १२८- मूल्य - १५०/- प्रकाशक - भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना

भोजपुरी साहित्य के मौलिक सर्जकन में बरमेश्वर सिंह के आपन वैशिष्ट्य बा। इनकर कहानीकार ना त कहानी कहला से भागेला, ना आत्म-सृजित कुंठा के सामाजिक त्रास बनावे के कोशिश करेला। एहिजा जवन बा, तवन एक दम झकाझक साफ। कवनो मुलम्मा ना, तबो कहानी कला के सर्वोच्च फफान, जेमे उपदेश झाग अस फेंका जाला। इनकर कहानी कला के अइसन स्वच्छ दरपन हई स, जेमे जिनिगी के भिन्न-भिन्न तस्वीर अपना चटक रंगन के साथ मौजूद होली स, आ पाठक ओमे आपन रंग देख के कबो उदास, कबो खुश आ कबो अवाक होके रहि जाला।

बरमेश्वर सिंह के कहानी स्वानुभूति के सामाजिक प्रेक्षण हई स। इहनी में व्यंग्य मुखर बा आ पीरा अंतर-धार। एहिजा अभिशप्त जीवन के महिमामंडन ना, खंडन लउकी। राजनीति के कुचक्र में सउनात, आम जन के व्यथा के बीच से संकल्प के अलक्षित जीत के कथा कहल कहानीकार के कला के उद्देश्य बा। अइसन लागत बा कि कहानीकार जीवन-माहुर के पी-पचा के, अपना पाठकन के अमरित- रस देबे के लक्ष्य साधत होखे।

'कथा-वृक्ष' के बारह कहानियन के पहिलकी कहानी 'सपना' आ अंतिम कहानी 'कथा-वृक्ष' बा। 'कथा-वृक्ष' के कहानियन के सृजन के नेंव मूलतः आक्रोश बा, आ जहाँ-तहाँ ई आक्रोश अनुशासन में बा, उहाँ-उहाँ एह प खाड़ कहानी गौरीशंकर प आसीन बाड़ी स। कवनो-कवनो कहानी में कहानीकार आक्रोश के सीमा तूरतो लउकत बा त, ऊ प्रगति का पक्ष में, जइसे 'धोखा' कहानी में। बभनटोली के गोरकू आ सँवरकू हर टोला में मिल जइहें। कहानीकार के कहे के मतलब बस अतने बा कि जब समाज में जेठ गिनाए वाला ब्राह्मण लोग के लरिकन के दुष्टई के ई हाल बा, त अउर लोग के संतानन के चरित्र के खुदे अंदाजा लगावल जा सकत बा।

'कथा-वृक्ष' कहानी शिल्प-सजगता आ प्रयोगधर्मिता के परिचय देत बिया। एह कहानी में जादुई शैली से ई बतावे के उत्-जोग कइल गइल बा कि राजनीतिक नेतृत्व के गलत हाथन में परि गइला से के तरी समाज भिन्न-भिन्न वर्ग आ समुदायन में बँट के आपसी प्रेम, सौहार्द्र आ भाईचारा खो देला। 'कथा-वृक्ष' के नैरेटर एगो प्रेत बा। ई समझे के बात बा कि बरमेश्वर सिंह के कुछ कहानियन में भूत-प्रेत आदि सुपरनेचुरल तत्व काहें मुख्य भूमिका निभावेले ! या त आदमी साँचो के प्रेत हो गइल बा भा प्रेत बने के दिशा में डेग बढ़ा चुकल बा। पर्यावरणविद् पर्यावरण-ह्रास के लेके चिंतित बा, समाज सुधारक लोग नैतिक ह्रास के लेके, बाकिर बरमेश्वर सिंह ओह ह्रास के लेके चिंतित जनात बाड़े जे के, उपनिषद 'नेति नेति' आ कबीर 'ढाई आखर' कहि के बचावे के कोशिश कइले रइले। ई औपचारिक नइखे, साँच बा, हृदय से बा, आ एही से कहानीकार 'कथा-वृक्ष' के माई के इयाद में समर्पित कइले बा। बरमेश्वर सिंह के 'कबीरी' कहानियन में 'अंतर हाथ सँवार दे, बाहर मारे चोट !' के क्रियाशील सर्जक बा।

संग्रहीत कहानियन के सत्य, व्यंग्य के लहर पर उतरात चलत बा। कबो ऊ 'खोल', 'सपना', 'दयालु', 'दुःख' आ 'भूत' में गँवे-गँवे रेतत बा, त कबो 'तृष्णा', 'खोपड़ी', 'नाक' भा 'नक्शा' में सनाकू हत देता। 'सपना' के धुँआत व्यंग्य आदमियत के जिजीविषा आ स्वाभिमान के चरम शिखर बा, जेमे गतरे-गतर सुसुकत पीरा गुहाइल बा। एह कहानी में कहानीकार परबतिया के रूप में एगो अइसन पात्र के सृजन कइले बा, जे भूख के तृप्ति आ स्वाभिमान में से, स्वाभिमान के चुनति बा आ शोषक के मलेछियत के परत-दर-परत उघारत अइसन भाव रचि देता जे जिनिगी के साथे-साथ कलो के चरम हो जात बा।

इमरतिया के भाई बिरजू आ गणेसी पस्त हालत, भूखे, ठेकेदार साहेब के बाप के श्राद्ध में, अपना टोला (मुसहर टोला) के सँगे भोज खाए आइल बा लोग। जब सब केहू पूड़ी-जलेबी खा के उठ जाता, तब इहन लोग के बारी आवत बा। बाकिर पत्तल में पूड़ी-जलेबी के जगहा माढ़ा, पानी, दही आ गुड़ के घोल गिरत देख के रमरतिया अड़ जात बिया। ठेकेदार

साहेब आदमियत के ठेकेदार बनत गरज पड़त गरज पड़त बाड़े "काहें गे ? कउना के बेटी बाड़ें ? तोहर बाप कहियो पूछी-जलेबी देखले बा ? खाय के बा त खो, ना त भाग इहँवा से।"

रमरतिया एह डपट के बाद माढ़ा साने शुरू क दे तिया बाकिर ओकरा लागत बा, जइसे सूते के तइयारी में लागल सूरूज ओकरा के मुँह चिढ़ा रहल होखे। फेर त ऊ झटाक् दे उहँवा से उठ जात बिया आ आपन गोड़ झारत दुलुकिए पर मुसहरी का ओर बढ़ जात बिया। एह कहानी में बाल मनोविज्ञान के कुशल अंकन भइल बा। लरिकन में हरमेस बड़ लोगन के बनिस्पत जाग्रत स्वाभिमान उपस्थित रहेला। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा के कहानी 'विष के दाँत' एकर साहित्यिक परतोख बा।

कहानी के आरंभ के आसमान में लउकत बेमार सूरज, अध-दूअर भाई-बहिन के गरीबी आ बेबसी के लाजे इहनी से आँख नइखे मिला पावत, कहानी के अंत में डूबे के तइयारी करत, ऊहे जइसे रमरतिया के मुँह बिरावत लागत बा। ई सांकेतिक अभिव्यंजना या प्रकृति दर्शन कहानी के वातावरण के निर्माण करे के साथे-साथ ओकरा उद्देश्य के स्पष्ट करे में भी सहायक बा। आदमियों के नियति सुरुजे नियर होला। शुरू में ऊ कतनो कमजोर लउकत होखे, संकल्प साधते ऊ सबके सुख-सपना के नींद देबे में सफल हो जाला। स्वयं त चमकबे करेला।

बरमेश्वर सिंह राजनीति के कहानीकार हवन। मुद्राराक्षस के अनुसार, 'कहानी में जब राजनीति आँख का अलोता हो जाले, त हमरा लागेला कि ऊ कवनो गोपनीय राजनीति करे निकलत होई'। 'खोपड़ी', 'नाक', 'नक्शा' आ 'कथा-वृक्ष' जइसन कहानियन में राजनीति के गाढ आ चटकार रंग जीवन में राजनीति के अराजकता के उजागर करत बाटे।

'खोल' आ 'दयालु' जइसन कहानियन में कुपदी शोषकन के ओह कारस्तानियन प टार्च बारल गइल बा, जे चेहरा प चेहरा लगा के अपना वासना के पूर्ति (चाहे नजर से होखे भा नाड़ा से) करत चलत जा रहल बा आ सभ्य समाज का सोझा बेदाग यश आ मान-सम्मान के पात्र बनल पलक झपकते खोल में लुका जात बा। 'नाक' कहानी आज से कुछ पहिले के, बेमार बिहार के कहानी ह, जवना घरी 'माथ' समीकरण बिहारी राजनीति के 'डायलर टोन' रहे। 'खोपड़ी' मूर्खता आ धार्मिक संघर्षण के कहानी ह, जेमे स्वयं लेखके व्यंग्य बन जात बा।

संग्रह के दुसरकी कहानी ह 'तृष्णा' एमे कतहूँ से, कवनो राजनीति नइखे। 'तृष्णा' राजनीति ना, अलक्षित राजनीति (जे पीढ़ियन से सँसरत आज तक आम सोझिया जन के लील रहलि बिया) के शाश्वत परिणाम ह। एही से राम पदारथ अपना मेहरारू के चोली नइखन कीन पावत। एही से ऊ मालिक के बन्हुआ हो जात बाड़े आ एही से ऊ मालकिन के चोली चोरावे जइसन नीच काम करत बाड़े।

कहानी बड़ा साफ बा। राम पदारथ के मेहरारू लजाते-लजात एक दिन उनका से चोली कीने के कह के, हँस के परा जात बाड़ी। राम पदारथ माई के दीहल खइनी कीने के पइसा में से कुछ बचावत आ कुछ अपना भिरी से मिला के, कोइलवर बाजार से चोली किनिहें, बाकिर माई हैजा में मरि जात बिया आ दूनो बेगती के साथ तँवा जात बा। एक दिन गरुआरी से गोबर काढ़त राम पदारथ के नजर आलान पर सूखे खातिर पसारल मलकिनी के चोली पर पड़ जाता आ फेर त उनका भीतर चले वाला द्वंद्व, घबराहट, पाप आ पुण्य के अवधारणा, अपराध बोध, ग्लानि- सब उनके उदबेग के रखि देता। ऊ ना चाहत-चाहत मलकिनी के चोली चोरा लेत बाड़े।

ई कहानी भोजपुरी के श्रेष्ठ कहानियन में शामिल होखे के गुण वाली बा। अपना संस्कार में ई श्रेष्ठ बा.... शब्द-संयोजन, भाव-अभिव्यंजन, चरित्र-उरेहन आ वस्तु चयन..... सब में। जइसे 'मोंपासा' के कहानी 'द नेकलेस' एगो कंठहार के इर्द-गिर्द घुमति बा, ओसहीं बरमेश्वर सिंह के कहानी 'तृष्णा' एगो चोली के इर्द-गिर्द। तारीफ ई कि एह में 'चोली के पीछे क्या है ?' कतहूँ नइखे, खेयाले में नइखे आवत आ कहानी 'पेट के जरला' आ 'हृदय के भरला' के 'रिंग-टोन' बन जात बा। चोरावल चोली एगो कुकुरी लेके भाग जात बिया आ राम पदारथ एगो अधवार उठा के ओकरा पीछे अइसे भागत बा, जइसे मरीचिका के पीछे मिरिगा.....।

पूज्य गुरुदेव (डॉ० गदाधर सिंह) 'कथा-वृक्ष' के भूमिका लिख के एह में संगृहीत कहानियन के अर्थवत्ता भोजपुरी भाषी लोगन के सोझा ठीक से रख ले बाड़े।

❑ विष्णु देव तिवारी

●●●

(दू)- रधिया : एगो जरूरी नाटक

'रधिया' : - सुरेश कांटक, मूल्य- पुस्तकालय संस्करण- २००/- एवं जन संस्करण- १००/-
प्रकाशक - नवशक्ति प्रकाशन कांट, ब्रहमपुर, बक्सर

भोजपुरी भाषा में आजकल निकहा रचना हो रहल बा। खास कर भोजपुरी फिल्म के एगो नया उभार, मारीशस के नाम के चर्चा में आवे, आ बाजारवाद के समूचा विश्व प नया तरीका से छा गइला के बाद ए भाषा में रचना के बाढ़ आ गइल बा। जेमे नीक आ जबून ढ़ेर गीत आ गायक रोज जीअत-मरत बाड़न। मगर एह अंध ाड़ में फूहड़ गीत आ गायके अधिका बाजार में बाड़न। एकरा पीछे कई कारण स्पष्ट रूप में बाड़न सऽ, तऽ कइगो तोपल ढांपल। मगर भोजपुरी नाटक के क्षेत्र में सगरो लोक कला, नाटक भा भाषा के 'शोध' आ प्रेम के नाम पऽ भिखारी ठाकुर के छोड़ के कवनो दोसर-तीसर लेखक के नाम सुने के ना मिले।

एकर मतलबह ई कत्तई नइखे कि एह भाषा में नया नाटक रचाते नइखे। भोजपुरी नाटक लिखात जरूर बा, मगर ओ पर वाजिब चर्चा के अभाव बा। अइसहीं 'हाथी के दांत', 'भाई के धन', 'सरग-नरक', 'बंदे मातरम', 'गुरुदेव' आदि कई गो नाटक भोजपुरी लोकमानस में आपन एगो अलगे जगह बनवले बाड़न सऽ। हम सुरेश कांटक के नया नाटक 'रधिया' के चर्चा करत बानी। एह नाटक पर चर्चा के पीछे कई गो महत्वपूर्ण कारण मौजूद बा। जवना समय में हर चीज बाजार में बिकाए के वस्तु बना दिहल जा रहल बा, आ जेह तरह से लोक भाषा के नाम प लूट जारी बा, ओह समय में 'रधिया' में विषय-वस्तु से लेके, मंचन तक सब मोर्चा प, 'आइटम संस्कृति' के विकल्प बने के ताकत बा। दूसर कारण ई, कि जब लोक भाषा के नाम प बिकाए खातिर औरत के जोबना, ओठलाली, कजरा त कभी घंघरा-चोली उघारे तक रचना सीमित रह गइल बा, ओह समय में महिला सशक्तीकरण के दर्शन पेश कइल एह नाटक आ नाटककार के हौसला बहुत बड़ बात बा। जब लोकभाषा के नाम प, भिखारी ठाकुर जइसन रचनाकार के नाव लेके, लौंडा-नाच के फूहड़पन आ रस परोसे जइसन हथकंडा अपनावल जात होखे, ओह समय में ई नाटक औरत के हक में बात करत बा।

प्रकाशित होखे के पहिलही से 'रधिया' के ढेर जगह मंचन हो चुकल बा। एह नाटक के डा० शशिनारायण सिंह, अपना निर्देशन में, अपना महिला नाट्य टीम के खुशबू, प्रतिभा, प्रियंका, किरण, दुर्गावती आ ज्योति के संगे छः बेर मंचित कर चुकल बाड़े। गाँव-जवार के अलावे, प्रगतिशील लेखक संघ के राज्य सम्मेलन में बक्सर नगर भवन आ जन संस्कृति मंच के राज्य सम्मेलन में आरा शहर में, देश के बड़े-बड़े बुद्धिजीवी आ रचनाकरन के बीच एह नाटक के मंचन हो चुकल बा। खास बात ई कि जहाँ एह नाटक के मंचन भइल, हर जगह से एकरा कइगो नया नेवता मिलल कि किहाँ एकर मंचन होखे के चाहीं।

नाटक में कांटक जी समाज के बीच जारी भेदभाव के रेखांकित कइले बाड़न जवन लइका आ लइकी के बीच होला। उनकर जोर लइकिन के पढ़ा लिख देला के औपचारिकता भर नइखे। बल्कि ऊ एह से ढेर आगे जाके, अपना नायिका से, अपराध, लुच्चन, लफंगन आ कुरीती से सामना भी करावताड़न। रधिया के प्रतिरोध ा अपना घरहीं से शुरू होता। जहाँ ओकर आपन माई 'रधिया' आ ओकरा भाई 'उत्तम' में भेदभाव करत बाड़ी। चाहे पढ़े के मामला होखे, भा काम करेके, चाहे खाये-पिये के मामला होखे आ खेलेकूदे के, हर जगह उनकर माई भेद-भाव करत बाड़ी। ई बात विद्रोही, नायिका 'रधिया' के सहन से बाहर बा। एकर बिरोध ऊ शुरू करत बाड़ी त एकरा के शह उनकर बाबूजी रामशरण देत बाड़न। जइसे-तइसे 'रधिया' माध्यमिक परीक्षा, भाई से भी बढ़िया नम्बर से पास कइके आगे पढ़े के जिद्द धरत बिया। घर में फिर ठकठेन मचत बा। माई के तर्क बा कि लइकी भला कवलेज मे जाई, दुनिया का कही? कुछ ऊँच-नीच हो जाई, तब का होई? समाज के अपराधीकरण, स्त्री पढ़त हिंसा आ पारंपरिकता के लेके, भाई के चिंता अलगे बा। उनका मन में एगो स्वाभाविक असुरक्षा बोध बा। उनकर जिद्द बा कि बढ़िया बर देख के लइकी के वियाह कर दिहल जाव मगर बाप रामशरण के प्रोत्साहन से 'रधिया' के आगे पढ़े-लिखे के मौका मिलिए जाता। 'रधिया' के गुंडन के सामना भी करे के पड़ता। रधिया जूडो-कराटे के प्रशिक्षण लेत बाड़ी। आत्मबल, बाप के प्रोत्साहन आ प्रशासन के सहयोग से अपराधी के

हरा देत बाड़ी। अतने ना बढ़िया नम्बर से सफल होके पुलिस विभाग के नौकरी हासिल करत बाड़ी। एकरा साथे ऊ साहस के एगो आउर काम ई करत बाड़ी कि जिलाधिकारी जवन उनका प रीझ जात बाड़न, उनका से प्रेम विवाह करके प्रचलित कुरीती प एगो आउर धक्का देत बाड़ी। परंम्परा के आगहूँ जारी रखे खातिर सहेली लोग के शामिल करत बाड़ी। माने कि एह लड़ाई के आगे बढ़ावे खातिर, ऊ संगठन बनावत बाड़ी। अपना भाई के बिना दहेज के बियाह करावत बाड़ी। 'रधिया' प्रचलित व्यवस्था के बीच से निकल के एगो नया, मगर लोक-लुभावन दर्शन प्रस्तुत करत बाड़ी।

संवाद योजना में नाटककार प्रचलित मुहाबरा आ कहावतन के प्रयोग कइके ओके खूब रोचक बनावता। सहज शब्द, वाक्य मगर बहुत कसल संवाद एह नाटक के जबरदस्त गति प्रदान करत बाड़न स। एह वजह से लमहर भइला के बावजूद ई नाटक दर्शक के हिले नइखे देत। एह नाटक के संवाद सहजे हमनी के समाज में रोजमर्रा के याद दिला देत बाड़न स। भेदभाव के जबरदस्त प्रतिरोध के कारण ई नाटक लइकिन के उत्प्रेरित करे में कामयाब बा। एकरा साथे ई नाटक हमनी के ई सोचे प मजबूर करे में कामयाब बा कि ई भेद भाव जतना जल्दी होखे खतम होखे के चाहीं। आज जब समाज में कन्या भ्रूण हत्या, स्त्री प अत्याचार, दमन हत्या, बलात्कार, दहेज खातिर जिंदा जला देवे तक के घटना रोज होत बा। प्रेमी-प्रेमिका के हत्या रोज होत बा। ओह समय में, एह तरह के नाटक के बहुत जरूरत बा। आज समाज के सामने ई बड़ प्रश्न खाड़ बा कि काहे स्त्री जाति के जीए के अधिकार तक छीन लिहल जात बा? ई हमनी के, अपना अहं में कइसन क्रूर समाज बना देनी जा कि, आधी आबादी के जीए पर संकट आ गइल?

२१ वीं सदी में पहुँच के हमनी के ई कवन विकास ह? जवन समाज के हतना भयानक बना देहलस। अमेरिका के पोंछ धइके हमनी सब बाजार त बन गइनी जा, मगर ई कवन विकास के आग भड़क गइल कि सृष्टि पर संकट आ गइल। अइसना सवाल के हल करे में, एह तरह के रचना के थोरिके सही मगर योगदान रही आ अइसन नाटक कहानी कविता, शीत संवेदन हीन होत समाज में असर जरूर करी।

❑ राकेश दिवाकर

●●●

(तीन)- 'रंग बदलत गिरगिट' : अन्हार में अंजोर खातिर, मानवीय उदात्तता के उरेहत कहानी

'रंग बदलत गिरगिट' - अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे', मूल्य- ५०/- प्रकाशक - नागरी बाल साहित्य संस्थान, सागरपाली, बलिया

बहुत पहिले, एगो लघुकथा -संकलन 'तिरमिरी'(१९९४) में छपल एगो लघुकथा 'बोदा' पढ़ले रहलीं। ठेठ भोजपुरिया अंदाज में, रचल-बीनल आ ओनचल ओह छोट कहानी के नाटकीय अंत मन मे एगो अजब विशाद भर देले रहे । ओ कहानी का बाद अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' के कुछ अउर लघुकथा 'पाती' में प्रकाशित करे के अवसर मिलल। आज ओही कवि, कथाकार के कहानी संकलन "रंग बदलत गिरगिट" पढ़े के मिलल, त मन हरियरा गइल। संग्रह में छोट-बड़ कूल्हि किसिम के कहानी बाड़ी स, जवन पढ़वइया के समाजिक संगति विसंगति आ नीक जबून जथारथ के चित्र देखावत, गँवई जीवन -जगत के एगो सोगहग रूप खड़ा करत बाड़ी सन।

कहानी त कहानी ह$, ऊ चाहे छोट (लघु) होखो चाहे बड़। कहानी कहे-सुने आ लिखे-पढ़े में जीवन के सचाई आ अनुभवे के अलग-अलग अंदाज बयान करेली सन। बड़ कहानी अगर कवनो बगिया, भा फुलवारी में रोपल पौधा के, गाछ-बिरिछ बनला तक के संवेदना भरल रिपोर्ताज ह, त लघु कथा बाल्टी भा गमला में लगावल पौधा के खासियत वाली, गहिर संवेदना जगावे आ चमत्कारी प्रभाव छोड़े वाली रचना ह$, जवन बहुत कम समय में, कवनो प्रभावशाली कथ्य के उद्घाटन करे। कवनो साधारण संवेद्य घटना,

विसंगति-पूर्ण व्यवहार भा विडम्बना एगो लघुकथा में तेजी , संक्षिप्तता आ सांकेतिकता का साथे परोसल जा सकेले आ कवनो सामाजिक विशय, भा असामान्य मानवीय क्रिया-व्यवहार एगो कथावस्तु के रूप में कहानी में आ सकेले आ कथाकार कवनो पात्र-पात्रन के लेके, अरथपूर्ण संवाद योजना आ समय-संदर्भ सिरजन का जरिये, बहुत नाटकीय ढंग से अभिव्यक्त क सकेला। कथाकार के रचना-कौशल भाषिक रचाव आ कथा शुरू आ अंत करे के अन्दाज, पाठक भा श्रोता पर प्रभाव छोड़ सकेला, भा ओकरा षांत मन मे हलचल मचा सकेला, ओके प्रेरित क सकेला। साँच कहीं त कवनो बढ़िया कहानी भा लघुकथा में दिशा आ बोध का साथ, प्रेरित करे के अद्‌भुत सामरथ आ शक्ति होले।

भोजपुरी-कहानी के षुरूआते, ओह समय भइल जब हिन्दी कहानी के रचना-विधान के खाँचा-ढाँचा बहुत कुछ बदलत रहे। पच्छिमी कथा समीक्षकन के संरचना वाला ढाँचा (जवना में आरंभ, विकास (द्वन्द्व) ,चरम बिन्दु, उतार आ अंत जइसन पाँच गो तत्त्व रहलन स), भोजपुरी में ओतना ना चलल। भोजपुरी में एगो सहज स्वच्छंद रंग रूप वाली कथा-शिल्प विकसित भइल, जवना में ई कूल्हि तत्त्वन आ खासियत के काम भर लिहल -अजमावल गइल। भोजपुरी कहानी बदलत समय-संदर्भ का साथ, बदलत परिवेष, व्यवस्था आ बदलत सोच-सरोकार आ व्यवहार के कहानी बनल। एम्मे आजादी के बाद के मोहभंग, खोंखर व्यवस्था, समाजिक विसंगति आ साधारन आदमी के दुःख, परेषानी, असहाय स्थिति, संघर्ष, शोषण, क्षोभ-खीसि, खण्डित आस्था, टूटत विश्वास, विद्रोह , दमन, पीरा, उदासी आशा -निराषा का अलावे बदलत आदमी के अंदरूनी आ बाहरी लड़ाई के जबर्दस्त अंकन आ उरेह भइल।

अनन्त प्रसाद जी भोजपुरी कहानी के एह पोढ़ परंपरा में, अपना एह कथा संग्रह का जरिये , षामिल हो गइल बाड़न।

कथा षिल्प, निबाह आ 'ट्रीटमेंट', का लिहाज से, कहानियन का बनिस्बत,लघुकथा ज्यादा खरा उतरल बाड़ी सन। कथाकार एम्मे आदमी, ओकरा समाज आ ओकरा आसपास के विसंगति, विरोधाभास आ विद्रूप पर त चोट करते बा, अपना खास निजी तेवर में, आदमी के सोच, व्यवहार आ चरित्रो के पोस्टमार्टम करत, लउकत बा। 'बोदा' धर्म के अर्थ', मुवल आदमी, बदलाव, औरत के खुनुस, हमहूँ भिखारिये हईं, दूर दृष्टि, धरम के काम, फेर ऊहे जीति गइल, बाल दिवस, खाए पिए क दिन, जान के कीमत, मर्द आदमी, रमरतिया आदि.... लघु कथा एकर साखी बाड़ी स। 'मजबूरी', औलाद के मोह, मास्टर साहब के चिन्ता, हम त लजा गइनी, दूरदृश्टि 'एगो अउर ईष्वरचन्द्र विद्यासागर' अलगा विशय वस्तु के लघुकथा बाड़ी स। 'रउताइन आजी' 'खाये पिये क दिन' आ 'दुष्मनी' अपना संक्षिप्त संकेत भरल कथा प्रवाह आ अपना चमत्कारिक नाटकीय अंत से, आदमी के भीतर छिपल इन्सानियत के लौ के अउर दीप्त करे वाली लघुकथा बाड़ी सन।

'बोदा' आ 'खेलुआ' सहज आ मरम छूवे वाली, असरदार लघु कथा बाड़ी स। इन्हनी में भाषिक रचाव के बढ़िया निबाह भइल बा। सिधवा, ईमानदार 'बोदा' आ 'खेलुआ'का जरिये, कथाकार एक ओर बड़कवा कहाएवाला लोगन क संवेदन शून्यता आ खोंखरपन के उजागर करत बा, त दुसरा ओर ओह लोगन का 'सोच' में समाइल संकीर्णता, भेद भाव आ अमानवीयता पर सवालो खड़ा करत बा। 'रमरतिया' में बड़कन क मानवी आदर्श तब चकनाचूर होत लउकत बा, जब मँगरुआ के अनचहले, बबुवान क भारी बोझा जबर्दस्ती ढोवे के परत बा । अनन्त प्रसाद जी का लघुकथा में सामाजिक विद्रूप के संदर्भ, कहीं कहीं सहज त कहीं नाटकीय -कला का साथे सोझा आवत बा। कहीं जथारथ का दबाव में पिसाइल मानवीय सरलता आ सोझबकई लउकत बा, त कहीं संवेदनहीन, मतलबपरस्त सामाजिक तंत्र से त्रस्त सचाई के कई गो

अनछुवल पहलू, पढ़वइया का सोझा उभरि आवत बाड़न स। एक तरह से संकलन के कहानियन के ई सबसे खास उपलब्धि बा। तमाम कुरूप जथारथ, कडुवा सचाईयन आ अमानवीय व्यवहार वाला पहलू का बावजूद, गाँव जवार में आजो संवेदना भरल मानवीय उदात्तता के आदर्ष आ ब्यवहारो देखे के मिलिये जाला। अन्हारा में,अजोर के कवनो न कवनो किरिन फुटिये जाले। अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' के दीठि ओइजा बाटे आ ऊ एही खासियत के अपना कहानियन में उभारि के बचल-खुचल इन्सानियत, प्रेम, भाईचारा आ परमारथ के भाव के अपना कुछ लघुकथा आ कहानियन में अभिव्यक्त करे के अर्थवान कोशिश कइले बाड़न। एह खराब जमाना में, अइसना चमत्कृत करे वाला इन्सानी -व्यवहार आ काम के सराहे आ उरेहे वाला काम सबसे ना सँपरे। अनन्त प्रसाद जी के लघुकथा 'माड़ो खोलाई' आ 'दुश्मनी' मानवीय उदात्तता आ आदर्श के अइसने चमत्कृत करे वाला व्यवहार के उरेह बाड़ी सन। दुश्मनी त रामलखन आ मोती के बा, बाकिर बढ़ियाइल धार में डूबत रामलखन का लड़िका के बचा के, मोती जवन अचरज वाला मानवीय व्यवहार कइलन ऊ आज का समाज के बचल -खुचल इन्सानियत के नमूना बा।

''लपटन चाचा'' स्व० रामेश्वर सिंह काश्यप के 'लोहासिंह' वाली स्टाइल में लिखाइल मनोंरजक कहानी बिया, जवना में मनोरंजन का साथ लपटन चाचा का मार्फत, गँवई समाज के ऊहे जियतार मोह-ममता आ सद्भाव भरल मानवता उजागर भइल बा, जवना के आज सबसे ज्यादा जरूरत बा । एही तरे 'रंग बदलत गिरगिट' विधवा बियाह का समस्या पर रचल, मानवीय दृढ संकल्प के आदर्शवादी आ अरथवान कहानी बिया, जवना में जात विरादर का बहाने, सामाजिक स्वीकृति-अस्वीकृति के पड़ताल करत कथाकार ई निष्कर्ष निकलले बा कि समरथ वाला दृढ़ संकल्पी यदि समाज आ परंम्परा से विरोध क के कवनो काम करी त विरोधो करे वाला आज के रंग बदलत गिरगिट लोग ओकर सराहना करे लागी। 'सूझबूझ' कहानी में कथाकार कहानी त बड़ा हलुकाहे ढंग से शुरू करत बा, बाकिर भोजपुरी मुहावरा आ लोकोक्तियन के सार्थक इस्तेमाल करत मानवीय प्रेम-सद्भाव आ त्याग के मिसाल देबे वाली कथा-संरचना बीनत लउकत बा।

हमके अनन्त प्रसाद जी का कहानियन का एह पहिले संकलन में सबसे खास बात इहे लउकत बा कि कथाकार मौजूदा अन्हारा माहौल में, अँजोर के सूत तलाशत, मानवीय उदात्तता के प्रतिष्ठा का जरिये अपना लेखन के सार्थकता देबे में सफल भइल बा। आज अइसने रचनात्मक आ 'पाजिटिव अप्रोच', वाला लेखन के जरूरत बा। जरूरत ईहो बा कि भोजपुरी-समाज आ परिवेश के बहुत कुछ अबहीं उद्घाटित नइखे होत। बहुत विसंगति अइसन बाड़ी स, जवना पर मौलिक ढंग से सोचला आ लिखला के जरूरत बा। अनन्त प्रसाद जी भोजपुरी क्षेत्र में रहि के गाँव-घर से शहर तक ले, अइसन बहुत कुछ देखत-सुनत, समझत-बिचारत बाड़न, सुख-दुख आ हर्ष-विषाद का साथ-साथ आक्रोश के अनुभव करत बाड़न। लेखन के धार देबे आ ओके अउर प्रासंगिक बनावे खातिर, उनके अइसनका विषयन पर अउर निर्मम होके लिखे के जरूरत बा।

●●●

❑ अशोक द्विवेदी

राउर पन्ना

'पाती' के नवका अंक ५५/५६ खूब पढ़े-गुने लायक बा। संपाद की त बेजोड़े बा। सच्चाई के खुलासा में, ऊ तेवर लपलपात बा, जवने क जरूरत बा। कबीर पर भगवती प्रसाद द्विवेदी के विचार बहुत जानदार बा। आकांक्षा त अपनी पीढ़ी के ताकत के एहसास करा दिहले बाड़ी। भखड़ल, नोनियाइल मकान इहे लोग ढाही, तब्बे नया बात बनि पाई। हीरा लाल जी के रचना रम्य त बटले बा, आँखी में अँगुरी डारि के लउकावे वाली भी बा। प्रमोद कुमार तिवारी के जमीनी सचाई के परखले क तरीका बहुत कारगार बा। भोजपुरी समाज के संस्कृति आ राजनीति पर सुशील कुमार आ सान्त्वना के लेख बहुत यर्थाथपरक आ उकसावे वाला बाड़न स। राजगुप्त के कहानी नगीने बा। भोजपुरी कहानी के बहुत बात आ गुन सामने ले आवे वाली कहानी बा। आशारानी लाल त लिखवइया हइये हईं। इनिका कहानी के फूआ के केहू न बिसारि पाई। रमाशंकर जी के 'दालभात तरकारी' के सवाद हर बेर बढ़ते जात बा, अइसन 'विजन' परोसल रहे, त पेट भरलहूं पर मन नाही भरेला। हरिश्चन्द्र जी के जबाब एकदम अइसने चाहत रहल, जइसन विष्णुदेव तिवारी दिहले बानी। कविताई आ आलोचना वाला पक्ष पढ़े लायक बा। एक बाति के धेयान संपादक के देबे के चाहीं - लघुकथा आ चुटकुला में, कई बेर हिन्दी के छपल चीज के भोजपुरी में उतारि दिहल जाला। एहू बेर भइल बा। नाँव का धरीं ?

❑ डॉ० रामदेव शुक्ल, राप्ती चौक, आरोग्यमंदिर, गोरखपुर

'पाती' के अंक ५३-५४ के बाद त रंगे रूप बदल गइल बा। भीतर सामग्री दमदार बा। एक लेखा समय का मोताबिक आ मजेदार। भोजपुरी क्षेत्र के बेमारी आ जरत सवालन के छेड़त-उठावत लेखन का साथे अउर कुल्हि जानकारी बढ़ावे वाला रिपोट का साथ, कहानी, उपन्यास, कविता, कूल्हि पढ़े के मिलत बा। अंक ५५-५६ त अउर दमदार बा। रमाशंकर श्रीवास्तव के 'दाल भात तरकारी' बढ़िया चल रहल बा। राजगुप्त, आशा रानी जी के कहानी कम मजेदार आ प्रभाव छोड़े वाला नइखे। आकांक्षा त युवा-भविष्य खातिर बहुत प्रासंगिक जानकारी दे रहल बाड़ी। हीरा लाल आ सान्त्वना के लेख अपना अपना जगह पर बहुत सार्थक आ सोच-विचार से भरल बा। कवर पेज त भाई वाह वाह !

❑ ऋचा, C/o- विजय दुबे, रतनगंज, मिर्जापुर

ओइसे त 'पाती' क जौन अंक हमके देखे पढ़े के मिलल, ऊ सचहूँ जोगावे जोग आ देखावे-पढ़वे जोग रहल, बाकि एने कुछ अंक त वाकई सराहे जोग निकललनस। भोजपुरी समाज आ ओकरा स्तरीय साहित्य के विविधता आ गहिराई के उजागर करे वाला पत्रिकन में ई श्रेष्ठ पत्रिका मालन जाता, एके सिद्ध करे खातिर काफी बा। पाती के सितम्बर ०६ वाला अंक, भोजपुरिया क्षेत्र आ ओकरा समाज के असलियत के देखवला के साथ-साथ, देश-दुनिया का बीच ओकरा मौजूरा हालत, बेचैनी आ संघर्ष के भी रेखांकित करत बा। संपादकी त झिझोड़े वाला बा। सान्त्वना, प्रमोद तिवारी, सुशील तिवारी जी के आलेख सामयिक आ बहुत महत्व वाला बाड़न स। रमाशंकर श्रीवास्तव के उपन्यास दाल-भात तरकारी के रोचकता टिकाऊ बा। हीरा जी के लेख मजेदार समसामयिक, आ ललित बा। कविता कुल्हि स्तरीय लगली स, पढ़े गुने, सराहे, गुनगुनाये लायक। राजगुप्त जी के कहानी पढ़ के पुरनका कथा कहनीं के इयाद ताजा हो गइल। अउर कुल्हि स्तम्भ बढ़िया बाड़न स। आलोचना समीक्षा खातिर त पाती के कहही के नइखे। जइसन सुन्दर पोथी, ओइसने बखान। विष्णुदेव जी के लिखे क स्टाइल बहुत जोरदार बा। पाती अइसही बढ़त रहो त भोजपुरी खातिर शुभ रही आ भोजपुरिया समाजो खातिर दिशाबोधक रही। अइसन सुघर अंक खातिर रउवा आ रउरा पूरा टीम के बधाई...।

❑ कुबेर नाथ पाण्डेय, गाजीपुर

इसकी सतत् रक्षा, निर्माण और रख–रखाव का दायित्व हम सभी का है...

ध्यान रखें...

- ❑ अतिक्रमण न करें और न होने दें।
- ❑ गृहकर और जलकर का समय से भुगतान करें ताकि आपकी पालिका साधन–सम्पन्न बनी रहे।
- ❑ जल–वितरण प्रणाली ठीक रखने हेतु व्यर्थ पानी न बहायें।
- ❑ जल का आवष्यकतानुसार उपयोग करें।
- ❑ अपने नगर को साफ–सुथरा और प्रदूशण–मुक्त बनाने का सार्थक प्रयत्न करें।

यह बलिया नगर आपक

vki bl uxj dh xfjek] HkkbZpkjk ,oa laLd`fr
ds iks'kd gSA bls lnSo dk;e j[ksaA

jes'kpUnz flag
(अधिषासी अधिकारी)

lat; mik/;k;
(अध्यक्ष)

नगरपालिका परिशद्, बलिया

रजि0 नं0– आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979)

'पाती–57'/दिस0, 2009

Anjoria.com

पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

स्वामित्व, प्रकाशक– सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी, 47– टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ0प्र0)
खातिर रवि आफसेट, बलिया से मुदित।